इकाई 1- पाठ्यचर्या की संकल्पना,अर्थ एवं आवश्यकता (Concept, Meanlng and need of Curriculum)

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 पाठ्यचर्या व्याख्या
1.3.1 पाठ्यचर्या अर्थ और अवधारणा
1.3.2 पाठ्यचर्या की आवश्यकता
1.3.3 पाठ्यचर्या के क्षेत्र
1.4 विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या
1.4.1 विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या विकास के उपागम
1.4.2 विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया
1.5 पाठ्यचर्या के प्रकार
1.6 मूल पाठ्यचर्या व जमा पाठ्यचर्या
1.6.1 मूल पाठ्यक्र
1.6.2 जमा पाठ्यचर्या:-
1.7 सारांश
1.8 अभ्यास प्रश्न
1.9 संदर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तकें
1.10 निबंधात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा एक विकास की प्रक्रिया मानी जाती है। जिसमें बालक के बहुमुखी तथा सर्वांगी विकास का प्रयास किया जाता है। शिक्षा के अन्तर्गत शिक्षण अनुदेशन तथा प्रशिक्षण की क्रियाओं

को प्रयुक्त करते हैं। जिनसे छात्रों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन किया जाता है। शिक्षण की क्रियाओं का सम्पादन का आधार पाठ्यवस्तु शिक्षण अथवा विषय वस्तु होती है। पाठ्यवस्तु शैक्षणिक विकास के लिए एक प्रमुख साधन है। परन्तु अतीत में इसे साध्य भी माना जाता रहा है। शिक्षक अपनी शिक्षण क्रियाओं द्वारा ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करता है। जिसमें छात्रों को नये अनुभव होते है तथा उन्हें कुछ करना भी पड़ता है। परिणाम यह होता है। उनमें अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन होता है अथवा वे सीखते हैं। सीखने में व्यवहार परिवर्तन आवश्यक होता है। इस प्रकार शिक्षण क्रियाओं का आधार पाठ्यवस्तु या विषय वस्तु होती है। विषय वस्तु के प्रारूप को साधारणतः पाठ्यचर्या ;ब्नततपबनसनउद्ध कहते है। शिक्षा तथा शिक्षण का स्वरूप पाठ्यचर्या के प्रारूप द्वारा निर्धारित होता है। शिक्षा की प्रक्रिया की धुरी पाठ्यचर्या का अर्थ एवं इसका प्रारूप बदलता रहा है। इस पुस्तक में पाठ्यचर्या सम्बन्धी तीन मौलिक प्रश्नों क्या? क्यों? तथा कैसे? का उत्तर देने का प्रयास किया गया है। जिससे पाठ्यचर्या प्रतयय के अर्थ प्रारूप एवं उसकी उपादेयता को बोधगम्य किया जा सके।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप:

1. पाठ्यचर्या अर्थ और अवधारणा को समझ सकेंगे ।
2. पाठ्यचर्या की आवश्यकता को समझ सकेंगे ।
3. विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या को समझ सकेंगे ।
4. पाठ्यचर्या के प्रकार को समझ सकेंगे ।
5. मूल पाठ्यचर्या व जमा पाठ्यचर्या को समझ सकेंगे ।

1.3 पाठ्यचर्या व्याख्या

पाठ्यचर्या के निम्न उद्देश्य हैं :

1. शिक्षण में शिक्षक तथा छात्र के बीच अन्तःक्रिया करने में।
2. पाठ्यचर्या बालक के सम्पूर्ण विकास हेतु साधन प्रदान करता है।
3. पाठ्यचर्या द्वारा मानव जाति के अनुभवों को सम्मिलित रूप से स्पष्ट करके संस्कृति तथा सभ्यता का हस्तांतरण एवं विकास करना।
4. पाठ्यचर्या द्वारा बालक में भिन्नता ईमानदारी, निष्कपटता सहयोग सहनशीलता सहानुभूति एवं अनुशासन आदि गुणों को विकसित करके नैतिक चरित्र का निर्माण करना।
5. पाठ्यचर्या द्वारा बालक की चिन्तन, मनन तर्क तथा विवेक एवं निर्णय आदि सभी मानसिक शक्तियों का विकास करना।

6. पाठ्यचर्या द्वारा सामाजिक तथा प्राकृतिक विज्ञानों एवं कलाओं तथा धर्मों के आवश्यक ज्ञान द्वारा ऐसे गतिशील तथा लचीले मस्तिष्क का निर्माण करना चाहिए जो प्रत्येक परिस्थिति में साधनपूर्ण तथा साहसपूर्ण बनकर नवीन मूल्यों का निर्माण करना।
7. पाठ्यचर्या द्वारा ज्ञान तथा खोज की सीमाओं को बढ़ाने के लिए अन्वेषकों का सृजन करना।
8. पाठ्यचर्या द्वारा विषयों तथा क्रियाओं के बीच की खाई को पारकर बालक के सामने ऐसी क्रियाओं को प्रस्तुत करना जो उसके वर्तमान तथा भावी जीव के लिए उपयोगी बनाना।
9. पाठ्यचर्या द्वारा बालक में जनतंत्रीय भावना का विकास करना।
10. पाठ्यचर्या शिक्षण क्रियाओं तथा शिक्षक तथा छात्र के मध्य अन्तःप्रक्रिया के स्वरूप निर्धारित करना।

1.3.1 पाठ्यचर्या का अर्थ और अवधारणा:-

अंग्रेजी भाषा में पाठ्यचर्या के लिए करीक्यूलम ;ब्नततपबनसमउद्ध शब्द का प्रयोग किया जाता है। परन्तु करीक्यूलम लैटिन भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ होता है। दौड़ का मैदान शिक्षा के अन्तर्गत इसका अर्थ है। छात्रों का कार्य क्षेत्र अथवा छात्रों का दौड़ का मैदान यहाँ पर दो शब्द दौड़ तथा मैदान प्रयुक्त किये गये है। मैदान का अर्थ पाठ्यचर्या से है और दौड़ का अर्थ छात्रों द्वारा अनुभव एवं उनकी क्रियाओं से है। शिक्षक पाठ्यचर्या की सहायता से अपनी शिक्षण क्रियाओं का सम्पादन करता है। जिसमें छात्र अनुभव तथा क्रियाऐं करके अपना विकास करता है और अपने गंतव्य स्थान तक पहुँच जाता है। इस प्रकार छात्र मैदान में दौड़ करके अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफलता प्राप्त करता है। शिक्षक की दृष्टि से पाठ्यचर्या एक दिशा एवं साधन है। जिसका अनुसरण करके शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है।

पाठ्यचर्या की परिभाषा:-

शिक्षाशास्त्रियों ने पाठ्यचर्या की अनेक प्रकार से परिभाषा की है। कुछ प्रमुख परिभाषाऐं इस प्रकार है -

कर्निघम:- ''कलाकर (शिक्षक) के हाथ में यह (पाठ्यचर्या) एक साधन है। जिससे वह पदार्थ (शिक्षार्थी) को अपने उद्देश्य के अनुसार अपने स्टुडियो (स्कूल) में ढाल सके।''

फोवेल:- ''पाठ्यचर्या को मानव जाति के सम्पूर्ण ज्ञान तथा अनुभवों का सार समझना चाहिए।''

मुनरो:- ''पाठ्यचर्या में वे सब क्रियाएँ सम्मिलित है। जिनका हम शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के हेतु विद्यालय में उपयोग करते है।''

हार्न:- ''पाठ्यचर्या वह है जो बालकों को पढ़ाया जाता है। यह शान्तिपूर्ण पढ़ाने या सीखने से अधिक है। इससे उद्योग व्यवसाय, ज्ञानोपार्जन, अभ्यास एवं क्रियाएँ सम्मिलित है।''

कैसवैल:- ''पाठ्यचर्या में वे सभी वस्तुऐं आती है जो बालकों के उनके माता एवं शिक्षकों के जीवन से होकर गुजरती है। पाठ्यचर्या उन सभी चीजों से बनता है जो सीखने वालों को काम करने के घण्टों में घेरे रहती है। वास्तव में पाठ्यचर्या को गतिमान वातावरण कहा जाता है।''

1.3.2 एक अच्छे पाठ्यचर्या के पहलू क्या है?

एक अच्छे पाठ्यचर्या में निम्नलिखित पहलू होने चाहिए।

1. पाठ्यचर्या बच्चों के अनुभवों में विद्यमान रहता है।
2. पाठ्यचर्या में केवल सीखे जाने वाली विषयवस्तु को ही शामिल नहीं करता बल्कि बच्चों के द्वारा सीखे जाने वाले कुछ अनुभवों का भाव होता है।
3. पाठ्यचर्या विद्यालय जीवन को दिशा प्रदान करने के लिए तत्पर होता है।
4. पाठ्यचर्या विशेष रूप से सीखने का वातावरण है जो कि विचारपूर्वक ढंग से बच्चों का राष्ट्र व सामुदायिक जीवन में प्रभावपूर्वक ढंग से भागीदारी संबंधी करने की रूचियों व योग्यताओं को दिशा प्रदान करता है।

1.3.3 पाठ्यचर्या की आवश्यकता क्यों पड़ती हैं?:-

शिक्षा की आवश्यकता और पाठ्यचर्या की आवश्यकता समान है परन्तु ऐतिहासिक समीक्षा से विदित होता है कि ये आवश्यकताएँ बदलती रही है। इसलिए इन सभी आवश्यकताओं का उल्लेख यहाँ पर किया गया है।

1. ज्ञान प्राप्त करने के लिए अन्य जीवों से प्रमुख भिन्नता मानव की ज्ञान की दृष्टि मानी जाती है।
2. मानसिक पक्षों का प्रशिक्षण तथा विकास करने के लिए विभिन्न विषयों के शिक्षण से मानसिक पक्षों का प्रशिक्षण किया जाता है।
3. व्यवसाय तथा नौकरियों के लिए तैयार करना शिक्षा से नौकरियों के लिए तैयारी होती है। ब्रिटिश काल में बाबू तैयार किये जाते थे।
4. छात्रों में अभिरूचियों का विकास करने के लिए छात्रों की क्षमताओं के अनुरूप उनका विकास करना।
5. प्रजातंत्र में सामाजिक क्षमताओं का विकास करना ऐसे नागरिकों को तैयार करना जो प्रजातंत्र को नेतृत्व प्रदान कर सके।
6. छात्रो को व्यवसायों के लिए प्रशिक्षण देकर तैयार करना नई शिक्षा नीति की प्राथमिकता है।
7. आम मानवी गुणों के विकास के लिए शिक्षा में महत्व दिया जाता है। आत्मानुभूति का विकास किया जाये।
8. सामाजिक आवश्यकताओं के लिए नागरिकों को तैयार करना तथा सौन्दर्यनुभूति गुणों का विकास करना।

9. प्रमुख आवश्यकता आज जीने की है। आज परिस्थितियों में जीवित रह सके। इसके लिए प्रशिक्षण दिया जाये।
10. छात्रों को भावी जीवन के लिए तैयार कर सके। शिक्षा भावी जीवन यापन के लिए दी जाती है।
11. तकनीकी विकास तथा वैज्ञानिक अविष्कारों के लिए भी तैयार करना।
12. शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है जो सामाजिक परितर्वन एवं सामाजिक नियंत्रण के लिए प्रभावी यन्त्र है। इसीलिए समाज की राष्ट्र की भावी आवश्यकताओं एवं परिवर्तनों के लिए पाठ्यचर्या का विकास करना प्रमुख आवश्यकता है।

1.4 विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या:-

1.4.1 विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या विकास के विभिन्न उपागम:-

1. विषय केन्द्रित उपागम
2. विस्तृत क्षेत्र उपागम
3. सामाजिक समस्या उपागम
4. शिक्षार्थी केन्द्रित उपागम

1. **विषय केन्द्रित उपागम**:- इस उपागम के अनुसार विभिन्न अलग-अलग विषयों से संगठित होती है। पाठ्यचर्या विकास के क्षेत्र में इस उपागम का सबसे अधिक उपयोग होता है। पाठ्यचर्या नियोजन की प्रमुख जिम्मेदारी विभिन्न विषय क्षेत्र तथा उस विषय के अधिगम अनुभवों को निर्धारित करनी होती है। अध्ययन के कार्यक्रमों को विभिन्न विषयों जैसे भाषा शास्त्र, गणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन आदि में विभक्त किया जा सकता है।
2. **विस्तृत क्षेत्र उपागम**:- इस पाठ्यचर्या में दे या दो से अधिक विषयों को जोड़कर एक व्यापक क्षेत्र बनाया जाता है। उदाहरण - एक व्यापक विषय सामाजिक अध्ययन की विभिन्न विषय जैसे - इतिहास, राजनैतिक विज्ञान, भूगोल आदि को जोड़कर बनता है।
3. **सामाजिक समस्या उपागम**:- इस पाठ्यचर्या में सामाजिक समस्याओं पर ध्यान दिया जाता है। इस उपागम में विकसित पाठ्यचर्या विद्यार्थियों में सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न करती है तथा उन्हें सुलझाने के योग्य बनाता है। इसके तहत पर्यावरणीय समस्याओं, धर्म, जनसंख्या, संचार तकनीकी आदि विषयो पर पाठ्यचर्या का विकास किया जाता है।
4. **शिक्षार्थी केन्द्रीय उपागम:-** विद्यार्थी केन्द्रित उपागम विषयों के निर्धारण करते समय छात्र व्यक्तिगत एवं सामाजिक आवश्यकताओं पर प्रभाव (प्रकाश) डालता है। यह व्यापक छात्रों की भविष्य की उपेक्षा वर्तमान के लिए तैयार करतरा है। मनोवैज्ञानिक तौर से ठोस एवं उद्देश्य पूर्ण अधिगम अनुभवों को छात्र की आवश्यकता के अनुसार ही नियोजित होना चाहिए।

1.4. 2 विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया:-

विद्यालय स्तर पर शुरू से ही सरकार द्वारा स्वीकृत पाठ्यचर्या का ही प्रयोग किया जाता है। एकीकृत शिक्षा कार्यक्रमों में ऐसा करना सामान्य और अनिवार्य हतै। पाठ्यचर्या विकास के निम्न स्तर है

1. उद्देश्यों का निरूपण।
2. अधिगम अनुभवों का चयन।
3. विषय-वस्तु का निर्धारण।
4. अधिगम सामग्री।
5. क्रियान्वयन ।
6. मूल्यांकन ।

उद्देश्यों का निरूपण:- पाठ्यचर्या एक नियोजित शैक्षिक कार्यक्रम है। इसके कुछ निश्चित उद्देश्य एवं प्रक्रियाएँ होती है। जैसे - दीर्घकालीक उद्देश्य इसमें एक वर्षीय परीक्षा समाप्ति पर पूरित नहीं किया जाता है। ये पाठ्यचर्या निर्माण के पूर्व ही निर्धारित कर लिए जाते है और सम्पूर्ण विद्यालय जीवन के अनुभवों से होकर गुजरते है। कुछ उद्देश्य किसी विशेष विषय से सम्बंधित होते है। इन्हें हम मध्यस्त कहते है।

अधिगम अनुभवों का चयन:- पाठ्यचर्या का निर्माण इस ढंग से होना चाहिए कि इसके द्वारा छात्र को शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक अनुभवों अथवा इनके एकीकरण का अवसर मिले। इसमें विशेष शिक्षा वाले बच्चों की आवश्यकता का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। जैसे- खेल, सेमिनार, वाद-विवाद, सामाजिक क्रियाएँ इत्यादि इन अधिगम अनुभवों के माध्यम से व्यवहार में परिवर्तन परिलक्षित होते है तथा यही परिवर्तन पाठ्यचर्या के पूर्व नियोजित उद्देश्यों की पूर्ति करते है। अधिगम अनुभवों के चयन के समय छात्रों की आयु परिपक्वता संज्ञानात्मक विकास, शारीरिक विकास, सामाजिक व आर्थिक स्थिति तथा उनकी विकलांगता आर्थिक स्थिति तथा उनकी विकलांगता को ध्यान में रखा जाता है।

विषय वस्तु का निर्धारण करना:- पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की प्राप्ति में विषय वस्तु एक साधन के रूप में कार्य करता है अतः विषय वस्तु पाठ्यचर्या विकास का एक महत्वपूर्ण अंग है। विषय वस्तु का चयन करते समय हमें बच्चों के विकलांगता का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

अधिगम सामग्री:- पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अधिगम सामग्री को तैयार किया जाता है। यह अधिगम सामग्री श्रव्य, दृश्य तथा श्रव्य में होनी चाहिए। जैसे रिकोर्डिंग पाठ्य पुस्तकें सहायक पुस्तकें शिक्षक निर्देशिका इत्यादि सहायक सामग्री तैयार करते समय बच्चों की आयु विकलांगता व आवश्यकता को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

क्रियान्वयन:- पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्यचर्या को लागू किया जाता है। इसके बाद पाठ्यचर्या मूल्यांकन किया जाता है। पाठ्यचर्या के मूल्यांकन में पाठ्यचर्या को बनाने से लेकर अन्तिम चरण क्रियान्वयन तक के लाभ और हानि को सफलता व असफलता की गणना की जाती है।

1.5 पाठ्यचर्या के प्रकार:-

a. आवश्यकता आधारित पाठ्यचर्या
b. ज्ञान आधारित पाठ्यचर्या
c. क्रिया आधारित/क्रियात्मक पाठ्यचर्या
d. कौशल आधारित पाठ्यचर्या
e. छुपा हुआ पाठ्यचर्या

a. **आवश्यकता आधारित पाठ्यचर्या:-** वर्तमान परिस्थिति में जिन समस्याओं पर सरकार को समस्या होती है। उन्हीं विषयो पर पाठ्यचर्या का निर्माण होता है। अतः पाठ्यचर्या सरकार द्वारा, निजी, स्वयं सेवी संस्थाओं व अन्य शिक्षण संगठनों द्वारा तैयार किया जाता है। आवश्यकता आधारित पाठ्यचर्या में उन विषयों को सम्मिलित करते हैं। जिन पर पहले विचार नहीं किया गया हो वर्तमान में ऐसा पाठ्यचर्या तैयार करना चाहिए। आपदा, भूकम्प, जल बचाव इत्यादि समस्याओं से कैसे बचा जा सकता है। इसके लिए पाठ्यचर्या तैयार किया जाता है। उदाहरण:- 2004 में सुनामी के बाद छब्म्त्ज् आपदा प्रबन्धन पुस्तक का प्रचलन।

b. ज्ञान आधारित पाठ्यचर्या:-

   a. ज्ञान आधारित पाठ्यचर्या में विषयों की अपेक्षा ज्ञान को ज्यादा प्राथमिकता दी जाती है।
   b. इस पाठ्यचर्या में व्यक्तियों के दिमाग का ज्यादा उपयोग किया जाता है।
   c. समाज के हर व्यक्ति के पास कुछ ना कुछ ऐसा ज्ञान होता है जो उसे पारिवारिक सामाजिक एवं विद्यालयी परिवेश में सहायता करता है।
   d. इस तरह के पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन करने के लिए अच्छे कुशल अध्यापकों की आवश्यकता होती है।

c. **क्रियात्मक पाठ्यचर्या/कार्य केन्द्रित पाठ्यचर्या:-** कार्य केन्द्रित पाठ्यचर्या उस पाठ्यचर्या को कहते हैं जिसमें विभिन्न कार्यों को विशेष स्थान दिया जाता है। क्रियात्मक पाठ्यचर्या में विषयों की अपेक्षा कार्यों पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है।

   जॉन ड्यूबी के मत के अनुसार - ''कार्य केन्द्रित पाठ्यचर्या द्वारा बालक समाज उपयोगी कार्यों को करने में रूचि लेंगे जिससे व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होना निश्चित है।''

d. **कौशल आधारित पाठ्यचर्या:-** कौशल आधारित पाठ्यचर्या इस पाठ्यचर्या को कहते हैं। जिसमें विभिन्न प्रकार की योग्यताओं को प्राथमिकता दी जाती है। इससे विषयों की अपेक्षा योग्यता पर ध्यान दिया जाता है। उदाहरण - कताई, बुनाई, कला से सम्बन्धित, लकड़ी के कार्य से,सम्बन्धित, मोमबत्ती, अगरबत्ती इत्यादि हमारे देश में वर्तमान बेसिक शिक्षा में इस प्रकार के पाठ्यचर्या का विशेष महत्व है।

e. **छुपा पाठ्यचर्या**:- यह एक ऐसा पाठ्यचर्या है जिसका उपयोग शिक्षक व छात्रों के बीच ज्यादा होता है। यह विद्यालय के परिवेश में ज्यादा मिलता है। इसके अन्तर्गत व्यवहार, योग्यता, कुशलता व परिपक्वता को बताया जाता है। बच्चों को सामाजिक राष्ट्रीय तथा मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार किया जाता है। यह विद्यालय परिवेश में बच्चों के व्यवहार क्रियाकलाप को बिना बताए अवलोकन करता है।

जिरॉल्ड (2006) के अनुसार - ’’यह ऐसा पाठ्यचर्या है जिसमें प्रवृति, ज्ञान, व्यवहार इत्यादि है जो हमारे जीवन में अप्रत्यक्ष रूप से प्रयोग होते है।’’

यह पाठ्यचर्या शिक्षा व्यवस्था में विद्यालय में सकारात्मक व नकारात्मक दोनों रूपों में पाया जाता है। शिक्षक इससे भली-भाँति परिचित होते हैं। इस पाठ्यचर्या को आसानी से पहचाना नहीं जा सकता।इसमें अध्यापक छात्र, समाज, ज्ञान, जागरूकता इत्यादि होते है। इसमें बच्चों को हमेशा नई-नई विषय वस्तु से अवगत कराना पड़ता है। जो उनके मुख्य पाठ्यचर्या में नहीं होता।

1.6 मूल पाठ्यचर्या व जमा पाठ्यचर्या की क्या विशेषता है?:-

1.6.1 मूल पाठ्यचर्या मूल पाठ्यचर्या उस पाठ्यचर्या को कहते हैं जिसमें कुछ विषय अनिवार्य होते है एवं कुछ ऐच्छिक होते हैं। अनिवार्य विषयों का अध्ययन करना प्रत्येक बालक के लिए अनिवार्य होता है तथा ऐच्छिक विषयों को व्यक्तिगत रूचियों, क्षमताओं के अनुसार चुना जा सकता है। यह पाठ्यचर्या (न्ै। अमेरिका) की देन है। इसके अन्तर्गत प्रत्येक बालक को व्यक्तिगत तथा सामाजिक दोनों प्रकार की समस्याओं के सम्बन्ध में ऐसे अनुभव प्रदान किए जाते हैं। जिसके द्वारा वह अपने जीवन में आने वाली सभी समस्याओं का निदान कर सके व उत्तम नागरिक बन सके।

मूल पाठ्यचर्या की विशेषता:-

इसके अन्तर्गत कई विषय को एक साथ पढ़ाया जाता है। विभिन्न विषयों को पढ़ाने का समय निश्चित होता है। यह पाठ्यचर्या बालक केन्द्रित है इसके द्वारा बालक में सामाजिक कार्यों को कराने में सामाजिक समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करना सिखाया जाता है।

1.6.2 जमा पाठ्यचर्या:-

दृष्टि बाधा जन्य सीमाओं के कुप्रभावों को कम करने। आकस्मिक अधिगम की कमी को पूरा करने तथा विद्यालय में दृष्टिवान (साामन्य) बालकों को सिखाये जाने वाले कुछ कौशलों के स्थान पर दृष्टि बाधितों को प्रदत्त वैकल्पिक तथा कुछ अतिरिक्त शैक्षिक अनुभवों के समूहों को जमा पाठ्यचर्या कहा जाता है।

जमा पाठ्यचर्या में निम्न तत्व है -

i. अनुपस्थिति ज्ञान एवं चलिष्णुता
ii. दैनिक क्रिया कलाप
iii. ब्रेल सिखाना
iv. विशिष्ट उपकरणों का उपयोग

अनुपस्थिति ज्ञान एवं चलिष्णुता ;व्तपंदजपंदजपवद ंदक डवइपसपजलद्ध:- इसमें बालकों को चलने तथा अपनी अवस्थिति जानने सम्बन्धित विषयों को पढ़ाया जाता है। इसमें केन (छड़ी) के माध्यम से दृष्टिबाधित बच्चों को चलने की ट्रेनिंग (प्रशिक्षण) दिया जाता है। दृष्टिबाधित बच्चों को अपना स्थान पहचानने की वह कहाँ है? कहाँ से कहाँ जाना है? का प्रशिक्षण दिया जाता है। शहर तथा गाँव के रास्ते अलग-अलग होते है। इसकी पहचान कराई जाती है।अनुस्थिति ज्ञान तथा चलिष्णुता में निम्न प्रक्रिया कराई जाती है।अनुस्थिति ज्ञान का तात्पर्य है कि व्यक्ति जिसे स्थान पर खड़ा उसका ज्ञान करना तथा उस वातावरण के बारे में ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से प्रशिक्षण देना।

1. चलिष्णुता का तात्पर्य है एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना अर्थात् एक दृष्टिबाधित व्यक्ति को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का प्रशिक्षण देना। अनुस्थिति ज्ञान एवं चलिष्णुता के माध्यम से एक दृष्टिबाधित व्यक्ति का आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।
2. शरीर के अंगों को पहचानना: दृष्टिबाधित बच्चों को हाथ, मुँह, पैर, आँख इत्यादि का ज्ञान होना चाहिए। शरीर के जटिल अंगों जैसे कलाई, कंधा, घुटना व शरीर के ऊपरी हिस्से, नीचले हिस्से व बगल में आगे तथा पीछे इत्यादि के बारे में ज्ञान कराना चाहिए।
3. दिशाओं का ज्ञान: दिशाओं का ज्ञान कराना, चाल ढंग से अवगत कराना। शरीर का सन्तुलन बनाना। पैर का सही स्थान बनाना, सिर को संभालना, हाथ व पैर का समन्वय हाथ की पकड़ व संकरे रास्ते व बाधा इत्यादि से परिचय कराना। कमरे की दीवारों, खिड़कियों, दरवाजे और उसमें रखी सामग्री से परिचय करवाना।

दैनिक क्रिया कौशल:- दृष्टिबाधित बच्चों को सामान्य बच्चों की तरह दैनिक क्रियाकलाप कराने चाहिए। बच्चों को नहाने, ब्रश करने, खाना खाने, टॉयलेट, सोने, कपड़े पहनने, जूता बांधने इत्यादि कौशलों में निपुण कराया जाता है।

ब्रेल सिखाना:- इसमें बच्चों को पढ़ाने के लिए ब्रेल का इस्तेमाल कराया जाता है। पुस्तकें ब्रेल भाषा में लिखी होनी चाहिए। इसके अन्तर्गत निम्न क्रियाकलाप कराए जाते हैं।

1. **ब्रेल पठन** (पढ़ने से पहले की तैयारी): ब्रेल मैकेनिजम, ट्रेनिंग पोजिस, अवस्थाओं के बारे में शब्द कोष में वृद्धि, मार्किंग सिस्टम का प्रयोग इत्यादि।
2. **ब्रेल पठन**: विस्तार पूर्वक पढ़ना सामान्य सूचनाओं के लिए पढ़ना मौखिक पठन, मौन पठन, द्रुत पठन तेजी से।
3. **लेखन**: लेखन में सामान्य रूचि लेखन श्रेय, स्टाइल्स व स्लेट का प्रयोग सिखाया जाता है। स्वयं शुद्धिकरण, विराम चिन्हों का प्रयोग कन्स्ट्रक्शन और प्रतीकों का प्रयोग इत्यादि को सिखााया जाता है।

विशिष्ट उपकरणों का प्रयोग:- अबेकस, टेलर फ्रेम, स्पर्शीय मानचित्र का प्रयोग, ब्रेलर तथा निम्न दृष्टि उपकरणों का प्रशिक्षण सम्मिलित कि यजाता है।

जमा पाठ्यचर्या को उपकरण विषय भी कहा जाता है। क्योंकि यह दृष्टि बाधित बालकों को अपने दृष्टिवान सहपाठियों की भाँति शैक्षिक प्रक्रिया को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने में सहायता प्रदान करता है।

1.7 सारांश:-

पाठ्यचर्या शिक्षण प्र्रक्रिया को पूरा करने में महत्वपूर्ण रोल अदा करता है। बिना पाठ्यचर्या के कोई भी शिक्षण कार्य पूरा नहीं हो सकता है। पाठ्यचर्या में विद्यालय परिवेश तथा विद्यालय के चार दीवारी के बाहर के क्रिया कलापों को शामिल किया जाता है। विद्यालय में बच्चों को विषय से संबंधित पाठ्यचर्या सिखाया जाता है। इसीमें सभी तरह के पाठ्यचर्या समाहित होते है। छुपा हुआ पाठ्यचर्या बच्चों के व्यवहार, संस्कार, कर्म तथा सोच को प्रभावित करता है। इसमें बहुत से ऐसे तथ्य हैं जो विद्यालय वातावरण में तथा घर के वातावरण दोनों में पाये जाते हैं।

पाठ्यचर्या का विकास हम समाज की आवश्यकता व उसकी समस्या को ध्यान में रखकर बनाते है। क्योंकि पाठ्यचर्या वर्तमान को सुधारने के लिए व भविष्य की कक्षा को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है। पाठ्यचर्या को प्रभावित करने वाले तत्वों में समाज, राज्य, नीतिशास्त्र इत्यादि जिम्मेदार होते है। इनके अंदर पाये जाने वाले तत्वों के द्वारा पाठ्यचर्या को प्रभावित होता है। अच्छे पाठ्यचर्या अच्छे समाज, राष्ट्र व विद्यार्थियों का निर्माण करता है। कहा जाता है जिस समाज की शिक्षा व्यवस्था जैसी होती है उस समाज का भविष्य उसी अनुसार होता है। शिक्षा समाज को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

1.8 अभ्यास प्रश्न:-

1. पाठ्यचर्या क्या हैं? परिभाषा लिखे।
2. पाठ्यचर्या को प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन करें?
3. आवयकता आधारित पाठ्यचर्या क्या होता है?
4. जमा पाठ्यचर्या किसे कहते हैं?
5. छुपा हुआ पाठ्यचर्या किसे कहते हैं?

1.9 निबंधात्मक प्रश्न:-

1. पाठ्यचर्या की परिभाषा व उसके प्रकारों का वर्णन करें?
2. जमा पाठ्यचर्या को विस्तृत वर्णन करें।

1.10 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय 1999, दृष्टि बाधितों का शैक्षिक परिदृश्य (पाठ्यचर्या अनुकूलन और विनिमय, शैक्षिक नियोजन और प्रबंधन, अनुसंधान और पाठ्यचर्या रूपरेखा।)
2. इंटरनेट सेवा
3. शर्मा, आर.ए. पाठ्यचर्या विकास
4. दुवे कुमार सुदीप दुष्टिवाधा और आवश्यक कौशल
5. NCERT (2005) Normal Carrıculum framework, natıonal councıl of educatıonal research and traınıng, New Delhı.
6. AFB-Amerıcan foundatıon for the Blınd Expandıng possıbılıtıes for people wıth vısıon loss.
7. Natıonal federatıon of The Blınd.
8. डॉ. जोसेफ आर. ए. विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास

इकाई-2 विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या उपागम (Curriculum Approaches In Special Education)

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या

2.4 विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या उपागम

2.4.1 विशेय केन्द्रित उपागम

2.4.2 विस्तृत क्षेत्र उपागम

2.4.3 सामाजिक समस्या उपागम

2.4.4 शिक्षार्थी केन्द्रित उपागम

2.5 विकासात्मक उपागम

2.6 कार्यात्मक उपागम

2.7 उदारात्मक उपागम

2.8 सार्वभौमिक उपागम

2.9 शैक्षिक प्रभाव

2.10 निबंधात्मक प्रश्न

2.11 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पुस्तके

2.1 प्रस्तावनाः-

विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या उपागम का उपयोग हम पाठ्यचर्या को विकसित करने, नियोजित करने, संगठित करने तथा क्रियान्वित करने में करते है। उपागम एक मार्ग, ढाँचा होता है जिसके द्वारा हम किसी एक निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करते है। विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या उपागम का तात्पर्य यही होता है कि हम उस विषय में जो पाठ्यचर्या तैयार करना चाहते है उसके लिए किन-किन वस्तुओं,

सेवाओं, व्यक्तियों, संस्थाओं, मार्गो का अनुसरण करना होगा। हम पाठ्यचर्या को कैसे तैयार करेंगे सभी बातों का अनुसरण करना होगा। इसमें पाठ्यचर्या को अलग-अलग विषयों, क्षेत्रों, में बांट कर उसका अध्ययन व नियोजन करते है।

वर्तमान समय में विशेष शिक्षा का जो प्रारूप है उसके अनुरूप हम पाठ्यचर्या को बालक-केन्द्रित तैयार करते है। इसी के आधार पर हम पता करते है कि और कौन से क्षेत्र है जो पाठ्यचर्या बनाने में सहयोग या आवश्यक है।

इस इकाई में हम विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या के बनाने के तरीके व मार्गो का अध्ययन करेंगे। प्रथम इकाई में विशेष शिक्षा के बारे में चर्चा किया जा चुका है इसलिए इस इकाई में हम विशेष शिक्षा के पाठ्यचर्या के उपयोगों का वर्णन करेंगे इसमें सीखने के विकासात्मक, कार्यात्मक, व सार्वभौमिक उपागमों का वर्णन करेंगे।

2.2 उद्देश्यः-

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप यह जान पायेंगे।

1. पाठ्यचर्या क्या है? व इसका निर्माण किस प्रकार होता है।
2. पाठ्यचर्या में उपागम क्या होता है।
3. विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या उपागम क्या है।
4. पाठ्यचर्या के निर्माण में विभिन्न उपागम क्या सहायता करते है।
5. विकासात्मक पाठ्यचर्या क्या होता है?
6. सिखने में विकासात्मक व कार्यत्मक उपागम का क्या संबंध है।
7. सार्वभौमिक डिजाईन क्या है?
8. विशेष शिक्षा में सार्व भौमिक ढाँचा किस प्रकार तैयार किया जाता है।
9. विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या की क्या उपयोगिता है?
10. विकलांग बच्चों के लिए किस प्रकार का पाठ्यचर्या तैयार किया जाता है।

2.3 विशेष शिक्षा में पाठ्यक्रमः-

पाठ्यचर्या की आधुनिक अवधारणा बहुत ही व्यापक है वर्तमान काल में इसके अन्तर्गत उन समस्त संगठित तथा असंगठित क्रियाओं व अनुभवों को रखा जाता है, जिन्हें विद्यार्थी विद्यालय के परिसर और अपनी कक्षाओं में भी सीखने एवं प्राप्त करते है। वर्तमान समय विशेष शिक्षा का है इसमें बच्चों को सभी प्रकार (विकलांग-सकलांग) बच्चों की शिक्षा दिया जाता है। पाठ्यचर्या निर्माण का कार्य काफी मुश्किल भरा होता है। इस काम के लिए नियुक्त व्यक्ति या समिति को अनेक सिद्धांतों तथा कारकों को ध्यान में रखना पड़ता है।

दार्शनिक सिद्धांत व समाज शास्त्रीय सिद्धांत को देखते हुए हम पाठ्यचर्या के विकास व निर्माण का कार्य करते है। विशेष आवश्यकता वाले बालकों के लिए पाठ्यचर्या तैयार करते समय अलग तरह से सोचना पड़ता है इसके लिए सामानय पाठ्यचर्या मे थोड़ा सा परिवर्तन करना पड़ता है। इसी परिवर्तन के सिद्धांत को दृष्टिवाधितो के लिए पाठ्यचर्या निर्माण के सिद्धांत कहा जाता है।

विशेष शिक्षा में जो पाठ्यचर्या तैयार किए जाते हैं उनको विशेष पाठ्यचर्या कहते है इसके द्वारा सभी विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शिक्षा प्रदान किया जा सकता है।

2.4 विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या उपागमः-

पाठ्यचर्या के उपागम वे होते है जो पाठ्यचर्या विकास एवं रूपांतरण के विभिन्न पहलुओं का निर्णय करते है। ये नियोजित संगठन होते है, जिन्हें शिक्षक अधिगम अनुभव प्रदान कराते समय अनुसरण करता है पाठ्यचर्या जब बनाया जाता है तो जिन समस्याओं को, विषय वस्तु को शामिल करना होता है। वह सब किस क्षेत्र से है हम उन्हीं को पाठ्यचर्या विकास के उपागम के क्षेत्र कहते है जैसे बच्चे से संबंधित क्षेत्र को शिक्षार्थी केन्द्रित उपागम कहा जाता है।

पाठ्यचर्या विकास के विभिन्न उपागमः-

i. विषय-केन्द्रित उपागम।
ii. विस्तृत क्षेत्र उपागम।
iii. सामाजिक समस्या उपागम।
iv. शिक्षार्थी केन्द्रित उपागम

2.4.1 विषय-केन्द्रित उपागमः-

विषय केन्द्रित से हमारा तात्पर्य है कि जब पाठ्यचर्या का विकास किया जाता है तो हम उसमें विभिन्न विषयों को शामिल करते है जैसे भाषा शास्त्र, गणित, सामाजिक विज्ञान इत्यादि। पाठ्यचर्या विकास के क्षेत्र में इस उपागम का सबसे अधिक प्रयोग किया जाता है।

पाठ्यचर्या नियोजन की प्रमुख जिम्मेदारी विभिनन विषय-क्षेत्र तथा उस विषय के अधिगम अनुभवों को निर्धारित करनी होती है। पाठ्यचर्या में विषयों को ज्यादा महत्व इसलिए दिया जाता है ताकि पाठ्यचर्या विषय को अच्छे रूप में प्रदर्शित कर सके।

(1) भाषा शास्त्र से संबंधितः-भाषा शास्त्र में हम पाते है कि भाषा से संबंधित सभी पहलु चाहे वह साहित्य हो, व्याकरण हो, सभी को ध्यान में रखा जाता है हम भी इस बात को ध्यान में रखते है कि जब पाठ्यचर्या बनाया जा रहा होता है तो उसमें भाषा का उपयोग कितना किया जा रहा है। पाठ्यचर्या में किस हद तक भाषा का प्रयोग कर सकते है। किसी भी विषय वस्तु, कक्षा के लिए

विद्यार्थी के लिए भाषा महत्वपूर्ण है इसी को ध्यान में रखकर पाठ्यचर्या में भाषा शास्त्र का उपयोग किया जाता है।

(2) गणित से संबंधित क्षेत्रः- विषय केन्द्रित उपागम में गणित एक विषय है जो पाठ्यचर्या निर्माण के समय सहयोग व एक विषय क्षेत्र के रूप में कार्य करती है। इसके द्वारा हम गणित के क्षेत्र से संबंधित पाठ्यचर्या तैयार करते है। रेखा गणित, सामान्य अंकगणित, बीजगणित इत्यादि रूपों में यह पाया जाता है इसमें हम इससे संबंधित पाठ्यचर्या का उपयोग कर नये पाठ्यचर्या का विकास करते रहे। पाठ्यचर्या में गणित भी एक विषय है इसलिए सभी कार्य पाठ्यचर्या में वर्णित किए जाते है।

(3) विज्ञान से संबंधित क्षेत्रः- जिस प्रकार भाषा शास्त्र व गणित का उपयोग किया जाता है ठीक उसी प्रकार विज्ञान का भी पाठ्यचर्या कठिन उपयोग होता है। इसी को विज्ञान आधारित पाठ्यचर्या विकास कहते है। हम सभी विज्ञान को जानते व उसका अध्ययन करते है इसी कारण यह विज्ञान पाठ्यचर्या का मुख्य अंग बनकर रह गया है।

(4) सामाजिक विज्ञान से संबंधित क्षेत्रः- पाठ्यचर्या के विकास में विषय-केन्द्रित पाठ्यचर्या उपागम में सामाजिक अध्ययन एक विस्तृत विषय के रूप में कार्य करता है इसका पाठ्यचर्या विकास के समय ज्यादा उपयोग किया जाता है। सामाजिक समस्याओं से संबंधित विषय इसमें शामिल किए जाते है।

2.4.2 विषय केन्द्रित उपागम की आवश्यकता महत्वः-

इसकी आवश्यकता हमें सबसे ज्यादा होती है। पाठ्यचर्या का विकास जब भी होता है हम विषय-वस्तु को ज्यादा महत्व देते है। ज्यादातर पाठ्यचर्या विषय आधारित ही होते है। हम किसी भी विषय से संबंधित खोज व शोध को जब उस विषय वस्तु में शामिल करना चाहते है तो उसके लिए नये मानक व नियमों का पालन करते हुए पाठ्यचर्या को बनाया जाता है। विषय आधारित पाठ्यचर्या उपागम में विश्वसनीयता ज्यादा होती है। इसमें बच्चों को पढने में भी सहायता मिलती है।

इसका महत्व विशेष रूप से है क्याकि यह पाठ्यचर्या विषयों को ज्यादा प्राथमिकता देता है। इसकी लोगो को ज्यादा आवश्यकता होती है आसानी से प्राप्त हो जाता है। तथा इस तरह के पाठ्यचर्या का विकास, नियोजन, क्रियान्वयन आसानी से किया जा सकता है। इसलिए विषय केन्द्रित उपागम का महत्व बहुत होता है।

विकासात्मक प्रशनः-

प्रश्न-1 किस उपागम में विषयों को ज्यादा महत्व दिया जाता हैं?

प्रश्न-2 विषयों की क्या उपयोगिता है।

2.4.3 विस्तृत क्षेत्र उपागमः-

विस्तृत शब्द का तात्पर्य है। बड़ा या फैला हुआ व क्षेत्र मतलब मैदान, भाग, तथा उपागम का अर्थ है माध्यम अर्थात् बड़ा माध्यम। इसमें एक से अधिक विषय क्षेत्रों को शामिल कर एक बड़ा विषय क्षेत्र बनाया जाता है। उदाहरण के लिए भूगोल विषय में मानव भूगोल, प्राकृतिक भूगोल, जनसंख्या भूगोल इत्यादि को मिला कर एक विस्तृत क्षेत्र बनाया गया है।

विस्तृत क्षेत्र उपागम में पाठ्यचर्या तैयार करते समय एक से अधिक विषय को शामिल किया जाता है। इससे फायदा यह होता है कि पाठ्यचर्या बहु उद्देशीय हो जाता है इसमें एक से अधिक कक्षाओं में शामिल कर उपयोग में लाया जा सकता है। इस तरह के उपागम से तैयार पाठ्यचर्या पूरी तरह से मान्य होते है। इनकी विश्वसनीयता कायम रहती है। इसका परिक्षण मूल्यांकन करना बहुत आसान होता है।

आवश्यकता व महत्वः- वर्तमान समय में विस्तृत क्षेत्र उपागम की आवश्यकता बहुत है क्योंकि सभी पाठ्यक्रमों में इस उपागम का प्रयोग किया जा रहा है। इसका इसलिए ज्यादा उपयोग हो रहा क्योंकि पाठ्यचर्या विकास में इसका उपयोग ज्यादा हो रहा है। नये पाठ्यचर्या बनाने में बहुत आसानी होती है।

जैसे विज्ञान से संबंधित पाठ्यचर्या तैयार करना है तो हम उससे संबंधित विषयों का अध्ययन करते है, जिसमें जन्तु विज्ञान, शारीरिक विज्ञान, वनस्पति विज्ञान इत्यादि विषयों को शामिल कर नये व अच्छे पाठ्यचर्या बनाये जा सकते है। इसलिए इस उपागम का महत्व अन्य उपागमों से ज्यादा है।

विकासात्मक प्रशनः-

प्रश्न-3 भूगोल विषय के क्षेत्र का वर्णन करें?

प्रश्न-4 विस्तृत क्षेत्र का अर्थ बताएॅ?

2.4.4 सामाजिक समस्या उपागमः-

इस उपागम में सामाजिक समस्याओं पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। इस के प्रति जागरूकता उत्पन्न करता है। उस समस्या के समाधान के प्रति बच्चों में रूचि बढ़ाता है तथा बच्चे समस्या सुलझाने योग्य बनते है। इसका प्रयोग हम सामाजिक अध्ययन विषय से संबंधित पाठ्यचर्या तैयार करते समय करते है। इस उपागम के तहत पर्यावरणीय समस्या, धर्म, जनसंख्या, संचार, तकनीकी विषयों पर पाठ्यचर्या का विकास किया जा सकता है।

(1) पर्यावरणीय समस्याः- इस उपागम के द्वारा हम पर्यावरण से संबंधित समस्या पर ध्यान देते है जैसे ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत का क्षरण, ऑक्सीजन की कमी, ग्लेशियर का पिघलना, भू-स्खलन, तापमान इत्यादि से संबंधित विषय को शामिल कर सकते है। इसमें हम नये तथ्यों को

शामिल कर सकते है। इसमें हम नये तथ्यों को शामिल कर एक नया व अच्छा पाठ्यचर्या तैयार कर सकते है। इस उपागम का इस्तेमाल कर हम उपर्युक्त समस्याओं को सामाजिक अध्ययन के पाठ्यचर्या तैयार कर बच्चों को इसके प्रति जागरूक व इसके निदान का उपाय करने के लायक बना सकते है।

(2) धार्मिक समस्याः- इस उपागम के द्वारा हम धर्म से संबंधित मामले, (आंतकवाद, समप्रदायिक हिंसा) को सामाजिक अध्ययन में शामिल करते है तथा इसके साकारात्मक हल को समाज तथा बच्चों के सामने लगने का प्रयास करते है। जिससे समाज में ऐसी घटनाएॅ ना हो लोग आपसे में सौहार्द्ध पूर्वक रहे तथा अमन चैन कायम रहे। बच्चों को इसके परिणाम व हल के बारे में बताना चाहिए जिससे वे इसका समाधान कर सके।

(3) जनसंख्या, संचार व तकनीकी क्षेत्र से संबंधितः- इस उपागम में हम सामाजिक समस्या जैसे जनसंख्या वृद्वि, संचार प्रणाली, साइबर क्राइम, सोशल मिडिया टेक्नोलॉजि इत्यादि का समावेशन करते है हम देखते है कि पाठ्यचर्या का निर्माण करते समय इन समस्याओं को शामिल किया जा रहा है या नहीं किया जा रहा है। इसके लिए हम पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया के दौरान जाँच करते है। वर्तमान समय तकनीकी युग का है इसलिए इनके बारे में बच्चों को अवश्य बताना चाहिए कि उसका सदउपयोग व दुरूपयोग कैसे सम्भव है।

बढ़ती जनसंख्या को रोकने तथा उससे होने वाली समस्याओं के बारे में बच्चों को जागरूक करने के लिए इन तमाम विषयों को पाठ्यचर्या में शामिल करना होगा तभी हम उस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है। तकनीकी का दुरूपयोग व सोशल मिडिया की बुराईयों से बच्चों को बचाने के इसके परिणाम बताने होंगे यह तभी संभव हो सकता है जब संबन्धित विषय पाठ्यचर्या में शामिल होगा अन्यथा बच्चों को इससे बचाया नहीं जा सकता वे इसका दुरूपयोग करेंगे।

सामाजिक समस्या उपागम की आवश्यकता व महत्वः- वर्तमान समय में पाठ्यचर्या के विकास के लिए जिन उपागमों का प्रयोग किया जा रहा है उनमें सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या उपागम हैं क्यों कि समाज आर्थिक रूप से विकसित हो रहा हैं लेकिन नैतिक रूप से पीछे है इसका कारण है कि लोग अपना ज्यादा समय व ध्यान इन समस्या के निदान की तरफ नहीं देते तथा धन के लालच में गलत कार्य करते है लोगो में मानवता की कमी आई है, लोग आपसी सौहार्द्ध बिगाड व भूल रहे हैं। ज्यादा से ज्यादा धन कमाने व उपलब्धि के चक्कर में लोग मानवता को पीछे छोड़ दिए। इसी को वापस समाज में लाने के लिए हमें इससे संबंधित विषयों को पाठ्यचर्या मे लाना होगा तभी हम एक सभ्य समाज का सपना पूरा कर पायेंगे।

इसका महत्व इसी आधार पर लगाया जा सकता कि इसके परिणाम व दुष्परिणाम में अन्तर कर लगाया जा सकता है। वर्तमान समय तकनीकी का है तथा लोगों में सामाजिकता की भावना कम

हो रही है। इसलिए यह माध्यम बहुत ही उपयोगी है जिसका इस्तेमाल कर हम समाज को नई दिशा में ले सकते है।

विकासात्मक प्रशनः-

प्रश्न-5 सामाजिक समस्याए कौन-कौन सी हो सकती हैं?

प्रश्न-6 धार्मिक समस्याओं का पाठ्यचर्या पर प्रभाव बताएँ।

2.8 शिक्षार्थी केन्द्रित उपागमः- शिक्षार्थी-केन्द्रित उपागम, विषयों के निर्धारण करते समय छात्र की व्यक्तिगत एवं सामाजिक आवश्यकताओं पर प्रकाश डालता है। यह उपागम छात्र को भविष्य की अपेक्षा वर्तमान के लिए तैयार करता है। मनोवैज्ञानिक तौर से ठोस और उद्देश्यपूर्ण अधिगमअनुभवों को छात्र की आवश्यकतानुसार ही नियोजित होना चाहिए।

इस उपागममें हम विषयों को इस प्रकार चुनते है जो छात्रों की वर्तमान समस्या का समाधान कर सके। छात्र जिस तरफ जानाचाहे अर्थात् वे वर्तमान उद्देश्यों में सफल हो इसके लिए पाठ्यचर्या बनाते समय उनकी जरूरतों को जानना अति आवश्यक होता है।

वर्तमान समय समावेशी शिक्षा का है जिसमें सभी बच्चों को एक साथ लेकर चलने की कल्पना किया गया चाहे वह सामान्य हो या विकलांग। सबको साथ लेकर चलना कठीन होता है इसके लिए अलग-अलग जरूरतों व आवश्यकता को जानना होता है जो पाठ्यचर्या विकास के समय निर्धारित किया जाता है।

शिक्षार्थी-केन्द्रित उपागम की आवश्यकता व महत्वः- बच्चों को वर्तमान समय के बारे में बताकर उनके क्षमता व जरूरत के हिसाब से पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाना चाहिए। हम सभी जब भी पाठ्यचर्या नियोजन करते है उसमें सभी तरह विकलांग व सकलांग व्यक्ति की आवश्यकता का ध्यान रखना चाहिए। उनकी आवश्यकता क्या है किस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था व विषयों की जरूरत पड़ती है इसका पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए।

वर्तमान समय में समावेशी शिक्षा व्यवस्था होने के कारण इस प्रकार के उपागम का प्रयोग किया जाना चाहिए। इससे बच्चों में नये विचारों तथा भावनाओं का विकास कराया जा सकता है।

विकासात्मक प्रश्न-

प्रश्न-1शिक्षार्थी केन्द्रित उपागम क्या हैं?

प्रश्न-2शिक्षार्थी केन्द्रित विषय क्यों आवश्यक हैं?

2.5 सीखने के विकासात्मक उपागमः-

विकासात्मक शब्द से तात्पर्य यह है कि हम जो भी विकास कर रहे है या करना चाहते है उसका विकास कब तक चलना चाहिए किस तरह का होना चाहिए हम सभी यह जानते है कि विकास मनुष्य का परम लक्ष्य है लेकिन यह सकारात्मक व सतत होना चाहिए इसका परिणाम सकारात्मक होना चाहिए।

सीखने के विकासात्मक उपागम में हम ऐसे उपागम का उपयोग करते है जिसमें हर रोज नये नये तथ्य व नियम निकलते है। लोग कुछ अलग तरह से सोचते हैं। उसका निमार्ण अलग तरह से किया जा रहा है। यह रास्ता ऐसा है जो विकास की तरफ जाता है। हमारा काम पाठ्यचर्या के विकास, नियोजन, क्रियान्वयन व मूल्यांकन में सहयोग करना तथा एक अच्छा पाठ्यचर्या तैयार करना।

2.6 सी खने के कार्यात्मक उपागमः-

पाठ्यचर्या का विकास करते समय विषयों का चयन करना उनको अलग-अलग संबंधों से जोड़ना तथा एक साथ लाना व अच्छे पाठ्यचर्या का विकास करना मूल लक्ष्य होता है। इस उपागम में बच्चों को अलग-अलग ग्रुपों में उनकी क्षमता के अनुसार बांटा जाता है इसमें हम सब की क्रियात्मक क्षमता का आंकलन करते है तथा उसकी विशेषता के अनुसार पाठ्यचर्या का निर्माण कराने का प्रस्ताव करते है। बच्चों के कार्यो का विश्लेषण किया जाता है कि वे किस प्रकार का कार्य कर सकते है। इन सभी बातों को ध्यान में रखा जाता है।

2.7 सी खने के उदारात्मक उपागमः-

इस उपागम में बच्चों को यह छूट दिया जाता है कि वे किसी एक विषय पर अपना पाठ्यचर्या निर्धारित करें। उसे चुने इसमें स्वतंत्रता ज्यादा होती है कि बच्चें क्या सीखना चाहते है तथा क्या सीख सकते है। हम सभी यह जानते है कि उदार विचार पाठ्यचर्या उपागम की यह विशेषता होती है कि आप क्या चुनना चाहते है। उनको पूरी तरह समझने का मौका दिया जाता है। सामान्य बच्चों के साथ-साथ विकलांग बच्चों को भी चुनाव का पूरा हक होता है तथा वे इसका खुब पालन करते है।

2.8 सी खने के सार्वभौमिक उपागमः-

इस उपागम का प्रयोग सभी व्यक्तियों को लाभ पहुंचाने के लिए किया जाता है। हम सभी इस बात का पूरा ध्यान रखते है कि जो पाठ्यचर्या बनाया जा रहा है उसका मलतब कितने का फायदा होगा विकलांग वसकलांग सबको एक ही पाठ्यचर्या से शिक्षा दिलाई जा सकती है। इसमें सीखने के वे

सभी पहलु सामिल किए जाते है जिनका उपयोग हम शिक्षण कार्य के दौरान करते है। हम शिक्षा व्यवस्था तथा शिक्षण कार्य आसानी के साथ सभी के लिए उपलब्ध करा सके इसके लिए नये पाठ्यचर्या उपागम विकासात्मक शिक्षण प्रक्रिया व पाठ्यचर्या से संबंधित क्रियाकलाप कराते है।

2.9 शैक्षिक प्रभावः-

हमने उपुर्यक्त वर्णन में पाया है कि बिना पाठ्यचर्या के कोई भी शिक्षण कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता अर्थात् दुसरे शब्दों में पाठ्यचर्या का विकास ही उसके उपागमों पर निर्भर करता है कि उसका स्वरूप तथा विकास कैसा होगा। सब मिला कर हम कह सकते है कि पाठ्यचर्या का विकास निरंतर होना चाहिए अच्छे पाठ्यचर्या बनने चाहिए और यह तभी सम्भव है जब हम उपुर्यक्त उपागमों का उपयोग कर पाठ्यचर्या का निर्माण करेंगे।

बच्चों का विकास, समाज का विकास, देश का विकास, पाठ्यचर्या के विकासात्मक उपागमों से होता हुआ जाता है। इसी पर बहुत कुछ निर्भर रहता है कि समाज का, देश का,बच्चों का निर्माण कैसे किया जाय इन्हे क्या पढाया जाय यह सब निर्माण की प्रक्रिया के दौरान ही किया जाना चाहिए। पाठ्यचर्या का स्वरूप उसकी विशेषता पूरी तरह से उसके विकासात्मक उपागम पर निर्भर करता है।

इसलिए यह पूरी तरह से सत्य है कि हम जैसा भविष्य चाहते है उसी तरह का पाठ्यचर्या तैयार करना चाहिए। उसमें उसी प्रकार के विषयों को शामिल करना चाहिए।

2.10 निबंधात्मक प्रश्न-

प्रश्न-1शैक्षिक उपागम क्या हैं?

प्रश्न-2 सामाजिक उपागम कितना महत्वपूर्ण हैं?

प्रश्न-3शिक्षा के लिए विषय वस्तु कि उपयोगिता बताएॅ?

प्रश्न-4 विशेष शिक्षा में उपागमों क्या आवश्यता हैं?

प्रश्न-5 पाठ्यचर्या विकास में उपागम क्या कार्य करते हैं?

2.11 संदर्भ ग्रंथ सूची

1. उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय 1999, दृष्टि बाधितों का शैक्षिक परिदृश्य (पाठ्यचर्या अनुकूलन और विनिमय, शैक्षिक नियोजन और प्रबंधन, अनुसंधान और पाठ्यचर्या रूपरेखा।)
2. इंटरनेट सेवा
3. शर्मा, आर.ए. पाठ्यचर्या विकास

4. दुवे कुमार सुदीप दुष्टिवाधा और आवश्यक कौशल
5. NCERT (2005) Normal Carrıculum framework, natıonal councıl of educatıonal research and traınıng, New Delhı.
6. AFB-Amerıcan foundatıon for the Blınd Expandıng possıbılıtıes for people wıth vısıon loss.
7. Natıonal federatıon of The Blınd.
8. डॉ. जोसेफ आर. ए. विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास
9. शिक्षक-प्रशिक्षण लेखमाला आल इण्डिया कन्फेडरेशन ऑफ दी ब्लांइड।

इकाई -3 पाठ्यचर्या के प्रकार (Types of Curriculum)

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 आवश्यकता

3.4 पाठ्यचर्या की परिभाषा

3.5 पाठ्यचर्या के प्रकार

3.5.1 आवश्यकता आधारित

3.5.2 ज्ञान आधारित पाठ्यचर्या

3.5.3 कौशल आधारित पाठ्यचर्या

3.5.4 छुपा हुआ पाठ्यचर्या

3.5.5 क्रिया आधारित पाठ्यचर्या

3.6 सारांश

3.7 निबंधात्मक प्रश्न

3.8 संदर्भ ग्रंथ सूची

3.1 प्रस्तावना -

पाठ्यचर्या किसी भी शैक्षिक प्रक्रिया की आत्मा होती है। बालकों मे अपेक्षित परिवर्तन लाने हेतु पाठ्यचर्या का प्रयोग किया जाता है। इसके अन्तर्गत वे सभी क्रियाकलाप आते है जो कक्षा कक्ष के अन्दर बाहर दोनो तरफ से कराई जाती है हम इसका पूरा अध्ययन शिक्षण प्रक्रिया के दौरान कराते है। प्रत्येक समाज बालक का सामाजिकरण इस तरीके से करना चाहता है कि बालक उस वातावरण से सामंजस्य बिठा सके जिसमें वह रह रहा है। पाठ्यचर्या इसकी उद्देश्य को पूर्ण करने का साधन है। इसइ इकाई में हम पाठ्यचर्या की परिभाषा, अर्थ, आवश्यकता, व पाठ्यचर्या के प्रकारों का वर्णन करेगे। इसमें पाठ्यचर्या के पाचों प्रकार आवश्यकता आधारित ज्ञान आधारित कौशल आधारित, क्रिया केन्द्रित, छुपा पाठ्यचर्या का वर्णन किया गया द्य

3.2 उद्देश्य

1. छात्र पाठ्यचर्या की परिभाषा व अर्थ बता सकेंगे द्य
2. छात्र पाठ्यचर्या का विस्तृत वर्णन कर सकेंगे द्य
3. छात्र पाठ्यचर्या के प्रकारों का वर्णन कर पायेंगे द्य
4. छात्र छुपे हुये पाठ्यचर्या का वर्णन कर पायेंगे द्य
5. छात्र आवश्क्यता आधारित पाठ्यचर्या को समझ व उसकी उपयोगिता का वर्णन कर पायेंगे द्य
6. छब्थ् 2005 की विशेषता का वर्णन कर सकेंगे द्य
7. छात्र भारत की शिक्षण व्यवस्था पर टिप्पणी लिख सकेंगे द्य

3.3पाठ्यचर्या का अर्थ:-

पाठ्यचर्या या करीकुलम शब्द कि उत्पति क्यूरे से हुई है। जिसका अर्थ है दौड़ का मैदान ; । इस प्रकार पाठ्यचर्या दौड़ का मैदान है, जिस पर बालक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दौड़ता हैं इसके लिये अनेक विद्वानों ने परिभाषायें दी है।

जिनमें से है:-

1. एनन - के अनुसार ''पाठ्यचर्या पर्यावरण में होने वाली क्रियाओं का योग है।''
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना, 2005 क्या है? व इसकी प्रमुख विशेषताए बताईये।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना, 2005 ;छब्थ्द्ध -राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार ''राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा'' राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली को विकसित करने का एक साधन है तथा शैक्षिक घटकों के साथ साथ यह भारत की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक वातावरण कि विविधता का उत्तरदायित्व निभाते हुए मूल्यों के सामान्य आधार निश्चित कर सकें।

शिक्षा नीति 1986 के सन्दर्भ में 1988 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के लिये एक रूपरेखा को विकसित किया गया था। लगभग 12 के अन्तराल के बाद सन् 2000 में स्कूलीय शिक्षा के लियें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 प्रारम्भ करने के लिये 21 फोकस समूह बनाये गये। जिन्होने स्कूलीय शिक्षा का गहनता से अध्ययन किया और राष्ट्रीय स्तर पर इन चर्चा के पश्चात इन्हे छब्म्त्ज् द्वारा प्रकाशित किया गया।

इस पाठ्यचर्या के कुछ प्रारम्भिक निर्णय निम्नलिखित है -

यह पाठ्यचर्या राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के महत्वपूर्ण निर्णय जैसे - भाषा शिक्षा सम्बन्धी निर्णय, शिक्षा का माध्यम, शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिये एक सामान्य संरचना 10़2 सामाजिक संस्कृति धर्म निरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता और उनसे सम्बन्धित तमाम शैक्षिक प्रविधि उसी प्रकार बनी

रहेगी। इस पाठ्यचर्या में आधारभूति भाग परिप्रेक्ष्य, अधिगम और ज्ञान, विषय सम्बन्धित परिचर्चा तथा संगठन आदि पर बल दिया गया ळें

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना, 2005 ; की प्रमुख विशेषतायेः-

NCF 2005 में स्कूलीय शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर चर्चा कि गई है।

इसके लिये 27 केन्द्र समूह ;थ्वबने हतवनचद्ध बनाये गये है।

NCF का 2005 का मूल आधार भारतीय संविधान है धर्मनिरपेक्षता, समतावादी, बहुलतावादी समाज जो सामाजिक न्याय व समानता के प्रमुख मूल्यों पर आधरित है।

1. ज्ञान और सूचना में विभेद करना।
2. शिक्षण रटने के स्थान पर बोध के लिये।
3. छात्र स्वंय ज्ञान का निर्माण कर सके।
4. पाठ्यचर्या समता, समावेशी शिक्षा के लियें।
5. पर्यावरण शिक्षा को अन्य स्कूली विषयों के साथ एकीकृत किया जाये।
6. विवेचनात्मक शिक्षा शास्त्र पर बल दिया जाये।
7. शिक्षा में गुणवता और उत्तरदायित्व को निश्चित किया जाये।
8. अधिगम में छात्र की सक्रियता सुनिश्चित करना।
9. अधिगम में चिन्तन की सरलता की उपलब्धता।
10. अधिगम में शैक्षिक तकनीकी की भव्यता।
11. समृद्ध सम्पोषित, अनुभावात्मक, अधिगम वातावरण उपलब्ध कराना।
12. सम्प्रेषण और सहभागिता को प्रोत्साहित करना।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना, 2005 के उद्देश्य - प्रत्येक योजना कार्यक्रम एवं पाठ्यचर्या से पूर्व उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है। जिससे कि पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जा सके। इसी क्रम में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या सन् 2005 की संरचना से पूर्व इसके उद्देश्यों का निर्धारण किया गया। इस पाठ्यचर्या के प्रमुख उद्देश्यों को निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा सकता हैः-

1. राष्ट्रीय विकास
2. राष्ट्रीय एकता का विकास।
3. छात्र में अध्ययन के प्रति रूचि का विकास।
4. अभिभावकों की आकांक्षाओं की पूर्ति।
5. मानवीय मूल्यों का विकास।
6. स्तरानूकूल शिक्षण विधियां।
7. भाषायी समस्या का समाधान।
8. शिक्षकों में आत्म विश्वास का विकास।

9. शिक्षण साधनों में समन्वय स्थापित करना।
10. छात्रों का सर्वागींण विकास।

राष्ट्रीय विकास:- शैक्षिक पाठ्यचर्या में एकता का अभाव राष्ट्रीय विकास कि प्रमुख बाधा मानी जाती है। राष्ट्रीय विकास उस अवस्था में सम्भव होता है, जब पाठ्यचर्या एवं शिक्षा व्यवस्था में एकरूपता हो तथा एक उद्देश्य को ही प्राप्त करने का प्रयास किया जाये। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना 2005 का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्र को विकसित अवस्था में पहुचाना है। क्योकिं शिक्षा ही वह मूलमन्त्र है क्योकिं शिक्षा ही वह मूलमन्त्र है, जो राष्ट्रीय विकास को चरम सीमा पर पहुंचा सकता है।

राष्ट्रीय एकता का विकास:- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना 2005 की संरचना में देश एकता एवं अखण्डता से सम्बन्धित विषय वस्तु को अधिक महत्व प्रदान किया है। भारत में विभिन्न भाषाये, धर्म एवं परम्पराएं विद्यमान है। इनका प्रभाव हमारे सामान्य जन-जीवन पर पड़ता है। इसलिए इस पाठ्यचर्या में राष्ट्रीय एकता से सम्बन्धित विषय वस्तु को महत्व प्रदान किया गया है।

छात्र में अध्ययन के प्रति रूचि का विकास:- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या सन् 2005 की संरचना का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यचर्या को स्तरानूकूल एवं परिस्थिति जन्य बनाना है, जिससे कि छात्र अध्ययन में रूचि लेगे। प्रत्येक स्तर पर छात्र की क्षमता एवं रूचि का ध्यान रखकर पाठ्यचर्या का स्वरूप निश्चित किया गया है।

अभिभावकों की आकांक्षाओं की पूर्ति:- अभिभावक शिक्षा द्वारा अपनी आकांक्षा पूर्ति छात्र के माध्यम से करना चाहते है। अर्थात प्रत्येक अभिभावक अपने बालक को विद्यालय भेजने के बाद उससे कुछ अपेक्षाएं रखता है। इस अपेक्षाओं की पूर्ति विद्यालय पाठ्यचर्या पर निर्भर करती है। अतः अभिभावकों की आकांक्षा को ध्यान में रखकर इस पाठ्यचर्या को निर्मित किया गया है।

मानवीय मूल्यों का विकास:- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या सन् 2005 की सरंचना का प्रमुख उद्देश्य छात्रों में प्रारम्भिक स्तर से ही मानवीय मूल्यों का विकास करना माना गया है। क्योकिं भारतीय दर्शन एवं शिक्षा मानवता एवं नैतिकता को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है। इसलियें शिक्षा के लियें निर्मित पाठ्यचर्या का स्वरूप भी इस तथ्य से सम्बन्धित होगा।

स्तरानूकूल शिक्षण विधियां:- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिये उसके स्वरूप पर विचार किया गया है। पाठ्यचर्या में स्तर के अनुसार शिक्षण विधियों के प्रयोग को मान्यता प्रदान की गयी है। जैसे प्राथमिक एवं पूर्व प्राथमिक स्तर पर सामान्य रूप से उन शिक्षण विधियों का प्रयोग करना चाहिए, जो कि खेल से सम्बन्धित हो तथा कथन एवं व्याख्यान विधि का प्रयोग माध्यमिक स्तर पर करना चाहिये।

भाषायी समस्या का समाधान:- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या सन् 2005 में भाषा समस्या का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। भारतीय समाज में विभिन्न प्रान्तों में भाषा का स्वरूप भिन्न भिन्न पाया जाता है। इससे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या निर्माण में भाषा की समस्या सदैव से रही है। कि किस

भाषा के स्वरूप में स्वीकार किया जाये? राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 मे विभिन्न भाषाओं एवं मातृभाषा को उचित स्थान प्रदान कर भाषायी समस्या का समाधान किया गया है।

शिक्षकों में आत्म विश्वास का विकास:- शिक्षक पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन एवं उसे सफल बनाने का प्रमुख साधन है। पाठ्यचर्या को सफल एवं क्रियान्वित करने वाले शिक्षक ही होते हे। शिक्षकों में आत्मविश्वास के विकास को स्वीकार करते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में इस तथ्य पर विस्तृत विचार विमर्श किया गया कि शिक्षकों में आत्मविश्वास की भावना को सुदृढ़ किया जाये, जिससे कि पाठ्यचर्या को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित किया जा सकें।

शिक्षण साधनों में समन्वय स्थापित करना:- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005, की संरचना का प्रमुख उद्धेश्य शिक्षण के मानवीय एवं भौतिक साधनों में समन्वय स्थापित करना है क्योकिं पाठ्यचर्या निर्माण से पूर्व उपलब्ध शैक्षिक संसाधनों पर विचार किया जाता है। पाठ्यचर्या में उन सभी संसाधनों के उचित एवं समन्वय पूर्ण प्रयोग को प्राथमिकता दी गयी है, जिससे कि पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन में कोई बाधा उपस्थित न हो।

छात्रों का सर्वागीण विकास:- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या सन् 2005 का प्रमुख उद्धेश्य छात्रों का सर्वागींण विकास करना है। इस पाठ्यचर्या में छात्रों को क्रियाशीलता रखने के लिये प्रायोगिक एवं सैद्धान्तिक पक्षों का समन्वय किया गया है। प्रायोगिक कार्यो का प्रत्येक स्तर पर स्वरूप भिन्न - भिन्न होता है। जैसे - प्राथमिक स्तर पर सृजनात्मक स्तर को कार्यानुभव का नाम दिया गया है, तथा माध्यमिक स्तर पर इसको प्रायोगिक कार्य के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार छात्र को क्रियात्मक एवं सैंद्धान्तिक पक्ष दोनों दृष्टिकोण से सुदृढ बनाया जाता है।

3.5 पाठ्यचर्या के प्रकार

3.5.1 आवश्यकता आधारित पाठ्यचर्या:-

अर्थ - वर्तमान परिस्थिति में जिन समस्याओं पर हम सरकार को चिंता होती है। इसलिए हम ऐसे पाठ्यचर्या को आवश्यकता आधारित पाठ्यचर्या कहते है। इस प्रकार के पाठ्यचर्या का निर्माण सरकार निजी संस्थाएं, स्वयंसेवी संस्थान इत्यादि द्वारा किया जाता है। इसमें ऐसे विषय आते है जिन पर पहले कभी विचार या पाठ्यचर्या नही बनाया गया होता है।

आवश्यकता - वर्तमान समय में समाज को विभिन्न समस्याओं से सामना करना पड़ता है। जिनमें आतंकवाद, आपदा, बाढ, भूकम्प, पर्यावरण सुरक्षा, जल बचाओं, बेटी बचाओ, सामाजिक बुराईयॉ इत्यादि जिन पर सरकार समय समय पर नियम बनाती रहती है। इनको ध्यान में रखकर हम पाठ्यचर्या का निर्माण करते है। आंतकवाद विश्व में कैसंर की तरह बढ़ रहा हैं। बहुत से देश इससे बर्बाद हो गये। जिनका उद्देश्य व्यक्ति को मानसिक गुलाम बनाना व अपना हित साधना होता है।

सामाजिक समस्या से संबधित:- आंतकवाद से लड़ने के लिए समाज में नई विचारधारा का विकास कैसे हो लोग इसका मुकाबला कैसे करे तथा किस प्रकार इसकों रोका जाए तमाम बातों पर अलग अलग देशों में अलग अलग तरह के पाठ्यचर्या का विकास किया जा रहा है। भारत में इसकों सामाजिक विज्ञान में शामिल किया गया जिससे बच्चो, व्यक्तियों में इसके खिलाफ जागरूकता फैलाई जा सके। लोगों को इसके परिणाम के बारे में बताया जा रहा है। जिससे लोग इसका समर्थन ना करे। नई-नई किताबें व लेख समय -समय पर प्रकाशित किए जा रहे। भारत व अमेरिका में इस पर नई प्रशासन प्रणाली व तकनीकी का आविष्कार किया जा रहा है।

आपदा से संबधित:- आपदा से सम्बन्धित पाठ्यचर्या का विकास समय समय पर होता रहता है। भारत में आपदा से सम्बन्धित बहुत सारे मामले जैसे बाढ, सुनामी, सुखा, भूकम्प, इत्यादि होते रहते है। इसलिए भारत में आपदा प्रबन्धन का पाठ्यचर्या लागू करना अति आवश्यक होता है हम सभी यह जानते है कि आपदा जब आती है तो साथ में महामारी भी लाती हैं इसके निदान के लिए लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए। उदा. के रूप में सुनामी आने के बाद छब्म्त्ज् में आपदा प्रबंधन पर पुस्तक निकाली गयी उसके बाद सभी विद्यालयों में आपदा प्रबधन की कक्षाये चलायी गई

तकनीकी से संबधित:- वर्तमान तकनीकी का है इस समय लोग तकनीक का प्रयोग ज्यादा करते है। लोगो में टेक्नोलॉजी के प्रति ज्यादा झुकाव बढा है। इसलिए इसमें लोग रोजगार व पैसा तलाश रहे है इन सभी को ध्यान में रखते हुए लोग ज्यादातर ठण्म्क् डिप्लोमा इत्यादि कि तरफ अग्रसर हो रहे है। हम लोगो की जरूरत के हिसाब से पाठ्यचर्या का निर्माण करते है इसी को सरकार भी मानती है। और लोगो को जिसमें ज्यादा रूचि होती है सरकार उसी को आधार मानकर पाठ्यचर्या का निर्माण करती है।

विशेष शिक्षा:- वर्तमान समय में विशेष शिक्षा में समावेशी शिक्षा पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। पहले समेकित शिक्षा प्रणाली थी जिसमें विकलांग बच्चे व सामान्य बच्चे अलग सरकार ने दोनो को एक साथ पढाने का निर्णय लिया है क्योकिं वर्तमान समय की आवश्यकता समावेशी शिक्षा की तरफ व पाठ्यचर्या बनाने का निर्देश दिया व सभी को एक साथ पढ़ाने का अधिकार प्रदान किया। सब मिलाकर यह कहा जा सकता है कि आवश्यकता ही नये खोज को जन्म देती है जिस प्रकार मनुष्य भुखा होने पर भोजन बनाने की तैयारी करता है। उसी प्रकार सरकार, समाज, समुदाय इत्यादि आवश्यकता पड़ने पर नये नये पाठ्यचर्या का विकास करते है जिससे उनकी सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। हम सभी से सरकार, समुदाय, समाज का निर्माण होता है। इसी कारण किसी आपदा, समस्या पर लोगों की राय ली जाती है।

विकासात्मक प्रश्न:-

प्रश्न 1. पाठ्यचर्या को परिभाषित करे।

प्रश्न 2. आवश्यकता कब पड़ती है?

प्रश्न 3. आवश्यकता आधरित पाठ्यचर्या की विशेषता लिखो।

3.5.2 ज्ञान आधारित पाठ्यचर्या -

ज्ञान आधारित पाठ्यचर्या में ज्ञान को विशेष महत्व दिया जाता है। दूसरे शब्दों में यह पाठ्यचर्या विषयों की अपेक्षा मानव ज्ञान को ज्यादा महत्व देता है। इस पाठ्यचर्या में मानव के दिमाग का ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है। हर व्यक्ति के पास कुछ ना कुछ अलग प्रतिभा होती है जो पारिवारिक, सांस्कृति, सामाजिक एवं विद्यालय परिवेश में सहायक होता है। इसमें बच्चों को विषयों को रटाने से ज्यादा उन्हे प्रयोग के लिए कहा जाता है। इस प्रकार के पाठ्यचर्या में विषयों की संख्या कम होती है। इसके क्रियान्वयन के लिए अच्छे व कुशल अध्यापकों की आवश्यकता होती है। ज्ञान व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके उसे समाज में एक सभ्य व्यक्ति की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है। उसी तरह मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान के द्वारा विकसित होता है। ज्ञान मनुष्य को मजबुत बनाता है। ज्ञान व्यक्ति के लिए जरूरी है। जो सौन्दर्य, विकास, चरित्र निर्माण, आध्यात्मिक विकास को विकसित करने में मदद करता है।

आवश्यकता - ज्ञान आधारित पाठ्यचर्या चिंतन शील शिक्षण प्रक्रिया का प्रमुख अंग है। इसी के माध्यम से बच्चों में ज्ञान का विस्तार किया जा सकता है। हम इसी के द्वारा बच्चों में सोचने की क्षमता समझने की शक्ति तथा क्रियाशीलता का विकास होता है। ज्ञान को इसलिए ज्यादा महत्व दिया जाता है क्योकिं सभी प्रकार के पाठ्यक्रमों की रूप रेखा उनके ज्ञान पर निर्भर करती है। ज्ञान आधारित पाठ्यचर्या का प्रयोग बड़ी कक्षाओं में ज्यादा किया जाता है। ये बच्चे किसी भी बात को आसानी से समझ सकते है। इनको पढ़ाने के लिए ज्यादा मेहनत करने की आवश्यकता नही होती है। इससे बच्चों में पुस्तक के उपर निर्भरता कम होती है। इसी कारण हम इसका प्रयोग ज्यादा करवायें ताकि उनका मानसिक विकास हो सके। अपने विचारो को खुद लिख सके व अच्छी तरह से व्यक्त कर सके।

शोध कार्यो में ज्ञान आधारित पाठ्यचर्या लागू किए जाते है। पाठ्यचर्या कम होता है लिहाजा पढ़ने में आसानी होती है। दर्शन राजनीति इतिहास में ज्ञान आधारित पाठ्यचर्या को ज्यादा महत्व दिया जाता है।

विकासात्मक प्रश्न:-

प्रश्न 1. ज्ञान क्या है?

प्रश्न 2. ज्ञान को पाठ्यचर्या में क्या स्थान दिया गया है।

प्रश्न 3. ज्ञान आधारित पाठ्यचर्या कि क्या विशेषता है

3.5.3 कौशल आधारित पाठ्यचर्या -

कौशल आधारित पाठ्यचर्या इस पाठ्यचर्या को कहते है जिसमें विभिन्न प्रकार की योग्यताओं को प्राथमिकता दी जाती है। इसमें विषयों की अपेक्षा योग्यता पर ध्यान दिया जाता है।

उदा. कताई, बुनाई, कला से सम्बन्धित लकडी के कार्य से सम्बन्धित, मोमबत्ती, अगरबत्ती, इत्यादि हमारें देश में वर्तमान बैसिक शिक्षा में इस प्रकार के पाठ्यचर्या का विशेष महत्व है।

न्ळब्ब् ने सभी विश्वविद्यालयों के लिए बींमेप ठंेमक ब्तमंकवज ैलेजमउ को अनिवार्य कर दिया हैं भारत में 70 विश्व विद्यालयों ने इसे प्रणाली को अपना कर लागु कर दिया है। देश के प्रधानमंत्री एवं मानव संसाधन विकास मंत्री द्वारा इस प्रणाली को कौशल विकास के पाठ्यक्रमों से जोड़ कर रोजगार का सृजन करने की योजना भी बना दी गयी।

राष्ट्रीय कौशल विकास नीति में प्ज्प्ेए प्ज्ब् (औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र) व्यवसायिक स्कूलों, तकनीकी स्कूलों पॉलिटेक्निक व्यवसायिक कॉलेज आदि विभिन्न मंत्रालयों, विभागों द्वारा आयोजित प्रांतीय कौशल विकास के अध्ययन प्रवर्तन, उद्यमों द्वारा औपचारिक तथा अनौपचारिक प्रशिक्षता एवं अन्य प्रकार के प्रशिक्षण , स्वरोजगार ,बेव आधारित अध्ययन तथा दूरस्थ अध्ययन सहित संस्था आधारित कौशल विकास शामिल है।

बारहवी पंचवर्षीय योजना 2012-17 के मसौदा दृष्टिकोण प्रलेख एवं अन्य रिपोर्ट पर आधारित प्राथमिकता के क्षेत्र।

रोजगार क्षेत्र आधारित पाठ्यचर्या:-

1. वस्त्र एवं परिधान।
2. चमडा एवं फुटवियर।
3. रत्न एवं आभूषण।
4. खाद्य प्रसंस्करण।
5. हथकरघा एवं हस्तशिल्प।
6. सौर ऊर्जा।

कौशल आधारित पाठ्यचर्या की आवश्यकता:-

कौशल आधारित पाठ्यचर्या की आवश्यकता हमें इसलिए पड़ती है क्योकिं समाज में बेरोजगारी ने अपने पाँव अच्छी तरह से फैला लिए है ये दोनों तरफ से युवाओं को परेशान कर रही है। बेरोजगारी की वजह से भारत से युवा बाहर देशों में प्रवसन कर रहे है। भारत सरकार हाल के वर्षो में उपरोक्त वर्णित क्षेत्रों में तमाम उपक्रम चलाए है। जिससे ज्यादा से ज्यादा युवा भाग ले तथा रोजगार

प्राप्त कर सकते है। बेरोजगारी को कम करने के लिए युवा को कौशल आधारित पाठ्यचर्या जारी किए जाते है तथा उसमें निपुण बनाया जाता है।

कौशल आधारित पाठ्यचर्या का महत्व:- वर्तमान समय मे बच्चों को स्वरोजगार व रोजगार प्राप्त करने में कठीनाई हो रही है इसलिए बच्चों को रोजगार आधारित पाठ्यचर्या से शिक्षण कार्य कराना अतिआवश्यक हो गया है। इसके माध्यम से बच्चों में उत्साह व धैर्य की भावना का उजागर किया जा रहा है कि उनकों रोजगार मिलेगा अर्थात वो खुद रोजगार का सृजन कर सकेगें।

इसके माध्यम से बच्चों को रोजगार मिला भी है वह अपने को बेरोजगार नही समझते है सम्मान पूर्वक जीवनयापन करते है यह पाठ्यचर्या लोगो को स्वरोजगार व रोजगार प्राप्त करने का साधन है।

प्रश्न 1. कौशल क्या है? 50 शब्दों में व्याख्या करे।

प्रश्न 2. कौशल आधारित पाठ्यचर्या से क्या तात्पर्य है?

प्रश्न 3. बेरोजगारी क्या है?

3.5.4 छुपा हुआ पाठ्यचर्या

यह एक ऐसा पाठ्यचर्या है जिसका प्रयोग शिक्षक व छात्रो के बीच में ज्यादा होता है। यह कक्षा व विद्यालय के परिवेश में ज्यादा मिलता है। इसके अन्तर्गत व्यवहार, योग्यता, कुशलता व परिपक्वता को बताया जाता है। बच्चों को सामाजिक, राष्ट्रीय तथा मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार किया जाता है। यह विद्यालय परिवेश में बच्चों के व्यवहार, क्रियाकलाप को बिना बताये आंकलन किया जाता है यह एक ऐसा पाठ्यचर्या है जो प्रवृति, ज्ञान व्यवहार आदि जो हमारे जीवन में अप्रत्यक्ष रूप से प्रयोग होते है। यह पाठ्यचर्या शिक्षा व्यवस्था में विद्यालय में सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनो रूपों में देखने को मिलता है। शिक्षक इसे भलिं भांति परिचित होते है। इस पाठ्यचर्या को आसानी से पहचाना नही जा सकता है इसमें निम्न तत्व पाये जाते है अध्यापक, छात्र, समाज, ज्ञान, जागरूकता इत्यादि।

आवश्यकता - जब शिक्षक जागरूक होता है। तो वह दिन की नई खबर जो उसके पाठ्यचर्या से सम्बंधित होती है या बच्चों से सम्बन्धित होती है। या समाज से सम्बन्धित होती है। वह बच्चों को बताता है। इसमें बच्चों को हमेशा नई नई विषय वस्तु से अवगत कराना पड़ता है जो उनके मुख्य पा्यक्रम में नही होता है। छुपे हुए पाठ्यचर्या में शिक्षक बच्चों को प्रतिदिन की घटना से अवगत कराते है तथा बच्चे विद्यालय परिवेश में होने वाले कार्यक्रमों में भाग लेकर कही ना कही मुख्य पाठ्यचर्या को पूरा करते है कार्यक्रमों से जो सीख मिलती है उसे ही हम छुपा पाठ्यचर्या में लाते है। उदा. के लिए यदि बच्चें प्रार्थना में भाग लेते है तो उनको छुपे हुए पाठ्यचर्या के द्वारा शिक्षा मिलती है। इसको हमें अलग से पाठ्यचर्या में शामिल करने की जरूरत नही रहती है। बच्चे रोजाना स्वतः

यह ज्ञान ग्रहण करते है कि किस प्रकार प्रार्थना करनी है। कैसे खड़ा होना है कैसे कक्षा में बैठना होता है। शिक्षक से बात कैसे किया जाता है। सहपाठियां े से कैसे बात व्यवहार किया जाता है। उपर्युक्त तमाम बातों बच्चों के मुख्य पाठ्यचर्या में नही शामिल की जाती है। अतः उन्हे अलग से बताना पडता हैं इसलिए इन सब क्रिया कलापों को छुपा हुआ पाठ्यचर्या के अन्तर्गत माना जाता है। बच्चे विद्यालय परिवेश में बहुत कुछ सीखते है जिनसें उनका सामाजिक व मानसिक विकास होता है। इसके अलावा विद्यालय के परिवेश के बाहर भी कई कार्य ऐसे होते है। जो छुपा हुआ पाठ्यचर्या में आता है। बच्चों में सुबह जल्दी सोकर उठना, माता-पिता का सम्मान करना आस-पड़ोस के साथ अच्छा व्यवहार करना, दोस्तों से अच्छें व्यवहार भी छुपा पाठ्यचर्या के अन्तर्गत आता है। सब मिलाकर यह कहा जा सकता है। कि वह पाठ्यचर्या जो विद्यालय के चारदीवारी के अंदर व बाहर दोनों तरफ पााया जाता है। छुपा हुआ पाठ्यचर्या होता है। इस पाठ्यचर्या की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह लिखित व एक रूप में नही पाया जाता है यह कक्षा - कक्ष में नही पढाया जाता यह अपने आप स्वतः होता रहता है इसमें बच्चे व शिक्षक तथा अभिभावक इत्यादि शामिल रहते है। इनकों आपस में क्रिया ही इस पाठ्यचर्या को पहचान दिलाती है।

विकासात्मक प्रश्नः-

प्रश्न 1. छुपा हुआ पाठ्यचर्या क्या है 50 शब्दों में व्याख्या करे?

प्रश्न 2. बालक किन स्थानों पर इस पाठ्यचर्या का प्रयोग किया जाता है?

प्रश्न 3. छुपा हुआ पाठ्यचर्या बालकों के लिए कितना महत्वपूर्ण है?

3.5.5.क्रियात्मक पाठ्यचर्या -

यह वह पाठ्यचर्या है जिसमें विभिन्न कार्यो को विशेष स्थान दिया जाता है क्रियात्मक पाठ्यचर्या के विषयों कि अपेक्षा कार्यो पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। क्रियात्मक विकास एक जीवन-पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति का विकास करने में मुख्य तत्व है।

जॉन इयूवी के मतानुसार - कार्य केन्द्रित पाठ्यचर्या द्वारा बालक समाजपयोगी कार्यो को करने मं े रूचि लेगे। जिससें व्यक्तित्व का सर्वागींण विकास होना निश्चित है।

कुछ लोगों का मत है ‘‘पाठ्यचर्या विभिन्न क्रिया कलापों का वह समुचय है जो कि मानवता की अभिव्यक्ति है तथा महान है और पूरे विश्व में स्थायी महत्व है‘‘curr|culum as var|ous forms of act|v|ty that an grand express|on of human sp|r|t and that as of gates and most permanent |gn|t|ons to the world w|de”

आवश्यकता - क्रिया प्रधान पाठ्यचर्या के अनुसार छात्र को स्वयं को विभिन्न क्रियाओं में सम्मलित करके सीखने का अवसर मिलना चाहिए ये क्रियाएं इच्छित और उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए इसमे जीवन

के व्यवहारिक पक्ष पर बल दिया जाता है। करके सीखने तथा वास्तविक जीवन से सम्बन्धित करके सीखने पर बल दिया जाता है। प्रयोगशाला और क्षेत्र से संबधित कार्य ज्यादा महत्वपूर्ण होते है। क्रिया प्रधान पाठ्यचर्या में निम्न क्रियाएं हो सकती है। इस डेस्क बनाना, बॉक्स का निर्माण करना, घरोन्दे बनाना इत्यादि। क्रियाओं पर ज्यादा प्रकाश डाला जाता है जो पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होता है।

इस प्रकार कि क्रियाएं बच्चों में कौशलों का विकास करती है बच्चें समुदाय में भरोसा करते है तथा उनके अनुसार नये नये कार्य करते है। बच्चे आवश्यकता के अनुसार कार्य सीखते है। वे बॉक्स बनाकर सामान रखना, बेचना, इत्यादि कार्य कर सकते है। जिससे आगे चलकर वे आत्म निर्भर बन सकेगे।

विकासात्मक प्रश्नः-

प्रश्न 1. क्रियात्मक पाठ्यचर्या क्या है?

प्रश्न 2. क्रियात्मक पाठ्यचर्या से बच्चे में कौन-कौन से गुण का विकास होता है।

3.6 सारांश:-

पाठ्यचर्या के प्रकारों का अध्ययन करने पर पता चलता है कि सभी पाठ्यचर्या कहीं ना कहीं सभी प्रकार के विकलांगता व सामान्य बच्चों की आवश्यकता, क्षमता व रूचि के उपर निर्भर है। बच्चें किस प्रकार के पाठ्यचर्या में ज्यादा प्रभावशाली मानते यह उनके वातावरण तथा विद्यालयी परिवेश पर निर्भर करता है। हम सभी लोग जो भी कार्य करते है चाहे वह विद्यालय परिवेश में हो या परिवेश के बाहर सभी किसी ना किसी पाठ्यचर्या के अन्तर्गत आते है। विद्यालय में मुख्य पाठ्यचर्या के अलावा छुपा पाठ्यचर्या व अन्य पाठ्यचर्या जो शिक्षण कार्य में प्रयोग होते है अथवा नही होते सभी का आंकलन व मूल्यांकन किया जाता हैं

वर्तमान समय में बच्चों को यह बताया जाता है कि भविष्य में कौन कौनसी परेशानियॉ आ सकती है। कौन सी आपदा का सामना करना पड़ सकता है। दूसरे तरफ विषयो की अपेक्षा ज्ञान को प्राथमिकता दी जाती है। बच्चों को सोचने, समझने तथा वर्जन के योग्य बनाया जाता है। बच्चों को सामाजिक रूप से सक्षम तथा आर्थिक रूप से सम्पन्न बनाया जाता है।

पाठ्यचर्या मे कुछ वर्तमान जरूरतों को ध्यान में रखकर भी बच्चों को पढाया जाता है इसमें वे समस्याएँ शामिल है जो भी सरकार के लिए एक अहम् मुद्दा है जैसे बाढ, भूकम्प आदि। बालकों को इन सबसें बचने के उपाय भी पाठ्यचर्या में शामिल किये जाते है। इसके अन्तर्गत विषयों से हटकर ज्ञान को प्राथमिकता दी जाती है। जिसमें सांस्कृतिक, पारिवारिक या विद्यालय परिवेश में काम आने वाला ज्ञान बालको को दिया जाता है।

कुछ पाठ्यचर्या ऐसे होते है जिनमें विषयों की अपेक्षा क्रियाकलापों का अधिक महत्व दिया जाता है। जिसके अन्तर्गत बालकों में समाजोपयोगी कार्यो में रूचि लेने की ललक उत्पन्न की जाती है।

इसके अलावा पाठ्यचर्या में बच्चों में कौशलों का भी निर्माण करने के विषय शामिल होते है। जिसमें बच्चों को कौशल निर्माण जैसे:- चॉक बनाना, बुनाई, लकडी के सजावटी आईटम, मोमबती बनाना इत्यादि।

कुछ ऐसे विशेष विषय होते है जो कि बालको व शिक्षकों के मध्य होते है जिनमें व्यवहार, योग्यता, कुशलता व परिपक्वता का स्तर बालकों में बढाया जाता है। यह छुपा पाठ्यचर्या कहलाता है। इसमें सामाजिक, राष्ट्रीय, तथा मनोवैज्ञानिक रूप से बालको को तैयार किया जाता है। इसमें प्रवृति, ज्ञान व्यवहार शामिल होता है।

3.7 निबंन्धात्मक प्रश्न:-

प्रश्न 1. पाठ्यचर्या क्या आवश्यक है।

प्रश्न 2. आवश्यकता आधारित पाठ्यचर्या का वर्णन करे।

प्रश्न 3. ज्ञान आधारित पाठ्यचर्या कब उपयोग में लाया जाता है व क्यो?

प्रश्न 4. क्रिया प्रधान पाठ्यचर्या की मुख्य विशेषता क्या है?

प्रश्न 5. कौशलों से तात्पर्य क्या है?

प्रश्न 6. छुपा पाठ्यचर्या विद्यालय परिवेश के बाहर कैसे प्रभावित करता है।

3.8 संदर्भ ग्रंथ सूची

10. उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय 1999, दृष्टि बाधितों का शैक्षिक परिदृश्य (पाठ्यचर्या अनुकूलन और विनिमय, शैक्षिक नियोजन और प्रबंधन, अनुसंधान और पाठ्यचर्या रूपरेखा।)
11. इंटरनेट सेवा
12. शर्मा, आर.ए. पाठ्यचर्या विकास
13. दुवे कुमार सुदीप दुष्टिवाधा और आवश्यक कौशल
14. NCERT (2005) Normal Carrıculum framework, natıonal councıl of educatıonal research and traınıng, New Delhı.
15. AFB-Amerıcan foundatıon for the Blınd Expandıng possıbılıtıes for people wıth vısıon loss.
16. Natıonal federatıon of The Blınd.

17. डॉ. जोसेफ आर. ए. विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास
18. शिक्षक-प्रशिक्षण लेखमाला आल इण्डिया कन्फेडरेशन ऑफ दी ब्लांइड।

इकाई-4 पाठ्यचर्या- नियोजन, क्रियान्वयन, मुल्यांकन(CurrIculum PlanIng, ImplementatIon and evaluatIon)

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्द्देश्य

4.3 पाठ्यचर्या (नियोजन)

4.4 पाठ्यचर्या नियोजन की आवश्यकता

- 4.4.1. शिक्षार्थी की विकासात्मक आवश्यकता है।
- 4.4.2. सामाजिक आवश्यकता
- 4.4.3. आर्थिक आवश्यकता
- 4.4.4 शिक्षकों की पृष्ठभूमि विशेषताएं

4.5 विभिन्न स्तरो पर पाठ्यचर्या नियोजन।

- 4.5.1 राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन।
- 4.5.2 राज्य स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन।
- 4.5.3 क्षेत्र स्तर पर।

4.6 पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन

4.7 पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

- 4.7.1 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता
- 4.7.2 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार

4.8 शैक्षिक प्रभाव

- 4.8.1 पाठ्यचर्या नियोजन का शैक्षिक प्रभाव।
- 4.8.2 पाठ्यचर्या मूल्यांकन का शैक्षिक प्रभाव

4.9 इकाई सारांश।

4.10 अभ्यास प्रश्न।

4.11 सदंर्भ ग्रंथ एवं कुछ उपयोगी पुस्तके।

4.12 निबंधात्मक प्रश्न।

4.1 प्रस्तावना

पाठ्यचर्या नियोजन से तात्पर्य है कि विद्यालय में संचित अनुभवों को आगें बढाने चयन करने एवं नियोजित करने वाली संगठित संरचना या संगठन से है। जिसे शिक्षक विद्यालय एवंकक्षा में अधिगम क्रियाओं को प्रदान करने हेतु उनका अनुसरण करता है। नियोजन शिक्षकों को इस योग्य बनाये जो विद्यार्थियों के विषय समूहों के लिए अनुभवों को विकसित कर सकें।प्रथम ईकाई में अपने पाठ्यचर्या के प्रत्यय एवं संबधित बिन्दुओं पर अध्ययन किया। आपने पाठ्यचर्या की आवश्यकता आधार, महत्व, विभिन्न स्तर आदि पर अध्ययन किया। प्रस्तुत ईकाई प्रथम बालक के विषय वस्तु पर आधारित है। इस ईकाई में आप पाठ्यचर्या नियोजन के विषय में सीखेगें।

हमारा यह विश्वास है कि शिक्षा हेतु समाज एवं व्यक्ति पर अपेक्षित प्रभाव डालने हेतु प्रभावशाली पाठ्यचर्या आवश्यक है। भारत के विद्यालयों में वर्तमान समय में बहुत सी अपूर्णता एवं कमियां पाई जाती है। हमें इन कमियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। अतः पाठ्यचर्या को आवश्यकता पर आधारित होना चाहिए।

4.2 उद्देश्य -

इस ईकाई के अध्ययन के पश्चात आप जानने योग्य हो जायेगे।

1. पाठ्यचर्या नियोजन का अर्थ एवं मान्यता को।
2. विभिन्न स्तरों पर पाठ्यचर्या नियोजन की व्याख्या करने योग्य।
3. पाठ्यचर्या विकास में नियोजन की भूमिका।
4. आवश्यकता व छुपा हुआ पाठ्यचर्या स्तरों के बारे में क्या है?पाठ्यचर्या नियोजन के विभिन्न स्तरों के बारे में।
5. पाठ्यचर्या नियोजन के द्वारा बच्चें के विद्यालय घर पर तथा समाज में कार्यो का नियोजन करने की क्षमता का विकास होगा।
6. समाज में अच्छे पाठ्यचर्या विकसित होगे जिससें समाज का भला होगा।

4.3 पाठ्यचर्या नियोजन-

पाठ्यचर्या नियोजन अथवा अभिकल्प से हमारा तात्पर्य है ''विद्यालय में शिक्षक अनुभवों को आगे बढाने चयन करने एवं नियोजित करने वाली संगठित संरचनों से है। जिसे शिक्षक विद्यालय में अधिगम क्रियाओं को प्रदान करने हेतु उसका अनुसरण करता है।''

पाठ्यचर्या नियोजन करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए:-

- नियोजन ऐसा होना चाहिए जो इच्छित परिणाम की उपलब्धि हेतु आवश्यक अधिगम अनुभवों के सभी प्रकार को प्रोत्साहित एवं सुसाध्य करें।
- नियोजन शिक्षकों को इस योग्य बनाएं जो शिक्षार्थियों के विशेष समूह के लिए अर्थ पूर्ण शैक्षिक अनुभवों को विकसित कर सके।
- नियोजन ऐसा होना चाहिए जिससे शिक्षकगण अधिगम क्रियाओं के निर्देशन हेतु अधिगम सिद्वान्तों का प्रयोग कर सकें।
- नियोजन छात्र के विकासात्मक आवश्यकताओं के अनुसरण निर्मित होना चाहिए।
- नियोजन इस ढंग से तैयार किया जाना चाहिए कि अधिक अनुभवों में एक निरन्तरता बनी रहे।

4.4 पाठ्यचर्या नियोजन की आवश्यकताः-

i. शिक्षार्थी की विकासात्मक आवश्यकताएं
ii. सामाजिक आवश्यकता।
iii. आर्थिक आवश्यकता।
iv. शिक्षकों की पृष्ठभूमि विशेषताएं

4.4.1 विद्यार्थी की विकासात्मक आवश्यकता:-

पाठ्यचर्या की अभिकल्प बनाते समय विद्यार्थियों की विकासात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखना बहुत ही आवश्यक हो जाता है क्योंकि एक बालक का शारीरिक विकास विभिन्न मनोवैज्ञानिको के मत के अनुसार कई स्तरो में होकर गुजरता है तथा बालक के विकास का प्रत्येक स्तर उस बालक को अलग-अलग तरीके से सांसारिक वस्तुओ की पहचान व उनका अधिगम करवाता है।

अतः एवं बालक का विकास क्रम भिन्न-भिन्न स्तरों में भिन्न-भिन्न प्रकार से बालको को सांसारिक वस्तुओं की पहचान व अधिगम करवाता है। जीन पियाजे जो कि एक मनौवैज्ञानिक थे उन्होने बालक के विकास क्रम के स्तर को चार भागों में विभाजित किया व उनके अनुसार बालक प्रत्येक स्तर पर भिन्न-भिन्न तरीके से सांसांरिक वस्तुओं की पहचान व अधिगम करते हुए पाया गया। इनके अनुसार एक बच्चा संवेदी नामक स्तर से शुरू होकर अभूर्त या औपचारिक संक्रियात्मक स्तर के प्रत्येक स्तर के अन्तर्गत निम्न प्रकार से सांसारिक वस्तुओ की पहचान व उनका अधिगम करते हुए पाया गया संवेदी नामक अवस्था के अन्तर्गत जहाँ बालक प्रत्येक वस्तु की पहचान अपनी ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से करता है। प्रत्येक वस्तु को स्पर्श कर उसे अपने मुंह में लेकर उस वस्तु की पहचान व अधिगम करते हुए देखा गया वही पूर्व सांक्रियात्मक अवस्था में जब उसका थोडा विकास

हुआ तो वह सभी निर्जीव वस्तुओ को सजीव वस्तुए मानता है व उनके अन्तर्गत दो अलग-अलग वस्तुओं मापना में विभेद कर पाना मुश्किल हो जाता है वह सभी पुरूषो को पाया व सभी स्त्रियों को अपनी माँ के रूप में पहचानने की चेष्टा करता है। परन्तु किसी अन्य द्वारा इनमें विभेद करना सिखाया जाता है।

अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था में वह मूर्त वस्तुओं को देखकर ही उनकी पहचान कर सकने में सफल होता है। परन्तु सामने से हटा दिए जाने पर विभेद करना मुश्किल हो जाता है। अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था में बालक बड़ा हो जाता है व चिन्तन मनन करना प्रारम्भ कर देता है। इस प्रकार पियाजे ने बालक के संज्ञानात्मक स्तर को चार भांगों में विभाजित कर प्रत्येक स्तर में बालक की संज्ञानात्मक स्त्रोत को भिन्न-भिन्न तरीके से विकसित होते देखा। ब्रूनर जो कि एक मनौवैज्ञानिक थे उन्होने भी बालक के संज्ञानात्मक स्तर को तीन भागो को बांटकर पाया कि बालक प्रत्येक स्तर पर भिन्न-भिन्न तरीके से संज्ञान करता है।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है। छात्रो की संज्ञानात्मक विकास में विद्यार्थियों की विकासात्मक आवश्यकताओं की अहम् भुमिका होती है। जिनके अभाव में पाठ्यचर्या नियोजन की सफल क्रियान्वयन नही हो सकता है। अतः विद्यार्थियों की विकासात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है।

4.4.2 सामाजिक आवश्यक्ता:-

पाठ्यचर्या नियोजन का अभिकल्प बनाते समय सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखना आवश्यक होता है। विभिन्न समाज शास्त्री व मनोवैज्ञानिको के अनुसार मनुष्य समाज का अहम् हिस्सा है जो समाज में रहकर ही उसके साथ सांमाजस्य बैठाते हुए अपने जीवन का निर्वाह करता है।

हम जिस समाज रूपी संसार में रहते है। वह हमारे विद्यालय की अपेक्षा विस्तृत एवं विशाल है अतः विद्यार्थियों हेतु जो भी पाठ्यचर्या नियोजित किया जा रहा है वह बालक को समाज के साथ सं ामजस्य बिठाते हुए समाज में एक उन्नत नागरिक के रूप में स्वयं का अस्तित्व बनाए रखे व समाज के उत्थान हेतु प्रयासरत रहे यह सब तभी संभव है जब उसे शिक्षा जो भी प्रदान की जा रही है वह उस बालक को समाज से जोड़े रखे ।

अतः पाठ्यचर्या का नियोजन करते समय वर्तमान समाज की परिस्थितियों व भविष्य में समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए ताकि बालकों को अपने समाज की वर्तमान समय की परिस्थितियो के बारे में जानकारी हो सके व अपने वाली समाज की आवश्यकताओं को जान सके क्योकि प्रत्येक बालक के विकास की इकाई परिवार के बाद उसका समाज होता है जो उसके विकास मे सहायक होता है उसकी सकारात्मक सोच को बढावा प्रदान करता है उसके हर कार्यो को सराहनीय व प्रशंसनीय का दर्जा देता है। सबसे ज्यादा आवश्यकता हमे

हमारे समाज में फैली बुराइयों, के बारे में अवगत होकर उनके पतन हेतु प्रयास करने योग्य विद्यार्थियों को तैयार करना शिक्षा के माध्यम से ही हो सकता है।

हमे उन सामाजिक दबावो से परिचित रहना चाहिए जो शिक्षा तंत्र को प्रत्यक्ष रूप प्रभावित करते है क्योकिं वर्तमान में भी ऐसे कई कारक समाज में देखने को मिलते है जो शिक्षा तंत्र को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते है। पाठ्यचर्या नियोजन करते समय समाज में व्याप्त बुराईयो अच्छाईयो को इस तरीके से सामने लाया जाए कि वह किसी भी समाज की किसी भी प्रकार से उनके मनोभावो को ठेस न पहुचा सके व उनके अन्दर जागरूकता फैले व वे स्वयं अपने समाज के उत्थान हेतु प्रयास करे। अगर ऐसा करना सम्भव हो सके तो पाठ्यचर्या नियोजन की सफल क्रियान्वति व आवश्यकताओं उसी आधारित पाठ्यचर्या की संज्ञा प्रदान की जा सकती है क्योंकि पाठ्यचर्या नियोजन तभी सफल माना जा सकता है जब वह बालको को वर्तमान व भविष्य की परिस्थितियो से अवगत कराए ताकि समय रहते उनके सुधारात्मक उपाय खोजे जा सके।

4.4.3 आर्थिक आवश्यकताएं :-

आर्थिक आवश्यकताओं को वितिय आवश्यकताओं के रूप में भी देखा जा सकता है आर्थिक आवश्यकताए वे आवश्यकताए होती है जो बालक की शारीरिक, भौतिक एवं अन्य मूलभूत आवश्यकताओं के रूप में देखी जा सकती है।

एक नियोजनकर्त्ता को पाठ्यचर्या नियोजन करते समय बालक की आर्थिक आवश्यकताओं जैसे भौतिक, सुविधाए, शिक्षण सामग्री शिक्षकगण ये आधारभूत आवश्यकताएं सरकार, निजी संस्थाए, समुदाय आदि के द्वारा प्रदान की जाती है। का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि प्रत्येक छात्र आर्थिक रूप से सम्पन्न नही होता है। कई छात्र ऐसे होते है जो शिक्षा से सम्बन्धित सामग्री मुश्किल से जुटा पाते है व कुछ विद्यार्थी आर्थिक रूप से सम्पन्न होने के कारण असानीपूर्व शिक्षा से सम्बन्धित सामग्री जुटा पाने में सक्षम होते है। पाठ्यचर्या नियोजन किसी विशेष वर्ग विशेष समुदाय या विशेष छात्र वर्ग के लोगों हेतु ही तैयार नही किया जाता वरन् पाठ्यचर्या नियोजन सभी वर्ग के छात्रो हे ेतु तैयार किया जाता है जिसका लभ सभी बालक उठा सके व सभी वर्ग के बालको को शिक्षा से जोड़ा जा सके तथा शिक्षा से सम्बन्धित सामग्री प्रत्येक छात्र की पहुंच में हो जिसे वह आसानी पूर्वक क्रय कर सके वर्तमान समय में अगर देखा जाए तो शिक्षा इतनी मंहगी हो गई है कि प्रत्येक छात्र शिक्षा के उस पड़ाव से वंछित रह गया है शिक्षा से सम्बन्धित सामग्री शिक्षक गणों का वेतन व भौतिक सुविधाए इत्यादि सभी बालको की पहुंच से दूर हो गए है।

इसमें सुधार लाने हेतु समय-समय पर सरकारी नीतियो को शुरू किया जाता है ताकि शिक्षा को प्रत्येक बालक की पहुंच के अन्तर्गत बनाया जा सके व प्रत्येक बालक का शिक्षा से जुडाव हो इस हेतु कई सरकारी विद्यालय खोले गए उनको उच्च प्राथमिक स्तर से माध्यमिक व माध्यमिक को उच्च माध्यमिक में तब्दील किया गया।

अतः निष्कर्ष यह निकलता है कि पाठ्यचर्या नियोजन बालको की आर्थिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर प्रत्येक बालको तक सुलभ हो होना चाहिए क्योंकि अगर शिक्षा सभी के लिए सुलभ होगी तभी पाठ्यचर्या नियोजन की सफल क्रियान्वित हो सकेगी।

4.4.4. शिक्षक की पृष्ठ भूमि :-

पाठ्यचर्या को आधार प्रदान कर अगर उस पाठ्यचर्या को कक्षा कक्ष में शिक्षक द्वारा सही रूप से अधिगम न करवाया जाए उस पाठ्यचर्या की सही रूप से व्याख्या न की जाए तो पाठ्यचर्या की क्रियान्वति को असफल माना जाता है। क्योकिं पाठ्यचर्या नियोजन करते समय यदि सभी स्तरो को ध्यान में रखा जाए बालको हेतु रूचिकर बनाया जाए उसके बावजूद भी अगर कक्षा कक्ष में एक शिक्षक उस पाठ्यचर्या की सही-सही व्याख्या कर बालको को अधिगम करवाने में असफल रहता है। तो वह सिर्फ नाममात्र का पाठ्यचर्या रह जाता है। उस पाठ्यचर्या को शिक्षा में लागु तो कर दिया जाता है मगर उसका सही प्रयोग व उपयोग नही किया जाता है।

अतः पाठ्यचर्या को बालकों के अधिगम योग्य बनाने हेतु एक शिक्षक को कक्षा कक्ष में शिक्षण प्रक्रिया के दौरान उसका सही-सही रूप से व्याख्यान किया जाना आवश्यक है व एक सफल पाठ्यचर्या हेतु शिक्षक व छात्रों की सक्रिय सहभागिता भी आवश्यक है। क्योंकि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अगर एक पक्ष भी निष्क्रिय होता है तो अधिगम के वातावरण को रूचिकर नही बनाया जा सकता है।

एक शिक्षक का सबसे महत्वपूर्ण व आवश्यक कार्य छात्रों को शिक्षा प्रदान करना होता है। और एक शिक्षक कक्षाकक्ष में छात्रों के समक्ष पाठ्यचर्या की सही-सही व्याख्या करने व अधिगम वातावरण को रूचिकर बनाने की भूमिका अदा करता है। किसी भी शैक्षिक संस्थान में शिक्षकों के कार्या े में अनदेखी नही की जा सकती अतः पाठ्यचर्या नियोजन के समय शिक्षकों की पाठ्यचर्या पर अवश्य ध्यान देना चाहिए क्यां ेकि एक शिक्षक ही पाठ्यचर्या को संजीव रूप प्रदान करता है। इसमें जीवन्तता लाता है। उसे रूचिकर बनाता है व सभी बालको के अधिगम योग्य बनाता है।

अतः पाठ्यचर्या की सजीवता को बनाए रखने हेतु शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है। शिक्षकों की पृष्ठभूमि सुदृढ व अपने कार्यो के प्रति निष्ठा, कर्त्तव्यों का पालन करने वाले के रूप में होनी चाहिए।

अतः पाठ्यचर्या नियोजन के समय शिक्षकों की पृष्ठभूमि पर अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिए।

4.5 पाठ्यचर्या नियोजन हेतु विचार-विमर्श:-

विभिन्न स्तरों पर पाठ्यचर्या नियोजन-पाठ्यचर्या नियोजन वह क्रिया है जो शिक्षा और अधिगम के नियोजन से होता है।

i. राष्ट्रीय स्तर पर।
ii. राज्य स्तर पर।
iii. क्षेत्रीय स्तर पर।

4.5.1. राष्ट्रीय स्तर पर-

राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन में सम्मिलित किया जाता है। हमें इसमें विभिन्न क्षेत्र के विशेषज्ञों के एक समूह की आवश्यकता पडती है जैसेंपाठ्यचर्या नियोजन विषय वस्तु दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान समाजशास्त्र, जनसंचार माध्यम इत्यादि। सभी विशेषज्ञ आपस में विचार विमर्श करके सम्पूर्ण राष्ट्र में लागू हो सकने योग्य पाठ्यचर्या को विकसित करते है।

राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन में निम्नलिखित क्रियाएं समाहित होती हैः-

- विषय वस्तु की पहचान करना।
- विषय के प्रस्तुतीकरण के क्रम के विषय में निर्णय लेना।
- विषय के प्रस्तुतीकरण के क्रम।
- शिक्षक और शिक्षार्थी द्वारा की जाने वाली क्रियाओं का निर्माण ।
- आगे के अध्ययन के लिए सहायक सामग्री को सूचित करना।
- शिक्षार्थी के गति स्तर को जानने हेतु जॉच प्रक्रियां के विषय में निर्णय लेना।

4.5.2.राज्य स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन-

राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन में सम्मिलित किया जाते है वे उस पाठ्यक्रय का निर्माण और सिफारिश करते है जो पूर्ण राज्य के उपयुक्त हो। राज्य अपनी आवश्यकता को ध्यान में रखकर पाठ्यचर्या का निर्माण करता है और पूरे राज्य में लागू करता है।

राज्य स्तरीय पाठ्यचर्या और राष्ट्र स्तरीय पाठ्यचर्या में अलग अलग विभेद पाये जाते है। राज्य अपनी संस्कृति क्षेत्रीय प्रभाव को पाठ्यचर्यामें शामिल करता है।

4.5.3.क्षेत्रीय स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन-

क्षेत्रीय स्तर का तात्पर्य जिला विद्यालय शिक्षक कक्षा स्तर पर पाठ्यचर्या का नियोजन किया जाता है। ऐसे पाठ्यचर्या का नियोजन करने के लिए उपयुक्त सभी को शामिल करना पडता हैं सभी से सुझाव लेकर पाठ्यचर्या को शिक्षार्थी केन्द्रित पाठ्यचर्या बनाया जाता है।

शिक्षा आयोग (1964-64) ने क्षेत्रीय स्तर पर विकसित किए गये पाठ्यचर्या में बताया है कि एक राज्य स्तरीय पाठ्यचर्या का निर्माण इस प्रकार करें कि वह राज्य की विभिन्न प्रकार की संस्थाओं की औसत आवश्यकताओं की पूर्ति कर सका यह कमजोर संस्थाओं की क्षमताओं से परे

होता है। तथा अच्छी संस्थाओं के लिए अप्रर्याप्त इसका हल इस पर निर्भर करता है कि इस पर पाठ्यचर्या बनाया जाए जो उनकी आवश्यकताओं पर आधारित हो।

क्षेत्रीय स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है:-

1. जिला स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन।
2. विद्यालय स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन।
3. शिक्षक स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन
4. कक्षा कक्ष स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन

जिला स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन-

इस प्रकार के नियोजन में जिला स्तर के व्यक्तिगण शामिल किए जाते है। ये व्यक्ति भिन्न - भिन्न क्षेत्रों से आते है। जिले की आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यचर्या में क्षेत्रीय इतिहास आर्थिक विकास, क्षेत्रीय संस्कृति, क्षेत्रीय भूगोल को उचित स्थान दिया जाता हैं। इस प्रकार के नियोजन में जिले की सम्पूर्ण समस्याओं को समाहित किया जाता है।

इस नियोजन में शिक्षकों, छात्रों, विद्यालयों को शामिल किया जाता है। इसमें सभी पहलुओं को शमिल किया जाता है। जिला स्तर पर व्याप्त अशिक्षा को कम करने के लिए नियोजन कराया जाता है। जिला अधिकारी द्वारा सभी प्रकार के नियोजन संबंधी कार्य कराये जाते है।

बैसिक शिक्षा अधिकारी जिला अधिकारी की सहायता करता है उसके नीचे प्रधानाचार्य शिक्षकगण समुदाय के वरिष्ठ नागरिक इत्यादि सहायता करते है। जिला स्तर पर नियोजन में उस विशेष जिले की क्षमता, विशेषता कमी तथा सम्पन्नता को ध्यान में रखना चाहिए। उसी को देखकर वे अपना कार्य करते है। तथा जिला प्रशासन सभी पहलुओं पर ध्यान देते हुए पाठ्यचर्या नियोजन करता है। जिससें उस जिले की शैक्षिक समस्या का समाधान निकाल सकें।

विद्यालय स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन-

विद्यालय स्तर पर नियोजन में किसी विशेष विद्यालय के छात्रों, सलाहकारों प्रशासकोतथा अभिभावको को सम्मिलित किया जाता है व पाठयक्रम नियोजन हेतु इकट्ठा होते है। इसमें विद्यालय स्तर की आवश्यकताओं पर बल दिया जाता है। यह समूह शिक्षार्थी के सामाजिक एवं व्यक्तिगत अनुभवो का अबोध कर अधिक वास्तविक पाठ्यचर्या का विकास करता है।

विद्यालय स्तर पर नियोजन मे भवन पाठ्यचर्या बच्चे इत्यादि विषयों को शामिल किया जाता है। अभिभावको को शामिल कर जागरूक किया जाता है। जिससे वे घर पर अपने बच्चो को सम्भाल सके व उनका सहयोग कर सके। विद्यालय शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण इकाई होती है इसे एक छोटा समाज भी कहा जाता है इसलिए विद्यालय स्तर पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

शिक्षक स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन:-

इस प्रकार के नियोजन में पाठ्यचर्या को भागों में विभाजित किया जाता है शिक्षको के समूह द्वारा नियोजित पाठ्यचर्या शिक्षक समूह पाठ्यचर्या नियोजन में विभिन्न विषयों के शिक्षको का समूह होता है। इस प्रकार के पाठ्यचर्या को अन्तर विषयक नियोजन कहा जा सकता है। एक शिक्षक द्वारा नियोजित पाठ्यचर्या में शिक्षक अकेले ही शिक्षक के उद्देश्यों का निधारिक करता है। वह विषयों में स्वयं ही निर्णय लेता है तथा दैनिक या साप्ताहिक आधार पर पाठ्यचर्या का नियोजन करता है।

कभी-कभी शिक्षक विद्यालय की, समाज की,व बच्चो की आवश्यक्ता को ध्यान में रखकर भी पाठ्यचर्या का नियोजन करते है।

कक्षा कक्ष स्तर के पाठ्यचर्या नियोजन:-

इस नियोजन में शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनो भाग लेते है। वे इस बात का निर्णय करते है कि कार्य को कैसे, कहां, कब, क्यों कौन सम्पादित करेगा। इस स्तर पर हम लोग कक्षा की गतिविधियां को देखते है उसमें होने वाले क्रिया कलाप को शामिल किया जाता है। शिक्षक अपने विचारो व तकनीकि ज्ञान की सहायता से विद्यालय को कक्षा कक्ष का नियोजन करते है। कक्षा में होने वाली गतिविधियों, शिक्षक कार्य परियोजनो कार्य, परिक्षण, परीक्षा आदि को कब करना है ? कैसे करना है ? कहां करना है ? तमाम बातों पर ध्यान दिया जाता है।

बच्चे भी इस प्रक्रिया में भाग लेते है उनको कब कक्षाएं शुरू करनी चाहिए व बंद कब होगा तथा विद्यालय वातावरण का पालन करना चाहिए तभी नियोजन सफल माना जाता है।

4.6 पाठ्यचर्या नियोजन का शैक्षिक प्रभाव:-

पाठ्यचर्या नियोजन में हम पाठ्यचर्या को अलग-अलग पहलुओं से जांचते है अर्थात उसका पूरा आकलन करते है हम जानते है कि नियोजन करना आसान होता है पर लागू करना कठिनाई भरा होता है। किसी भी समाज में किसी नये पाठ्यचर्याको लागू करने के लिए हमें उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षक, संसाधन कक्ष व विद्यालय भवन इत्यादि की आवश्यक्ता होता है। हमें केवल पढने से मतलब नही रहता हम सभी यह जानते है शिक्षक छात्र का संबंध सौहार्दपूर्ण होना चाहिए।

पाठ्यचर्या नियोजन का विशेष महत्व है इसके माध्यम से हम पाठ्यचर्या को अलग-अलग तरह से खण्डो में पढा सकते है। किसी भी कार्य को आसानी से किया जा सकता है। राष्ट्र स्तर पर राज्य स्तर पर पाठ्यचर्या को मजबूत बनाना चाहिए तथा अलग-अलग विषयों का बनाकर लागु किया जाना चाहिए। पाठ्यचर्यानियोजन से शिक्षण कार्य आसानी के साथ हो जाता है। शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक इत्यादि को अपने दायित्व समझना चाहिए। पाठ्यचर्या नियोजन से अलग-अलग विषयो का निर्माण होने से बच्चो को समझाने में सहायता मिली

4.7 पाठ्यचर्या क्रियान्वयन में शिक्षक की भूमिका:-

पाठ्यचर्या नियोजन के बाद अगला कदम पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। क्रियान्वयन करते समय विद्यार्थियों की क्षमता का ध्यान रखा जाता है। विद्यालय में कोई बच्चा विकलांग है या नही इसका विशेष रूप से पता किया जाता है। उनकी विकलांगता के हिसाब से पाठ्यचर्या को क्रियान्वित किया जाता है।

पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन के लिए पर्याप्त रूप से शिक्षण सहायक एवं अन्य सामग्री की आवश्यकता पडती है। शिक्षक को इसके लिए पर्याप्त तैयारी करनी पडती है। छात्रों को विशेष रूप से नये पाठ्यचर्या के लिए तैयार रहना चाहिए। पाठ्यचर्या के प्रभावशाली क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों को पर्याप्त मात्रा में निर्देशन एवं परामर्श की सुविधा मिलनी चाहिए। जिससे शिक्षक नई तकनीकी नई शिक्षण प्रणाली से अवगत हो सके। क्रियान्वयन मे ही सभी सावधानी बरतनी पडती है। इसके ही अनुसार मूल्यांकन किया जाता है परिणाम निश्चित किए जाते है।

क्रियान्वयन में छात्रों को दूसरा स्थान दिया जाता है। क्योकिं इनके उपर पाठ्यचर्या लागू होता है व मूल्यांकन कार्य इन्ही पर किए जाते है। इस लिए इनको पहले ही तैयार किया जाता है। जिससे क्रियान्वयन करने में आसानी होती है। हम जानते है कि विद्यालय में कितनी भी अच्छी व्यवस्था हो यदि छात्र रूचि नही लेगें तो शिक्षण कार्य प्रभावित होगा तथा मूल्यांकन में परिणाम गलत आ सकते है इस लिए छात्रों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

क्रियान्वयन करते समय समय ;ज्पउमद्ध का विशेष ध्यान रखना पडता है।

अग्रवाल (1990) ने प्रभावशाली क्रियान्वयन के लिए निम्नलिखित कारकों का सुझाव दिया है।

- राज्यों के शैक्षिक विभागों एवं बोर्डो द्वारा पर्याप्त संख्या में शिक्षकों की तैयारी जिससे कि नया पाठ्यचर्या की बदलती आवश्यकता पर ध्यान दिया जा सके।
- पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन के लिए आवश्यक शिक्षण सामग्री की पर्याप्त मात्रा में पूर्ति करना।
- नए पाठ्यचर्या के लिए समुदाय की स्वीकृति।
- छात्रों की पर्याप्त तैयारी जिससे कि छात्र समय, ऊर्जा एवं पैसे की आवश्यकताओं के साथ नए पाठ्यचर्या को स्वीकार कर सकें।
- पाठ्यचर्या के प्रभावशाली क्रियान्वयन के लिए पर्याप्त निर्देशकों एवं सलाहकारों की सुविधा प्रदान करना

4.8 पाठ्यचर्या के मूल्यांकन में शिक्षक की भूमिका:-

पाठ्यचर्या मूल्यांकन एक अच्छे पाठ्यचर्या का आवश्यक तत्व है। इसका प्राथमिक उद्देश्य पाठ्यचर्या में उचित संशोधनों द्वारा उसकी गुणवता को बनाए रखना। दूसरे शब्दों में मुल्यांकन के

द्वारा हम पाठ्यचर्या के गुण दोष व महत्व के बारे में पता करते है। इसी के द्वारा पाठ्यचर्या की उपयोगिता का निर्धारण किया जाता है। इसमें यह पता चलता है कि जिस उद्द्वेश्य के लिए पाठ्यचर्या का निर्माण किया गया था उसकी पूर्ति हो रही है अथवा नही।

शिक्षक इस बात का हमेशा ध्यान रखते है कि किस प्रकार के बच्चे को किस प्रकार का पाठ्यचर्या की आवश्यकता है। विशेष शिक्षा में इसकी गहन जॉच की जाती है कि किस बच्चे को कौन- कौन सी विकलांगता है। व छात्र किस वजह से पाठ्यचर्या में रूचि नही ले रहा है। यदि पाठ्यचर्या उसकी शैक्षणिक सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति नही करता है तो माना जाता है कि पाठ्यचर्या गलत तरह से बना या क्रियानन्वित किया गया होगा।

मूल्यांकन का उद्देश्य पाठ्यचर्या में प्रभावशाली सुधार एवं उसके गुणों का निर्धारण करना यह मात्रात्मक अथवा गुणात्मक या दोनो ही हो सकते है। मूल्यांकन सुक्ष्म एवं विस्तृत दोनों स्तरों पर होता है। सूक्ष्म स्तर के मूल्यांकन यह तय करते है कि प्रत्येक विषय अथवा प्रत्येक अधिगम कार्य के पश्चात् पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति किस सीमा तक हुई है। जबकि विस्तृत स्तर के मुल्यांकन में सम्पुर्ण पाठ्यचर्या की प्रक्रिया उद्देश्यों के निर्माण से लेकर पूर्ति तक की प्रक्रिया सम्मिलित होती है।

4.9 ईकाई सारांश:-

पाठ्यचर्या नियोजन बनाते समय हमें समाज तथा रीतिरिवाजों का ख्याल रखना चाहिए समाज में धर्मो, बुराईयां, कुरितियो का अधिक महत्व नही देना चाहिए। बहुत से समाज में अलग-अलग पाठ्यचर्या होते है। जिनको बनाने के लिए उनसे विचार विमर्श करना पड़ता है।

समाज के तीनो अंगो राष्ट्रीय स्तर, राज्य स्तर और क्षेत्रिय स्तर पर पाठ्यचर्या को देखा जाता है। हम सभी जानते है कि पाठ्यचर्या को लागु कराना सबसे बड़ी जिम्मेदारी होती है। उसको पालन कराना पड़ता है जिसे बहुत से संगठन समाज नही जानते है। सभी स्तरों पर संगठित किया जाना चाहिए।

इस इकाई में हम ज्यादा से ज्यादा पाठ्यचर्या नियोजन पर प्रकाश डाले है जो कि मुख्य वाक्य या उसी के अनुसार उसकी आवश्यकता तथा महत्व का भी वर्जन शामिल है। पाठ्यचर्या नियोजन में बच्चो की आयु, क्षमता तथा बुद्धिलब्धी का जानना जरूरी होता है। इसलिए इसमें बच्चो को भी शामिल किया जाता है।

4.10 अभ्यास प्रश्न-

प्रश्न-1 पाठ्यचर्या नियोजन करते समय किन - किन कारकों को ध्यान में रखना आवश्यक है ?

प्रश्न-2 पाठ्यचर्या नियोजन क्रियाविधि के सगंठनों के विभिन्न स्तरों की व्याख्या कीजिए ?

प्रश्न-3 पाठ्यचर्या नियोजन में सामाजिक आवश्यकता का विस्तार पूर्वक वर्णन करें?

प्रश्न-4 पाठ्यचर्या नियोजन में आर्थिक आवश्यकताए ें किस प्रकार प्रभाव डालती है?

प्रश्न-5 राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यचर्या नियोजन का वर्णन करें?

4.11 संदर्भ ग्रंथ सूची

19. उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय 1999, दृष्टि बाधितों का शैक्षिक परिदृश्य (पाठ्यचर्या अनुकूलन और विनिमय, शैक्षिक नियोजन और प्रबंधन, अनुसंधान और पाठ्यचर्या रूपरेखा।)
20. इंटरनेट सेवा
21. शर्मा, आर.ए. पाठ्यचर्या विकास
22. दुवे कुमार सुदीप दुष्टिवाधा और आवश्यक कौशल
23. NCERT (2005) Normal Carrıculum framework, natıonal councıl of educatıonal research and traınıng, New Delhı.
24. AFB-Amerıcan foundatıon for the Blınd Expandıng possıbılıtıes for people wıth vısıon loss.
25. Natıonal federatıon of The Blınd.
26. डॉ. जोसेफ आर. ए. विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास
27. शिक्षक-प्रशिक्षण लेखमाला आल इण्डिया कन्फेडरेशन ऑफ दी ब्लांइड।

4.12 निबंन्धातमक प्रश्न

प्रश्न 1. राष्ट्रीय स्तर के पाठ्यचर्या नियोजन के गुण और दोषो की व्याख्या कीजिए ?

प्रश्न 2. विभिन्न स्तरो पर पाठ्यचर्या योजना की सूची बनाएं ?

प्रश्न 3. उन सामाजिक ताकतों की व्याख्या कीजिए जो पाठ्यचर्या नियोजन को प्रभावित करते है ?

इकाई 5 - मानसिक मन्द बालकों हेतु पाठ्यचर्या

1. **पूर्व-प्राथमिक स्तर हेतु पाठ्यचर्या** - इसके अन्तर्गत यह मानसिक मन्द बालक आते हैं, जिनकी आयु 3-6 वर्ष होती है। बालक को किसी भी कौशल सीखने हेतु तत्पर कियाजाता है इसमें विभिन्न कौशलों जैसे- वृहद्-गाम, लघु-गाम, आँख-हाथ समन्वय, सहपाठियों से मेल-जोल, भाषा-विकास, आज्ञा-पालन, श्रवण व दृश्य उद्दीपन में अन्तर का प्रारम्भिक विकास सिखाया जाता है।

1. सामान्य वस्तु- भोजन, •पड़ा, फर्नीचर, खिलौना, पौधे, जानवर, छुट्ा्ियाँ आदि।
2. स्वयं-सेवी कौशल - शरीर के अंग, नाम, लिंग, परिवार के सदस्य।
3. प्रक्रिया शब्द बैठना, खड़ा होना, टहलना, दौडऩा, ताली बजाना, •ूदना, खाना, पीना, जाना, रूकना।
4. प्रत्यय - आकार, प्रकार, रंग, आवाज, स्वाद, सुगन्ध, वजन, दाम, स्थिति, समान व अन्तर, सुरक्षा।

(1) शैक्षणिक कौशल - पढऩा व लिखना।

2. **प्राथमिक स्तर हेतु पाठ्यचर्या** - इसमें मानसिक मन्द बालक•की आयु 6-9 वर्ष त• होती है तथा इन•की मानसिक आयु 3-5 वर्ष के बालक के समान होती है। इसमें पूर्व प्राथमि• स्तर पर सिखाए गए कौशलों का बृहद रूप सम्मिलित करना होता है।

1. स्वयं-सेवी कौशल - स्वास्थ्य, सुरक्षा, विभिन्न अवसरों पर •पड़े पहनना, सफाई, व्यक्तिगत सफाई, कपड़े पहनना-निकालना आदि।
2. सामाजिक कौशल - जिम्मेदारी लेना, सार्वजनिक स्थलों पर उचित व्यवहार करना , आपातकालीन सेवाओं कोसमझना, जैसे आगे, एम्बुलेन्स, पुलिस, जगह की पहचान अपने शहर के बारे में जानकारी।
3. सम्प्रेषण कौशल - सम्प्रेषण को प्रभावी बनाने के लिए भाषा व वाणी कौशलों का विकास करना ।

शैक्षणिक कौशल -प्रक्रिया पढऩा-लिखना जैसे- नाम, चिन्ह पटल आदि। इसके साथ ही मित्रों, परिवार के सदस्यों का नाम लिखना-पढऩा भी सिखाया जाता है। जोड़ व घटना, रुपये-पैसे की पहचान, शैक्षणिक कौशल प्रक्रिया केन्द्रित होना चाहिए, जिससे सीखे गए तथ्यों को मानसिक मन्द बालक अपने दैनिक जीवन में दोहरा सकें।

(1) गामक कौशल- इसमें ऐसी प्रक्रियाओंका समावेश होता है जो शारीरि• बनावट कोबनाये रखने के साथ ही स्वास्थ्यवर्ध• भी हो।

(1द्ब) पूर्व-व्यावसायिक कौशल - इसमें ऐसे प्रक्रिया क्रियाकलापों को सिखाया जाता है, जो शैक्षिक लक्ष्य के साथ गामक विकासएवं सामाजिक कौशल के साथ ही भविष्य में व्यवसाय के लिए प्रोत्साहित करता है।

3. द्वितीय स्तर हेतु पाठ्यचर्या ()- इसमें मानसिक मन्द बालकों •की उम्र 10-13 वर्ष •की होती है तथा उन•की मानसिक आयु 5 से 8 वर्ष त• के बालकके समान होती है। प्राथमि• स्तर पर जो बालक80 प्रतिशत या उससे अधि• प्राप्त •र लेता है, उसे द्वितीय• समूह के लिए प्रतिस्थापित •र दिया जाता है।

(द्ब) स्वयं-सेवी •कौशल (स्द्गद्यद्ध-द्धद्गद्यद्ब स्द्मद्बद्यद्य)- प्राथमि• रूप से इन्हें घरेलू आर्थि• •कौशल के साथ ही सफाई करने का •कौशल सिखाया जाता है। बालकने जो कुछ भी प्राथमि• स्तर पर सीखा है, उसे आगे बढ़ाया जाता है। बालककोसजने सवरने के लिए उचित •पड़ों का चुनाव करना , अपने स्वास्थ्य कोउचित बनाये रखना आदि के बारे में भी ज्ञान दिया जाता है।

(द्बद्ब) सम्प्रेषण •कौशल (ष्टशद्वद्वह्वठ्ठद्बष्ड्डह्लद्बशठ्ठ स्द्मद्बद्यद्य)- बालकके शब्द•ोश में वृद्धि •राना, सुनने एवं बोलने सम्बन्धी उचित जानकारी देना, परिवार, समाज के लोगों, अपने समूह के बालकों तथा दूरभाष के द्वारा बोलने •की शैली का विकास•राना।

(द्बद्बद्ब) सामाजिक कौशल - सार्वजनिक स्थानों पर उचित व्यवहार का अभ्यास •राना, बस यात्रा करना , यातायात नियमों का पालन करना , रोजमर्रा के जीवन में प्रयोग में आने वाले सभी •ार्यों कोकरना , जैसे- समाचार पत्र लाना, बिजली का बिल देना, दूध लाना, दूरभाष का बिल भुगतान करना आदि। यातायात के साधनों के बारे में जानना, जैसे- आटोरिक्शा, रेलगाड़ी, टैक्सी, बस इत्यादि।

(द्ब1) शैक्षणिक कौशल- पढऩे-लिखने के उप•रणों का उपयोग करना , लघु •हानी पढऩा, टेलीविजन के शैक्षणिक कार्यक्रम कोदेखना, पुस्तिका कोपढऩा, मानचित्र समझना, शब्दों का सही उच्चारण एवं लेखन करना । दैनिक जीवन के उपयोग में आने वाले गणितीय •कौशल , जैसे- जोडऩा, घटाना, भाग, समूही•रण करना , भिन्न का आंशि• ज्ञान, सामान्य वस्तुओं का तौल समझाना, रुपये-पैसे का लेन-देन, घड़ी तथा •ैलेण्डर का उपयोग करना , सप्ताह के दिन, महीने एवं वर्ष के बारे में समझना।

(1) गामक कौशल - सामान्य खेल तथा आनन्दायक प्रक्रियाओं के लिए शारीरिक विकास कराना।

पूर्व-व्यावसायिक कौशल (क्कह्म्द्ग-ङ्कशष्ड्डह्लद्बशठ्ठड्डद्य स्द्मद्बद्यद्य)- घर पर किए जा सकने वाले सामान्य आर्थि• प्रक्रियाओंकोकरना , जैसे- जूतों पर पॉलिश करना , •पड़े साफ करना , कपड़े प्रेस करना तथा अन्य प्रक्रियाएँ जो बालक को आगे चलकर व्यावसाय करने में लाभदायक हों।

4. **पूर्व-व्यावसायिक स्तर पर पाठ्यचर्या** - इस पाठ्यचर्या कोविषय-वस्तु 15 से 18 वर्ष के मानसिक मन्द बालकों के लिए होती है। इन बालकों •की मानसिक आयु 7 से 11 वर्ष आयु के बालकों के समान होती है। इसमें बालकों कोऐसे •कौशल सिखाये जाते हैं, जो आगे चल•र इन्हें व्यवसाय करने मश सहाय• सिद्ध हो। इसमें मानसिक मन्द बालकों कोव्यवसाय करने के लिए तत्पर कियाजाता है। इस स्तर पर बालकों कोशैक्षणिक उपलब्धि से ज्यादा व्यावसायि• उपलब्धि पर ध्यान दिया जाता है।

1. स्वयं-सेवी कौशल (स्द्गद्यद्ध-द्धद्गद्यद्ध स्द्मद्बद्यद्य)- इसमें बालककोस्वतन्त्र रूप से सजने-सॅवरने का तथा •पड़े पहनने का अभ्यास •रराया जाता है। बालकों को स्वास्थ्य वर्धक खाद्ाय पदार्थो के साथ ही हानिकारक पदार्थ, जैसे- शराब, खैनी, सिगरेट आदि से होने वाले नुकसान के बारे में भी अवगत कराया जाता है। इसमें बालकों को विभिन्न रोगों के बारे में जानकारी दी जाती है तथा उनके उपचार के बारे में भी अवगत •राया जाता है।
2. सामाजिक कौशल - समाज के विभिन्न विभागों, सामाजिक सुरक्षा, नागरिक कर्तव्य आदि के बारे में बताते हुए बालककोसमाज मश समायोजित करने का प्रयास कियाजाता है। इन बालकों कोसमाज द्वारा प्रतिपादित व्यवहार का अभ्यास भी कराया जाता है।
3. सम्प्रेषण कौशल - बालकमें आत्मविश्वास के साथ सामाजिक मुद्दे पर बोलने, दूसरो की बात को स्पष्ट सुनने का अभ्यास कराया जाता है।
4. शैक्षणिक कौशल - बालकों में अधि•तम पढने लिखने का •कौशल उत्पन्न करना , पत्रिका पढना, समाचार पत्र पढना, विभिन्न प्रकार के रिक्त स्थान कोभरना आदि का अभ्यास •राया जाता है। बालकद्वारा व्यक्तिगत पत्र लिखना, गणित •की साधारण प्रक्रियाओंकोकरना , रुपये-पैसे का लेन-देन करना , उधार, ब्याज तथा मापन के साधारण उप•रणों कोसमझाना।
5. गामक कौशल - साईकिल का उपयोग करना , विभिन्न प्रकार के खेल में भाग लेना, घरेलू उपकरणों का खाली समय में उपयोग करना।

व्यावसायिक कौशल - सामूहिक रूप से कार्य करना , अपनी जिम्मेदारी समझना, भविष्य के व्यवसाय से सम्बन्धित क्रियाकलापों को करना। बालकों में जिम्मेदारी, नियमितता, ईमानदारी, सत्यता आदि गुणों का विकास करना

इकाई-6 पाठ्यचर्या अनुकूलन: अर्थ तथा आवश्यकता

15.1 प्रस्तावना
15.2 उद्देश्य
15.3 पाठ्यचर्याअनुकूलन : संप्रत्यय
15.4 पाठ्यचर्याअनुकूलन : आवश्यकता
15.5 पाठ्यचर्याअनुकूलन : प्रक्रिया
15.6 पाठ्यचर्या अनुकूलन: प्रविधियां
15.7 तर्कसंगत समायोजन: आवश्यकता तथा नियोजन
15.8 विभिन्न विषयों के लिए पाठयक्रम अनुकूलन की योजनाएँ
    6 .8.1 गणित
    6 .8.2 सामाजिक विज्ञान / प्राकृतिक विज्ञान
    6 .8.3 भाषा
15.9 सारांश
15.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
15.11 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची एवं उपयोगी पुस्तकें
15.12 निबंधात्मक प्रश्न

6 .1 प्रस्तावना

कक्षा एक ऐसा स्थान होता है, जहां विचार, मूल्य, जानकारी तथाज्ञान साझा किया जाता है। वर्ग के संगठन और उसके मूलभूत घटकों (छात्रों, शिक्षक और पाठ्यचर्या-लेनदेन) के बीच बातचीत, समूह हेतु अनभिज्ञ स्थिति कोज्ञात स्थिति में परिवर्तित करती हैं। कई शैक्षिक नवाचारों और पहलों की शुरूआत में यहध्यान रखा गया कि पुनरीक्षित और संशोधित अभ्यासों हेतु कक्षा को बेहतर बनाया जा सकता है। पाठ्यचर्या में अध्ययन के कोर्स की गतिविधियों और घटकों को भी सम्मिलित किया गया है। यह पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तक, आवश्यक शिक्षण सहायक सामग्री, शिक्षण योजनातथा मूल्यांकन को भी सम्मिलित करती है।

हाल ही में, समावेशन पर बल देनेसे शिक्षकों, नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं, अर्थशास्त्रियों तथाभारत में स्कूलों एवं कक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण ध्यान दिया गया है। संवैधानिक प्रावधान, जिनमे सेशिक्षा का अधिकार (आरटीई), 2009, विकलांगजनअधिनियम (पीडब्लूडी),1995, (RPD) 2016 तथा कानूनी शिक्षा भारत की शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु

निरंतर प्रयास कर रहे हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार दृष्टिबाधितविद्यार्थियों की आबादी में परिवर्तन आ रहा है तथा विशिष्ट आवश्यकता वाले विद्यार्थी शिक्षा की मुख्यधारा में जुड़ रहे हैं। समावेशी शिक्षापाठ्यचर्या और शिक्षकों की रचनात्मकता के सम्बन्ध में अधिक लचीलेपन की मांग करता है। उच्च-प्राथमिक विद्यालयों में विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए विशिष्ट पाठ्यचर्या संबंधी दिशानिर्देशों की कमी के कारण अधिगम अक्षमता तथा गंभीर विकलांगता से जूझ रहे विद्यार्थी विद्यालय में पूर्ण रूप से समायोजन स्थापित नहीं कर पा रहे हैं। वर्तमान शोध से पता चलता है कि विशेष आवश्यकता के लिए पाठ्यचर्या के प्रावधान का कोई सरल उत्तर नहीं है।

प्रस्तुत इकाई मेंदृष्टिबाधित बच्चों हेतु पाठ्यचर्या अनुकूलन के सम्बन्ध में बात की गई है। हम दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पाठ्यचर्या अनुकूलन में शिक्षक और शैक्षिक संस्थान के अन्य पेशेवरों की भूमिका को भी समझने का भी प्रयास करेंगे।

6 .2उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनउपरांत आप:

- पाठ्यचर्या अनुकूलन केअर्थ को जान सकेंगे।
- पाठ्यचर्या अनुकूलन की आवश्यकता को समझ पाएंगे।
- पाठ्यचर्या अनुकूलन की प्रक्रिया को जान पाएंगे।
- तर्कसंगतअनुकूलन कोसमझ सकेंगे।
- दृष्टिबाधितों हेतु पाठ्यचर्या अनुकूलन की आवश्यकता को समझ पाएंगे।

6 .3पाठ्यचर्या अनुकूलन : संप्रत्यय

पाठ्यचर्या अनुकूलन को समझने से पहले यह आवश्यक है कि हम जानें कि पाठ्यचर्या क्या है?शिक्षा की प्रक्रिया में पहला कदम पाठ्यचर्या से शुरू होता है। अधिकांश लेखकों और विशेषज्ञों के मतों पर यदि हम गौर करें तो पाएंगे कि पाठ्यचर्या सीखने से संबंधित निम्न को निर्धारितकरता है:

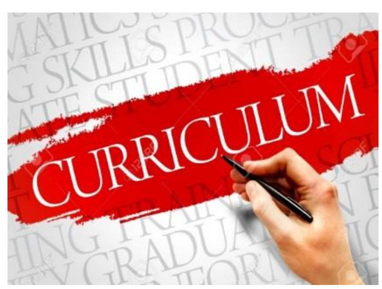

क्यों;

क्या;

कब;

कहां;

कैसे; और

किसके साथ

शैक्षिक अवधारणाओं की समझ द्वारा हम कह सकते हैं कि पाठ्यचर्या.....

- शिक्षण-अधिगम के परिप्रेक्ष्य,
- शिक्षण सामग्री,
- उपलब्ध समय में सीखने के अनुभव का अनुक्रमण,
- शिक्षण संस्थानों की विशेषताओं,
- सीखने के अनुभव की विशेषताओं,
- सीखने और सीखाने के लिए संसाधन (जैसे पाठ्यपुस्तकों और नई प्रौद्योगिकियों),
- मूल्यांकन और शिक्षकों की प्रोफाइल, आदि ....

... को समाहित तथा परिभाषित करता है।

पाठ्यचर्या अनुकूलन

अनुकूलन का संबंध अनुकूलित होने या रूपांतरित होने की प्रक्रिया से है। इसका तात्पर्य उपयोग के अनुरूप वस्तु तथा स्थिति में वांछित परिवर्तन लाना है।पाठ्यचर्या अनुकूलन 'छात्रों की जरूरतों के अनुकूलन शिक्षण रणनीति को पूरा करने की प्रक्रिया' है।

पाठ्यचर्या अनुकूलन एक गतिशील प्रक्रिया (ongolng dynamlc process) है, जो विशेष आवश्यकता वाले छात्रों/छात्राओं के निर्धारित कार्यक्रम को उनकी सीखने की जरूरतों के अनुरूप संशोधित और रूपांतरित (modlfles and adapts) करता है। यह सभी क्षमताओं के शिक्षार्थियों के लिए शिक्षण-अधिगम व्यवस्था को सक्षम बनाता है।

पाठ्यचर्या अनुकूलनके दो दृष्टिकोण हो सकते हैं: पहला एक्कोमोडेशन तथा दूसरा मॉडिफिकेशन

1. एक्कोमोडेशन / Accommodatlon

एक्कोमोडेशन अनुकूलन का एक दृष्टिकोण हैजो अनुदेशन, कक्षा वातावरण, मूल्यांकनतथा सामग्री को बदलकर, एक बच्चे के लिए एक व्यक्तिगत शिक्षण वातावरण बनाता है. उदहारण:

1. प्रिंट आकार को बड़ा करना

2. मूल्यांकन हेतु वैकल्पिक संस्करण
3. ब्रेल उपकरण का इस्तेमाल

2. मॉडिफिकेशन /Modlflcatlon

मॉडिफिकेशन अनुकूलन का एक दृष्टिकोण है जो मौलिक अधिगम अपेक्षाओं या मानक को बदल कर या कम कर पाठ्य सामग्री, अनुदेशन, या मूल्यांकन में परिवर्तनों की बात करता है। उदहारण:

1. सामग्री की मात्रा या जटिलता को कम करना
2. वैकल्पिक या रूपांतरित पाठ्यचर्या
3. रूपांतरित मूल्यांकन के मानक नियम

किसी पाठ्य सामग्री को दृष्टिबाधित बच्चों के अनुरूप बदलने के लिए चारक्रमिक सोपानों में किसी एक के अनुरूप अनुकूलन की बात की गयी है:

D	M	S	O
Dupllcatlon	Modlflcatlon	Substltutlon	Omlsslon

→→ →→ →→ →→

यथासंभव पाठ्य-वस्तु अनुकूलित स्वरुप में रूपांतरितकिया जाना चाहिए। यदि किसी विषय-वस्तु का रूपांतरण संभव नहीं हो सकता है, तो उसमें उचित परिवर्तन (Modlflcatlon) लाते हैं। यदि यह भी संभव ना हो तो उस विषय-वस्तु को प्रतिस्थापित (Substltutlon) करते हैं। सबसे अंतिम विकल्प के रूप में जिस विषय-वस्तु का उपरोक्त में से कुछ भी संभव ना हो तो वहां उस खंड को हटा (Omlsslon) भी देते हैं।

अभ्यासप्रश्न:

प्रश्न01पाठ्यचर्या अनुकूलनके दृष्टिकोण हो सकते हैं:

(l)तीन

(ll)दो

(lll) चार

(lv) उपरोक्त में से कोई नहीं

प्रश्न02पाठ्यचर्या अनुकूलन के प्रारूप हैं:

(I)चार

(II)पांच

(III)तीन

(Iv)छः

6 .4 पाठ्यचर्या अनुकूलन: आवश्यकता

पाठ्यचर्या पर विभिन्न परिपेक्ष्यों के माध्यम से विचार करने की आवश्यकता होती है।यह भी सोचने के आवश्यकता है कि क्यासमाज पाठ्यचर्या हेतु अधिगम को संगठित करनेके सन्दर्भ में विचार प्रस्तुत कर सकतेहै। कक्षा पाठ्यचर्या कीपारस्परिक क्रिया में सरलता से परिवर्तन लाया जा सकते हैं। लेकिन कुछ स्थितियों में लोग पाठ्यचर्या को उन विषयों से जोड़ कर देखते हैं जो कि कक्षाकक्ष में पढ़ाया जाते हैं लेकिन वे व्यक्तित्व विकास तथा योग्यताओं के विस्तृत लक्ष्यों को भूल जाते हैं। स्वस्थ जीवन तथा सम्पूर्ण विकास हेतु खेल तथा स्पोर्ट्स भी विस्तृत पाठ्यचर्या की मुख्य कुंजी है। पाठ्यचर्या रूपरेखा इस विस्तृत सन्दर्भ के साथ अधिगम अनुभव को एक विषय की सीमा के अन्दर रहकर विस्तृत लक्ष्यों की प्राप्ति कीओर संकेत करता है।

पाठ्यचर्या के विकास में विद्यार्थी के शामिल होने के लिए पाठ्यचर्या के क्रियाकलापों की स्थिरता महत्वपूर्ण है। विद्यालय की मूलपाठ्यचर्यासेसम्बंधित क्रियाओं को समर्थितहेतुअन्यगतिविधियों के समूह कोपाठ्य सहगामी क्रियाएं कहते हैं। इस प्रकार की क्रियाएँ अनुदेशात्मक तथा अन्य शैक्षिक कार्यक्रमों का हिस्सा होती हैं, जो की पूर्णतः विद्यालय शिक्षकों द्वारा संचालित होती हैं।सह संबंधी क्रियाएँ कक्षा में हुई बातचीत के रूप में ज्ञानार्जन का स्रोत हैं, स्वस्थ रहने के लिए शारीरिक शिक्षा तथा मानसिक एवं शारीरिक ऊर्जा के लिए मनोरंजक क्रियाएँ शामिल की जाती हैं तथासभी पाठयक्रम गतिविधियाँ छात्रों के सभी दौर के विकास हेतु समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

दृष्टिबाधित बच्चों को समाज में आत्मनिर्भर रहनेतथा आवश्यक कौशल हासिल करने हेतु सामान्य शिक्षा पाठ्यचर्या से परे व्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण अनुदेशन की आवश्यकता होती है। मनोरंजक गतिविधियां दृष्टिबाधित बच्चों के लिए पाठयक्रम गतिविधियों के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक हैं। यद्यपि नियोजन की आवश्यकता दृष्टिबाधित बच्चों को मनोरंजक कार्यक्रमों में शामिल करने से है, जो कि मानक पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण अवयव है।दृष्टिबाधित बच्चो हेतु कार्यक्रम को सुलभ बनाने के लिए कुछ अनुकूलन एवं विशिष्ट उपकरण की आवश्यकता होती है। मनोरजंक कार्यक्रमों में पूर्ण आनंद की अनूभूति के लिए इन्हें नियोजित करने की आवश्यकता हो सकती है। उपयुक्त अनुकूलन के निर्धारण से पूर्व यह भी आवश्यक है कि बच्चे की क्रियात्मक दृष्टि को समझ लिया जाए। तथादृष्टिबाधित बच्चों के लिए अनुदेशात्मक घटक को संगठित करने में यथासंभव प्रयास किये जाने चाहिए।

आपको पता होना चाहिए कि बच्चों के लिए डिज़ाइन किया गया मुख्य पाठ्यचर्या सामान्यतः दृष्टिबाधित बच्चों के लिए उचित है। हालांकि, सीखने की सामग्रियों और शिक्षण के कुछ तरीकों कोअनुकूलित कियेजाने चाहिए ताकि दृष्टिबाधित बच्चों की सीखने की जरूरतों को पूरा किया जा सके। इसी प्रकार, मनोरंजक गतिविधियों में अनुकूलन महत्वपूर्ण है और इसलिए दृष्टिबाधित बच्चों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए मनोरंजन सामग्री और रणनीतियों को संशोधित किया जाना चाहिए। दृष्टिबाधितों कोमनोरंजक कौशल सीखाने के लिए हमें विस्तारित कोर पाठ्यचर्या के नियोजन और कार्यान्वयन में एक सुसंगत, यथार्थवादी और लचीला दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

दृष्टिबाधित बच्चे दृष्टि संवेदनाके हानि के परिणामस्वरूप मनोरंजन तथा फिटनेस संबंधी क्रियाओं को खेलने के दौरान या अनुकरण के दौरान निष्क्रय रूप से देखकर नहीं सीख सकते। मनोरंजन सोच-समझ कर और व्यवस्थित रूप से विकलांगता-विशिष्ट तकनीकों तथा सुरक्षाओं को ध्यान में रखकर होना चाहिए। मनोरंजन के आधारों को शारीरिक शिक्षा, खेल या स्पोर्ट के समय में आवश्यक स्थान और अनुकूलन के साथ सीखा जा सकता है। मनोरंजन तथा अवकाश कौशलों का शिक्षण दृष्टिबाधित बच्चों हेतु सुनियोजित और सोच समझ करहोना चाहिए।

अभ्यासप्रश्न:

प्रश्न03विद्यालय की मूलपाठ्यचर्यासेसम्बंधित क्रियाओं को समर्थितहेतुअन्यगतिविधियों के समूह कहते हैं:

(I)पाठ्य सहगामी क्रियाएं

(II)विस्तारित पाठ्यचर्या गतिविधियाँ

(III)(I) एवं (II) दोनों

(Iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

प्रश्न04दृष्टिबाधित बच्चों को समाज में आत्मनिर्भर रहनेतथा आवश्यक कौशल हासिल करने हेतु आवश्यकता होती है:

(I)व्यवस्थित अनुदेशन की

(II)उद्देश्यपूर्ण अनुदेशनकी

(III) (I) एवं (II) दोनों

(Iv)उपरोक्त में से कोई नही

6 .5 पाठयक्रम अनुकूलन की प्रक्रिया

एक लचीला, व्यापक तथा संतुलित पाठ्यचर्या सभी बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। एक समावेशी पाठ्यचर्या विद्यार्थियों कीव्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए विद्यालयों की आवश्यकता को स्वीकार करता है तथा सभी विद्यार्थियों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सक्षम बनाता है। एक समावेशी पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन के लिए स्कूल के स्तर पर शिक्षण योजनाओं, पाठ्य सामग्री, मूल्यांकन प्रक्रिया तथा उपलब्ध संसाधनों में कई परिवर्तन की आवश्यकता होती है।

कक्षा के वातावरण में, गुणवत्ता की शिक्षा विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है। इन के बीच महत्वपूर्ण शिक्षार्थियों, ढांचागत सुविधाओं, संशोधित वातावरण,समावेशन, प्रशिक्षित प्रेरक शिक्षक, शिक्षण अधिगम सामग्री, तथा मूल्यांकन के लिए योजनाएँ आदि की आवश्यकता होती है।पाठ्यचर्या अनुकूलन में निर्णय लेने की प्रक्रिया के साथ-साथ गतिविधियाँ या कौशल भी सम्मिलित हैं। पाठ्यचर्या में सही, उचित तथा व्यापक अनुकूलन करना वांछनीय है। पाठ्यचर्या अनुकूलन के चयन और कार्यान्वयन की प्रक्रिया की अवधारणा को समझने के लिए निम्नलिखित निर्णय लेने वाले फ्लोचार्ट का उपयोग किया जा सकता है।

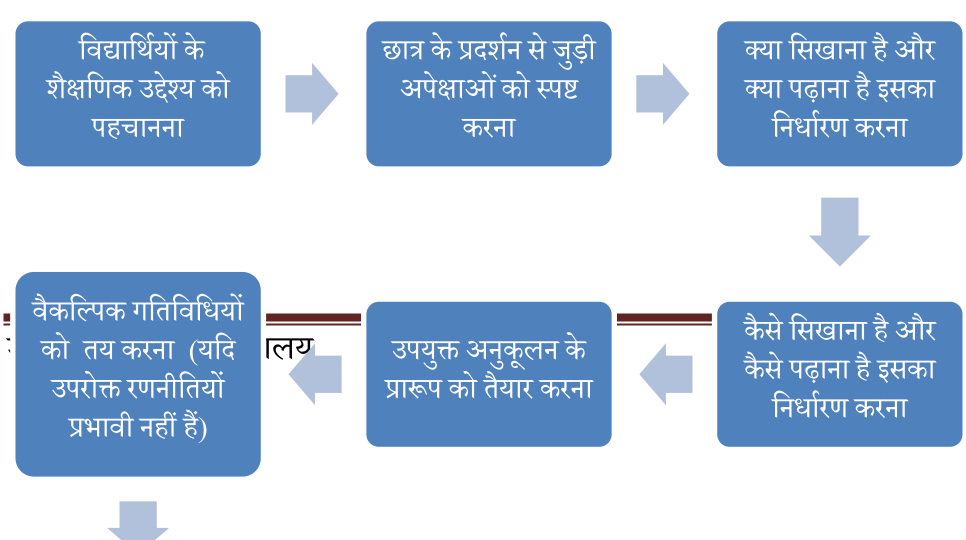

6 .6 पाठ्यचर्या अनुकूलन :विभिन्न प्रविधियाँ

पाठ्यचर्या अनुकूलन को एक बच्चे के सक्रिय रूप से भाग लेने तथा अवधारणाओं की समझ का प्रदर्शन करने में सभी बच्चों की भागीदारी को अनुसमर्थित करने के स्थान के रूप में देखा जाना चाहिए। अनुकूलन अध्यापक-छात्र/छात्राओं के बीच अन्तः-संबंधों के विभिन्न क्षेत्रों में लाया जा सकता है।उचित रूप से सफलता के लिए सीखने के माहौल के साथ पाठ्यचर्या अनुकूलन को **नौ प्रकार** से विभाजित कर के समझा जा सकता है:-

1. **अदा (Input)**
   'अदा अनुकूलन प्राविधि' के अंतर्गतअधिगमकर्ता के समक्ष प्रस्तुत विभिन्न अनुदेशन प्रारूपों या शिक्षण में रूपांतरण समाहित होते हैं। उदहारण के लिए पाठ-प्रस्तुति में मल्टी-मीडिया का उपयोग, टॉकिंग बुक्स का प्रयोग, आदि दृष्टिबाधित बच्चों के लिए अलुकुलित अनुदेशन का कार्य कर सकता है।

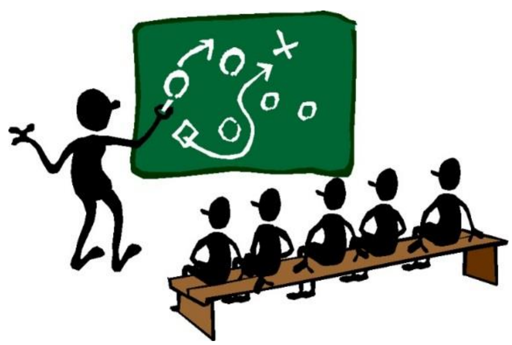

2. **प्रदा (Output)**
   'प्रदा अनुकूलन प्रविधि' के अन्तर्गत अधिगमकर्ता कक्षा या अन्य अकादमिक परिवेश में अपनी बात को व्यक्त करने या किसी बात को समझाने के लिए किसी अनुकूलन सामग्री या विधि का प्रयोग करता है। यह इस अवधारणा को संपोषित करता है कि प्रत्येक बच्चे आसानी से प्रतिक्रिया करते हैं।उदहारण के लिए मूल्यांकन में मौखिक परीक्षा का प्रावधान, संपेषण हेतु सहायक उपकरण का इस्तेमाल करना।

3. **समय / Time**
   सीखने के समय, कार्य निष्पादन तथा मूल्यांकन के समय में रूपांतरण या अनुकूलन आवश्यक है।उदहारण: छात्र प्रतिक्रिया के समय में वृद्धि

4. **कठिनाई स्तर / Difficulty**

   कौशल स्तर, समस्या प्रकार, या शिक्षार्थी के सीखने संबंधी दृष्टिकोण आदि का रूपांतरण या अनुकूलन इस क्षेत्र के अंतर्गत आता है। उदहारण: सहायक उपकरणों का प्रयोग, अनुदेशन गुणात्मक सुधार

5. **अनुसमर्थन की तीव्रता / Level of Support**

   विशिष्ट शिक्षार्थी के लिए व्यक्तिगतसहायता की मात्रा या तीव्रता में वृद्धि या परिवर्तन आवश्यक है, जिससे उनमें सटीक समझ का विकास हो सके। किसी भी मानचित्र को देख कर समझने या फिर उसके टैक्टाइल मैप को स्पर्श द्वारा समझने में अलग अलग अनुसमर्थन की आवश्यकता होती है।उदहारण: विशेष शिक्षक की साझेदारी, विशेष छात्र के लिए पीयर ट्यूटर की न्युक्ति, बैठने की व्यवस्था में परिवर्तन (सहयोगी अधिगम)

6. **आकार (विषय-वस्तु) / Size**

   एक छात्र के अपेक्षित सीखने की विषय-वस्तुओं की संख्या या मात्रा को भी अनुकूलित करने की जरुरत पड़ सकती है।उदहारण: गृह कार्य का बोझ कम करना।

7. **भागीदारी का स्तर / Degree of Participation**

   एक शिक्षार्थी के सक्रिय रूप से शामिल होने के स्तर में भी अनुकूलन होना चाहिए।उदहारण: सीखने की प्रक्रिया में भागीदारी को तय करना, नाटक या अन्य कार्यक्रम में विशिष्टताओं का ध्यान रखकर भागीदारी सुनिश्चित करना।

8. **वैकल्पिक उद्देश्य / Alternate Goals**

   एक ही सामग्री का उपयोग करते समय अलग-अलग लक्ष्यों या परिणाम अपेक्षाओं को अपनाया जा सकता है। कई बार हम दृष्टिबाधिता के साथ अन्य विकलांगता व्याप्त बच्चों के व्यक्तिगत शिक्षा योजना या कार्यक्रम में अलग लक्ष्य निर्धारित भी करते हैं।उदहारण: एक कोशिका के बारे में तथा उसके केन्द्रक संबंधी जानकारी (जबकि अन्य के लिए

कोशिका तथा सभी महत्वपूर्ण भागों की जानकारी)।

9. **विकल्प पाठ्यचर्या / Substltute Currlculum**

एक शिक्षार्थी के व्यक्तिगत लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अलग अलग शिक्षा और सामग्री प्रदानभी किया जा सकता है।

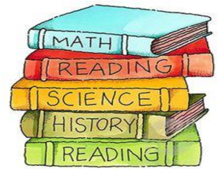

अभ्यासप्रश्न:

प्रश्न05पाठ्यचर्या अनुकूलन को विभाजित किया जा सकता है:

(l) 10 प्रकारों से

(ll)9 प्रकारों से

(lll) 5 प्रकारों से

(lv)6 प्रकारों से

प्रश्न06कौशल स्तर, समस्या प्रकार, या शिक्षार्थी के सीखने संबंधी दृष्टिकोण आदि का रूपांतरण या अनुकूलन किस क्षेत्र के अंतर्गत आता है:

(l)अदा

(ll)प्रदा

(lll) समय

(lv) कठिनाईस्तर

6 .7 तर्कसंगत समायोजन: आवश्यकता तथा नियोजन

उचित या तर्कसंगत समायोजन का तात्पर्य उन कार्य, पर्यावरण या कार्यप्रणाली मेंसंशोधनों या परिवर्तनोंसे है, जोविकलांग व्यक्तियों या बच्चों को अकादमिक कार्यक्रम या नौकरी में भागदारी हेतु समान अवसर के लिए सक्षम करता है। समायोजनकी व्यापक श्रेणियों शामिल हैं:

- अकादमिककार्यक्रम में नामांकन के लिए आवेदन करने के लिए एक समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए आवेदन प्रक्रिया में परिवर्तन,
- विकलांगता युक्तविद्यार्थियोंके द्वाराशैक्षणिक कार्यक्रम के आवश्यक कार्यों को पूरा करने के लिए सक्षम बनानेहेतु परिवर्तन, और
- विकलांगता युक्तविद्यार्थियोंके द्वारा कार्यक्रममेंबराबर लाभ और विशेषाधिकारों का आनंद लेने के लिए सक्षम बनाने वाले परिवर्तन।

कक्षा की गतिविधियों तथा अनुकूलन के मध्य सहसंबंध स्थापित करना अति आवश्यक है। दूसरे शब्दों में यह भी कह सकते हैं कि विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यचर्या अनुकूलन होना चाहिए।। इसलिए, तीनों क्षेत्रों में अनुकूलन हो सकता है-शिक्षक, विद्यार्थी तथाअधिगम सामग्री।

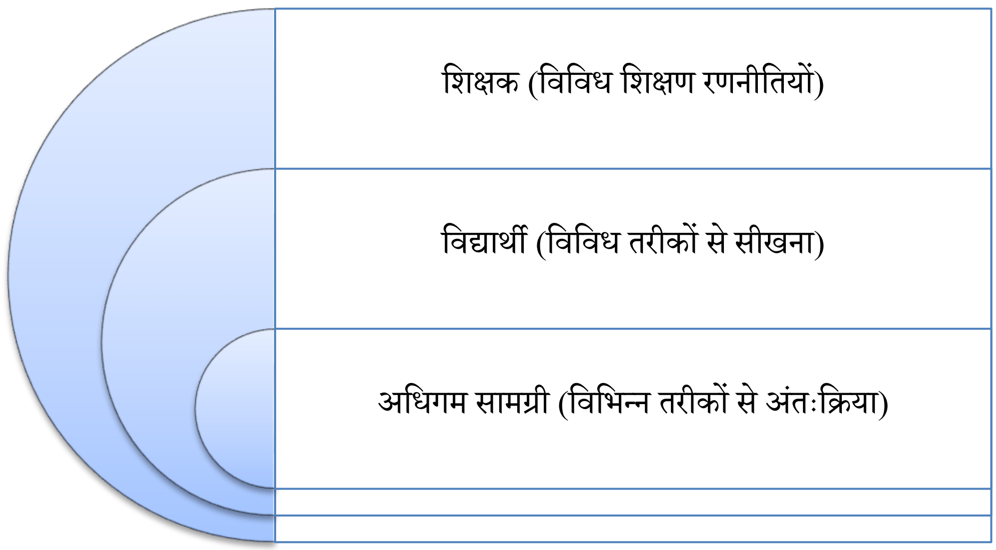

(1) विविध योजनाओं का उपयोग करते हुए शिक्षक शिक्षण सामग्री:

यह मौखिक, लिखित जैसी शिक्षण योजनाएँ सम्मिलित करता है,जिनमें सरल से जटिल, मूर्त से अमूर्त, समूह कार्य, पीयर ट्यूशनिंग, पूर्व ज्ञान, बुद्धिशीलता, नाटकीकरण, अतिरिक्त समय देना,वैकल्पिक गतिविधियों का आयोजन, लार्ज प्रिंट , ब्रेल या स्पर्शीय द्वि तथा त्रि आयामी प्रारूप, वास्तविक जीवन अनुभव, वास्तविक वस्तुएँ, भ्रमण तथापत्रिका आदि सम्मिलित हैं।

विभिन्न तरीकों से सीखने वाले छात्र:

इसमें मौखिक, लिखित, स्पर्शीय,संकेत, ड्राइंग, अभिनय, आईसीटी, फ्रेमन प्रश्न, पेयर रीडिंग, स्टोरी टेलिंग, गीत, कविता, भूमिका निभाने, चर्चा, वाद-विवाद, खेल, फ़्लैश कार्ड, क्विज़ आदि क्रियाएं सम्मिलित हैं।

विभिन्न शिक्षण सामग्रियों का उपयोग करना:

अधिगम सामग्री जैसे बोलता कैलकुलेटर, टेलर फ्रेम, अबेकस, ब्रेलर, ज्यामितीय किट, स्पर्शीय ग्राफ शीट, त्रि-आयामी प्रारूप, फ़्लैश कार्ड, पोस्टर, श्यामपट्ट, प्रोजेक्शन स्क्रीन, कंप्यूटर,

पाठ्यवस्तु का ध्वन्यांकित प्रारूप, स्क्रीन रीडर, डेज़ी किताबें, सीडी, एमपी 3, तथा मल्टीमीडिया गैजेट जैसे बोलती घड़ियाँ आदि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए सहायक होती हैं।

अभ्यासप्रश्न:

प्रश्न07अनुकूलन के क्षेत्र हैं:

(I)शिक्षक

(II)विद्यार्थी

(III)अधिगम सामग्री

(Iv) उपरोक्त सभी

प्रश्न08कौशल स्तर, समस्या प्रकार, या शिक्षार्थी के सीखने संबंधी दृष्टिकोण आदि का रूपांतरण या अनुकूलन किस क्षेत्र के अंतर्गत आता है:

(I)अदा

(II)प्रदा

(III) समय

(Iv)कठिनाईस्तर

6 .8 विभिन्न विषयों के लिए पाठयक्रम अनुकूलन की योजनाएँ

अधिकतर दृष्टिबाधित बच्चे गैर-दृश्य साधन की मदद से सीखते हैं।श्रवण, घ्राण, स्वाद तथा स्पर्श ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से दृष्टिबाधित बच्चे संप्रत्यय को समझने में सहायक होते है।प्राथमिक स्तर पर दृष्टिबाधित बच्चों के ज्ञानेद्रिय प्रशिक्षण हेतु निम्नांकित गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है:

- दृश्य उत्तेजना;
- अनुभवात्मक शिक्षा (अवलोकन / प्रायोगिक / वास्तविक अधिगम);
- आकस्मिक अधिगम (अधिगम, जो पर्यावरण में स्वाभाविक रूप से होता है);
- दृश्य प्रत्यक्षीकरण - चित्र, चार्ट, आलेख, तालिकाओं आदि संबंध में अधिगम;

उपर्युक्त विचारों के आधार पर दृष्टिबाधित बच्चोंहेतु विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए निम्नलिखित योजनाओं को अपनाया जा सकता है:

6 .8.1 गणित

बच्चों को 'समय' की अवधारणा को जानने के लिए, कई वास्तविक जीवन उदाहरण दिए जा सकते हैं। 'आयतन' की अवधारणा को समझने के लिए समूह गतिविधि आयोजित हो सकतीहै। उदाहरण के लिए, दो अलग-अलग आकारकी पानी की बोतल लें और बच्चों को पानी की बोतल में पानी भरने के लिए बोलें। पहली बोतल से तीन गिलासभरेजा सकतेहैं लेकिन दूसरी बोतल से केवल दो ही गिलास भरे जा सकते हैं। परिणामस्वरूप यह निष्कर्ष निकलता है कि पहली बोतल की क्षमता दूसरी बोतल की तुलना में अधिक है।

'धन' की अवधारणा को पढ़ाने से पहले नोट्स तथा विभिन्न आकारों के सिक्कों को पढ़ाया जाना चाहिए। मनोरंजक गतिविधि के माध्यम से धन की अवधारणा को समझाया जा सकता है। ग्राहक तथा दुकानदार जैसे खेलों के माध्यम से बच्चों में धन की अवधारणा विकसित की जा सकती है।यदि बच्चे ऐसे खेलों के माध्यम से पैसों का लेन-देन करेंगे, तो निश्चित रूप से बच्चे धन की अवधारणा समझ पाएंगे। दृष्टिबाधित बच्चा स्पर्शीय विभेदीकरण के माध्यम से नोटों तथा विभिन्न सिक्कों को पहचानने में सक्षम होता है। गणितीय अवधारणाओं को पढ़ाने के लिए विभिन्न इंद्रियों का उपयोग कराना चाहिए।उदाहरण के लिए, श्रवण तथा स्पर्श ज्ञानेन्द्रिय।

6 .8.2 सामाजिक विज्ञान / प्राकृतिक विज्ञान

यथासंभव वास्तविक अनुभव दृष्टिबाधित बच्चों को उपलब्ध कराया जाना चाहिए। 'जड़' के संरचना को समझाने के लिए उखड़े हुए पौधे कोछूनेसे दृष्टिबाधित बच्चेको जड़ के सन्दर्भ में जानकारी प्राप्त हो सकती है। दृष्टिबाधित जीवित तथा मृत पौधे के मध्य अंतर स्पष्ट कर सकते हैं। विभिन्न जानवरों के बीच अंतर करने के लिए, स्पर्श चित्रों या मॉडल के अलावा, दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को विभिन्न जानवरों की आवाजों को पेश किया जाता है। बच्चों को कांच, सोना आदि जैसी विभिन्न प्रकार की सामग्री के बारे में जानकारी विभिन्न संरचनाओं के स्पर्शीय प्रारूप के माध्यम से दी जा सकती है।

न्यायालय, संसद, विधानसभा और सामाजिक विज्ञान से संबंधित अन्य अवधारणाओं को समझाने के लिए विभिन्न रोल-प्ले तथा अन्य तरीकों को अपनाया जा सकता

6 .8.3 भाषा

बच्चे को एक गर्म कप स्पर्श करने के लिए कहा जा सकता है और एक वाक्य बनाने के लिए कहा जा सकता है: 'कप गर्म है' इसी प्रकार, विभिन्न ध्वनियों द्वारा श्रवण इनपुट दिया जा

सकता है। एक दृष्टिबाधित बच्चे के लिए, चित्रों को मौखिक रूप से समझाया जाना चाहिए - जैसे, कौन, कैसे, कहाँ और कब समझ के आधार पर, उन्हें संक्षेप में प्रस्तुत करने में मदद करें, मौखिक जवाब दें। अभिनय, नाट्यीकरण और भूमिका निभाने का प्रयोग बच्चे को बेहतर भाषा समझने में मदद करता है।

6 .9 सारांश

पाठ्यचर्या अनुकूलन एक गतिशील प्रक्रिया (ongolng dynamlc process) है, जो विशेष आवश्यकता वाले छात्रों/छात्राओं के निर्धारित कार्यक्रम को उनकी सीखने की जरूरतों के अनुरूप संशोधित और रूपांतरित (modlfles and adapts) करता है। यह सभी क्षमताओं के शिक्षार्थियों के स्वागत के लिए शिक्षण-अधिगम व्यवस्था को सक्षम बनाता है।

एक समावेशी पाठ्यचर्या विद्यार्थियों कीव्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए विद्यालयों की आवश्यकता को स्वीकार करता है तथा सभी विद्यार्थियों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सक्षम बनाता है। एक समावेशी पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन के लिए स्कूल के स्तर पर शिक्षण योजनाओं, पाठ्य सामग्री, मूल्यांकन प्रक्रिया तथा उपलब्ध संसाधनों में कई परिवर्तन की आवश्यकता होती है।

पाठ्यचर्या अनुकूलन को एक बच्चे के सक्रिय रूप से भाग लेने तथा अवधारणाओं की समझ का प्रदर्शन करने में सभी बच्चों की भागीदारी को अनुसमर्थित करने के स्थान के रूप में देखा जाना चाहिए। अनुकूलन अध्यापक-छात्र/छात्राओं के बीच अन्तः-संबंधों के विभिन्न क्षेत्रों में लाया जा सकता है।उचित रूप से सफलता के लिए सीखने के माहौल के साथ पाठ्यचर्या अनुकूलन को **नौ प्रकार** से विभाजित कर के समझा जा सकता है

- इनपुट
- आउटपुट
- आकार
- पहर
- कठिनाई
- समर्थन का स्तर
- भागीदारी की डिग्री
- वैकल्पिक लक्ष्य
- वैकल्पिक पाठ्यचर्या

6 .10 अभ्यासप्रश्नों के उत्तर

1. (II)
2. (I)
3. (III)
4. (III)
5. (II)
6. (Iv)
7. (Iv)
8. (Iv)

6 .11सन्दर्भ ग्रन्थ सूची तथा उपयोगी पुस्तकें

- ए.आई.सी.बी. (2004). शिक्षक प्रशिक्षण लेखमाला, आल इंडिया कन्फ़ेडरेशनए ऑफ़ दी ब्लाइंड, रोहिणी, दिल्ली
- ए.आई.सी.बी. (2012). दृष्टिबाधा-शिक्षण, आल इंडिया कन्फ़ेडरेशनए ऑफ़ दी ब्लाइंड, रोहिणी, दिल्ली
- शर्मा आर. के. (2014), पाठ्यचर्या अनुदेशन एवं मूल्यांकन, आर लाल बुक डिपो, मेरठ
- Manl, M. N. G. (1992). Technlques of teachlng bllnd chlldren. New Delhl: Sterllng Publlshers Prlvate Llmlted.
- NCERT (2006). Posltlon paper Natlonal focus group ln Educatlon of Chlldren wlth Speclal needs. New Delhl: NCERT
- NCERT (2006). Natlonal Currlculum Framework 2005. Natlonal Councll for Educatlonal Research and Tralnlng, New Delhl.
- SSA (2016). Currlcular Adaptatlons for Chlldren wlth Speclal Needs, Confluence, February 2016, Vol.18. Mlnlstry of Human Resource Development, Govt. of Indla.
- The New Jersey Councll on Developmental Dlsabllltles (2016). Currlculum Modlflcatlons & Adaptatlons, Tools for teachers (15). Retrleved from http://njcdd.org/wp-content/uploads/2016/08/tools-teacherspart2.pdf

- Punanl, B.(2000). Vlsual lmpalrment Handbook. Ahmedabad: Bllnd Peoples Assoclatlon

6.12 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठ्यचर्या अनुकूलन से आप क्या समझते हैं?
2. पाठ्यचर्याअनुकूलन प्रक्रियाओं को लिखिये।
3. पाठ्यचर्या अनुकूलन की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।
4. पाठ्यचर्या अनुकूलन की प्रविधियों को समझाएँ।

इकाई: 7 शैक्षिक रणनीतियाँ (Pedagogical Strategic- Cooperative Learning, Peer Tutoring, Reflective Teaching, Multisensory Teaching)

7 .1 प्रस्तावना

7 .2 उद्देश्य

7 .3 सहकारी अधिगम

7 .4. वयसमूह / सहयोगी अनुशिक्षण

7 .5 चिंतनशील शिक्षण

7 .6 वहुसंवेदी उपागम वहुसंवेदी उपागम की विशेषता

7 .7 सारांश

7 .8 सन्दर्भ

7 .1 प्रस्तावना

Strategy शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द strategia से हुई है, जिसका अर्थ " किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपनायी गयी विशेष कार्य पद्धति होता है "। इस प्रकार सरल शब्दों में बात की जाय तो Pedagogical Strategy (शैक्षिणिक योजना) का तात्पर्य ऐसी कार्यपद्धति तथा नीतियों से है, जिसे शिक्षकों द्वारा अपने शिक्षण अथवा अनुदेशन में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु किया जाता है। उदाहरण स्वरुप किसी भी खेल का खिलाडी अपने विरोधी को पराजित करने हेतु तथा अपनी जीत को सुनिश्चित करने के लिए एक योजना बनाकर उसी पर आगे बढ़ता है। इसी प्रकार शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य में सफलता अर्जित करनी हो तो उसे उचित तथा प्रभावशाली शैक्षणिक योजना बनाकर कार्य करना पड़ता है । यह शैक्षिणिक योजनाएं बालक की विशिष्टता (विकलांगतता) तथा विषय वस्तु की प्रकृति पर निर्भर करती है । शिक्षक को दिव्यांग बालकों की अधिगम सम्बन्धी समस्याओं की पहचान तथा उनके रोकथाम हेतु उचित अभ्यास कराने की जरुरत होती है । जैसे - अगर कोई दृष्टिहीन बालक हाथ की उँगलियों की गलत गति के

कारण ब्रेल पठन में गलती करता है तो उसको विशिष्ट शिक्षक द्वारा संसाधन युक्त विशिष्ट कक्ष में उचित विधियों का अभ्यास कराकर दूर किया जा सकता है।

इ स्टोन्स तथा मौरिस (1972) की पुस्तक Teaching Practice – Problems and Perspectives के अनुसार - शैक्षिणिक योजना को परिभाषित करते हुए कहा गया है की "शैक्षिणिक योजना से तात्पर्य किसी पाठ के शिक्षण हेतु अपनायी गयी उस सामान्यीकृत योजना से है , जिसमें संरचना , अनुदेशात्मक उदेश्यों के रूप में वांछित विद्यार्थी व्यवहार तथा व्यूह रचना को प्रयोग में लाने के लिए आवश्यक युक्तियों की रुपरेखा का समावेश हो "।

इस प्रकार शैक्षिणिक योजना में तीन स्तर पर कार्य करने की आवश्यकता होती है-

१. सामान्य अनुदेशन पर (विद्यार्थी की आवश्यता के अनुसार योजनाएं)

२. शिक्षण अधिगम प्रारूप पर (पाठ्य से सम्बंधित योजनाएं)

३, शिक्षण विधियों के प्रारूप पर (पढ़ाने के तरीके / अनुदेशन सम्बन्धी योजनाएं)

7 .2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप :

1. सहकारी अधिगम के बारे में जान सकेंगे।
2. वयसमूह / सहयोगी अनुशिक्षण के बारे में जान सकेंगे।
3. चिंतनशील शिक्षण के बारे में जान सकेंगे।
4. वहुसंवेदी उपागम के बारे में जान सकेंगे।

7 .3 सहकारी अधिगम (Cooperative Learning)

सहकारी अधिगम एक ऐसी अधिगम प्रक्रिया है जिसमे एक जैसे योग्यता वाले बालक समूह बनाकर एक ही उद्देश्य का प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। वे समस्याओं के समाधान एवं कार्य संपादन में एक दूसरे के पूरक बनते हैं तथा एक दूसरे का सहयोग करते हैं। सहकारी शिक्षण शिक्षार्थियों को शैक्षिक योग्यता के साथ साथ उनकी दक्षता को भी विकसित करने महत्वपूर्ण योगदान देती है। जैसे: सुनना, प्रश्न पूछना , उत्तर देना , प्रश्नो को हल करने में सुझाव देना, एक दूसरे की मदद करना इत्यादि।

सहकारी अधिगम को एक ऐसी शिक्षण अधिगम योजना के रूप में परिभाषित किया जा सकता है "जिसमें एक कक्षा के विद्यार्थी अपने आपको छोटे- छोटे विभिन्न समूहों (जिनमें से प्रत्येक में विभिन्न योग्यता स्तर के काम विद्यार्थी शामिल हों) में बांटकर प्रतिस्पर्धा रहित अधिगम वातावरण में सहकारी ढंग से परस्पर सहयोग द्वारा विषय से सम्बंधित अधिगम अर्जन में प्रयत्नशील रहते हैं।"

सहकारी अधिगम में शिक्षक की भूमिका गौण होती है, तथा छात्र की क्रियाएं प्रमुख होती हैं। इस अधिगम प्रक्रिया में अध्यापक योजनाकर्ता एवं मूल्याँकनकर्ता का कार्य करता है। सहकारी अधिगम में शिक्षक का कार्य निम्नलिखित होता है -

1. शिक्षक यह सुनिश्चित करे कि बालक अपने अधिगम का उत्तरदायित्व स्वयं ले।
2. शिक्षक यह सुनिश्चित करे कि समूह के प्रत्येक छात्र सिखने में एक दूसरे कि मदद करें।
3. शिक्षक को समूह के सदस्यों के मध्य होने वाले वार्तालाप पर निगरानी रखनी चाहिए।
4. शिक्षक को ध्यान देना चाहिए कि प्रत्येक सदस्य के अंदर सामाजिक कौशलों का विकास हो सके।

सहकारी अधिगम के उद्देश्य –

सहकारी अधिगम के निम्नलिखित उद्देश्य हैं -

1. बालक को सहकारी अधिगम की अवस्था में विशिष्ट आवश्कयताओं को पूरा करने का अवसर प्रदान करना।
2. विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बालकों के लिए सिखने हेतु उचित एवं उपयुक्त वातावरण प्रदान करना।
3. परस्पर सहयोग और मदद के माध्यम से समस्या निदान के क्षमताओं का विकास करना।
4. दिव्यांग बालकों को स्व उत्तरदायित्व समझने हेतु प्रोत्साहित करना।
5. सामान्य तथा दिव्यांग बालकों के बीच सकारात्मक वातावरण का विकास करना।
6. अधिगम समूह के प्रत्येक सदस्यों के बीच समाजीकरण तथा सामाजिक वातावरण काविकास करना।

सहकारी अधिगम के लिए दिशा निर्देश -

शिक्षक को सहकारी अधिगम प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए निम्नलिखित निर्देशों का पालन करना चाहिए-

1. अध्यापक को पाठ्यवस्तु के उद्देश्यों को स्पष्ट करना चाहिए।
2. बालकों को समूह में विभाजित करना चाहिए।
3. समूह में छात्रों की संख्या कम रखना चाहिए।
4. छात्रों को ऐसा वातावरण प्रदान करना चाहिए कि उनके बीच ज्यादा नजदीकी या दुरी ना हो
5. समूह के प्रत्येक सदस्यों की भूमिका सुनिश्चित करना चाहिए।
6. प्रत्येक समूह के लिए नेता का चयन करना।
7. समूह के सदस्यों की भूमिका समय समय पर बदलते रहना चाहिए।
8. प्रत्येक समूह का कार्य सुनिश्चित करे तथा कार्य सम्पादन हेतु उचित आवश्यक सहायक सामग्री प्रदान करना चाहिए।

9. प्रत्येक सदस्य तथा समूह की व्यक्तिगत जिम्मेदारी निश्चित करना चाहिए।
10. प्रत्येक समूह के मध्य परस्पर वार्तालाप की रुपरेखा सुनिश्चित करना चाहिए।

सहकारी अधिगम के लाभ - सहकारी अधिगम के लाभ निम्नलिखित है :-

1. यह दिव्यांग बालकों के साथ- साथ सामान्य बालकों के अधिगम में भी सहायक होता है।
2. यह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में बालकों में अधिगम के प्रति व्यक्तिगत जिम्मेदारी को प्रोत्साहित करता है ।
3. दिव्यांग बालकों के समाजीकरण में सहायक होता है ।
4. यह विशिष्ट के लिए सुविधाजनक तथा उपयुक्त होता है ।
5. सहकारी अधिगम के माध्यम से बालकों में व्याप्त विविधताओं को स्वीकार किया जाता है।
6. दिव्यांग बालकों तथा सामान्य बालकों में सम्प्रेषण कौशलों का विकास होता है ।
7. सहकारी अधिगम में समूह सदस्य परस्पर वार्तालाप करते हैं, तथा इन वार्तालापों से नयी नयी अवधारणओं का जन्म होता है, जो कि ज्ञानात्मक विकास में अतिमहत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सहकारी अधिगम कि सीमाएं -

1. सहकारी अधिगम में समूह को नियोजित संगठित करने में बहुत समय लगता है ।
2. सहकारी अधिगम में मार्गदर्शन तथा निर्देशन का समुचित उपयोग होना जरुरी है, क्योंकि बिना इसके सहकारी अधिगम सफल नहीं हो सकता है ।
3. सहकारी अधिगम में शामिल शिक्षक के पास समूह में शामिल छात्रों की व्यक्तिगत क्षमताओं का पता होना चाहिए, ताकि उसके अनुरूप कार्य का विभाजन किया जा सके।
4. सहकारी अधिगम में शामिल शिक्षक के पास नेतृत्व की पहचान करने, मार्गदर्शन तथा निर्देशन की भरपूर क्षमता होनी चाहिए, वरना यह अपने उदेश्यों को प्राप्त करने में विफल को सकता है।

7 .4 वसमूह / सहयोगी अनुशिक्षण (Peer Tutoring)

वयसमूह / सहयोगी अनुशिक्षण में एक छात्र द्वारा दूसरे छात्र को अनुदेशित किया जाता है, या अधिगम की प्रक्रिया की जाती है। इसमें एक छात्र जो वरिष्ठ हो या उस विषयवस्तु का विद्वान हो , उसके द्वारा अध्यापक की भूमिका निभाई जाती है तथा अधिगमकर्ता भी उसका समवय छात्र होता है , जिसके द्वारा निर्देशन ग्रहण किया जाता है । यह प्रक्रिया विद्यालयों में समावेशन को बढ़ावा देने वाली होती है । सहयोगी अनुशिक्षण दिव्यांग बालकों की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सहायक होते हैं तथा विशिष्ट बालकों को निदनात्मक तथा सहयोगात्मक निर्देशन देने में उपयोग किया जाता है। इस अनुशिक्षण में निर्देशन देने वाले छात्र का भी कोई न कोई सहयोगी होता है यानि बालक एक दूसरे को पढ़ाते हैं। समावेशन में सहायक होने के बावजूद भी इस अनुशिक्षण प्रक्रिया का प्रयोग भारत में कम किया जाता है ।

सहयोगी अनुशिक्षण को परिभाषित करते हुए कहा जा सकता है की - "सहयोगी/ समवय/वयसमूह अनुशिक्षण वह निर्देशात्मक स्थिति है, जिसमें समकक्ष उत्कृष्ट बालक अपने से छोटे या निम्न स्तर के बालकों का अनुदेशन करते हैं।"

अर्थात दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है की समआयु अनुशिक्षण वह निर्देशन होता है , जिसमें अनुशिक्षण प्रक्रिया समान आयु स्तर के बालकों का अनुदेशन एक दूसरे द्वारा किया जाता है। यह अनुशिक्षण मुख्यतः वर्तनी , हस्तलेखन , प्रारंभिक अंकगणित तथा सामजिक व्यवहार सिखाने हेतु प्रयोग में लाया जाता है।

सहयोगी अनुशिक्षण के उद्देश्य - सहयोगी अनुशिक्षण बालकों के मनोवैज्ञानिक तथा सामजिक व्यवहार अर्जन से सम्वन्धित है अतः इसके उद्देश्यों में सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों के ज्ञानात्मक पहलुओं को शामिल किया गया है -

1. ज्ञानात्मक क्षेत्र - बच्चों में ज्ञानात्मक कौशलों का विकास करना। जैसे - प्रारम्भिक अंकगणित, वर्तनी सम्बन्धी जानकारी , हस्तलेखन इत्यादि।
2. सामाजिक क्षेत्र - बालकों में सामाजिक व्यवहारों को सुधारना तथा विकसित करना। जैसे - भाईचारा , सहयोग , परस्पर सम्मान की भावना का विकास करना इत्यादि।
3. मनोवैज्ञानिक क्षेत्र - बालकों में मनोवैज्ञानिक गुणों को समझना तथा उसे परिपक्क बनाना। जैसे - सीखने में विविधता , सम्प्रत्य स्तर, बुद्धि स्तर इत्यादि।

Note-सहयोगी अनुशिक्षण के उद्देश्य भले ही कुछ भी हो, परन्तु इसे कक्षा शिक्षण के प्रतिस्थापक के रूप में प्रतिपादित नहीं किया जा सकता है, और ना ही तो सहयोगी अनुशिक्षक को नियमित अध्यापक के प्रतिस्थापक के रूप में समझना चाहिए। इसमें अनुशिक्षक मात्र और मात्र निदनात्मक निर्देशन कर छात्र के सहयोगी की भूमिका में होता है , शिक्षक के रूप में नहीं।

सहयोगी अनुशिक्षण की प्रक्रियाएं - सहयोगी अनुशिक्षण में अनुशिक्षक के द्वारा मुख्यतः तीन प्रक्रियाओं को अपनाया जा सकता है-

देखकर करने की प्रक्रिया -- देखकर करने की प्रक्रिया एक नियमित प्रक्रिया होती है, जो कार्य सम्पादन से जुडी होती है। प्रारम्भ में निर्देशित छात्र उस कार्य को देखकर करता है, परन्तु बाद में उस कार्य को निर्देशित छात्र को स्वयं करना पड़ता है। इस प्रक्रिया द्वारा सीखने में सामान्यतः विद्यार्थियों को कोई परेशानी नहीं होती है। इस प्रक्रिया में अनुशिक्षक का पहला काम यह होता है कि पाठ्य वस्तु को छोटे - छोटे चरणों में विभाजित करे फिर उसे पढ़ाएं तथा विभाजित पाठ्यवस्तु का निरूपण इस प्रकार से करें कि निर्देशित छात्र उसके सभी चरणों को आपस में जोड़ सके। अनुशिक्षक का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य इस प्रणाली में यह है कि उसके द्वारा विभाजित पाठ्य वस्तु के चरणों की

श्रृंखला को विद्यार्थी क्रमशः पूरा करे, यानि जिस चरणों में पाठ्यवस्तु का विभाजन हुआ है उसी क्रमबद्ध चरणों में वह उस कार्य को पूरा करे।

परीक्षण -शिक्षण परीक्षण प्रक्रिया - इस प्रक्रिया में अनुशिक्षक को तीन चरणों में कार्य करना पड़ता है। सर्वप्रथम अनुशिक्षक को तीन चरणों में कार्य करना पड़ता है। सर्वप्रथम अनुशिक्षक इस बात का परीक्षण करता है कि निर्देशित छात्र उस नियत कार्य (सीखने वाली पाठ्य बिंदु) को कर सकता है या नहीं। अगर निर्देशित छात्र असफल होता है तो अनुशिक्षक द्वारा उसके द्वारा किये गए कार्यों का विश्लेषण करता है, तथा उसके गलती या कठिनाई का पता लगाता है। दूसरा चरण निर्देशात्मक होता है , इसमें अनुशिक्षक निर्देशित छात्र की गलतियों को दूर करने के लिए निर्देशन देता है। इसके लिए वह देखकर करने की प्रक्रिया को भी अपना सकता है। तृतीय तथा अंतिम चरण में अनुशिक्षक यह परीक्षण करता है कि निर्देशित छात्र कि समस्या समाप्त हुई या नहीं। अगर निर्देशित छात्र पुनः गलती करता है तो अनुशिक्षक इसी चरणों का पुनरावर्तन करता है और तब तक करता है, जब तक उसके परीक्षण का परिणाम सकारात्मक नहीं आ जाता।

युग्म अनुदेशन प्रक्रिया - इस प्रक्रिया में अनुशिक्षक तथा विद्यार्थी दोनों शामिल होते हैं तथा दोनों ही क्रियात्मक हिस्सेदारी निभाते हैं। सर्वप्रथम अनुशिक्षक पाठ्य वस्तु को अलग अलग भागों में विभाजित करता है। पाठ्य वस्तु के प्रथम भाग का कार्य अनुशिक्षक द्वारा सम्पन्न किया जाता है , उसका अनुकरण करते हुए निर्देशित छात्र पाठ्यवस्तु के दूसरे भाग का कार्य करता है। अनुशिक्षक द्वारा पुनः तृतीय भाग का कार्य सम्पादित किया जाता है तो विद्यार्थी द्वारा चौथे भाग का यह कार्य तब तक किया जाता है , जब तक पाठ्यवस्तु समाप्त नहीं हो जाता है। जैसे पाठ्यवस्तु के किसी गद्यांश का पहला अनुच्छेद अनुशिक्षक द्वारा बोल बोल कर पढ़ा गया, ताकि उसका अनुकरण छात्र कर सकें। पुनः अगला अनुच्छेद छात्र द्वारा पढ़ा जायेगा। यह प्रक्रिया तब तक चलेगा जब तक की उपुक्त गद्यांश समाप्त नहीं होता।

इस प्रणाली में निर्देशित छात्र अनुशिक्षक के व्यवहारों का अनुकरण करता है तथा उसे अपने व्यवहार में ढालने की कोशिश करता है। यह प्रणाली तभी सफल होती है जब अनुशिक्षक तथा निर्देशित बालक की योग्यता लगभग समकक्ष हो तथा पाठ्यवस्तु का स्तर उच्च हो।

अनुशिक्षक द्वारा विद्यार्थी को निर्देशित करने के उपाय :-

अनुशिक्षक निर्देशित छात्र का निर्देशन इन चार प्रकार के कार्यों से कर सकता है -

1. **निरक्षण** - निर्देशित छात्र के व्यवहार तथा ज्ञान स्तर का उचित निरिक्षण करके।
2. **पुनर्बलन** - अनुशिक्षक निर्देशित बालक को सही कार्य संपादन पर प्रोत्साहन देता है तथा गलती करने पर उसकी कमियों की तरफ ध्यान दिलाता है।

3. **नमूना विधि** - किसी विशेष प्रकार की गलती को ध्यान में रखते हुए उसे दूर करने का ढंग बताता है। जैसे किसी कठिन शब्द का उच्चारण।
4. **व्याख्या विधि** - संपूर्ण पाठ्य वस्तु का उदाहरणों तथा प्रसंगो सहित विश्लेषण करता है।

सहयोगी अनुशिक्षण के लिए दिशा निर्देश

1. अनुशिक्षक तथा निर्देशित छात्र का आपसी तालमेल होना जरूरी होता है।
2. अनुशिक्षक द्वारा निश्चित विषयवस्तु में छात्र की कमजोरी खोजनी चाहिए।
3. अनुशिक्षक को विद्यार्थिओं की समस्या तथा गलतियों में सुधार हेतु सुझाव देना तथा उचित अभ्यास कराना चाहिए।
4. समुचित शिक्षण सामग्री तथा कार्य पुस्तिका का निर्माण अनुशिक्षक को करना चाहिए।
5. अनुशिक्षक को नियमित अध्यापक द्वारा सुझाव , प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए।

सहयोगी अनुशिक्षण के लाभ -

1. यह दिव्यांग तथा सक्षम दोनों प्रकार के बालकों के लिए लाभकारी होती है।
2. यह प्रणाली अनुशिक्षक तथा निर्देशित बालक दोनों की क्षमताओं का विकास करती है।
3. सहयोगी अनुशिक्षण नियमित शिक्षक को विषय वस्तु से सम्बन्धित कार्यक्रम गतिविधियों तथा TLM तैयार करने में मदद करती है,क्योंकि वह अनुशिक्षक की सहायता ले सकता है।
4. इस शिक्षण के माध्यम से पिछड़ें छात्रों पर शिक्षक तथा अनुशिक्षक दोनों मिलकर ध्यान तथा निर्देशन दे सकते हैं अतः विशेष आवश्यकता वाले बालकों का ज्यादा से ज्यादा विकास हो सकता है।
5. विषय वस्तु को निश्चित / नियत समय पर पूर्ण करने में सहायक होती हैं
6. सहयोगी अनुशिक्षण में प्रत्येक बालक को एक दूसरे कमजोरी तथा मजबूत विषय बिन्दू की जानकारी होती है। अतः इस प्रणाली द्वारा सभी मिलकर काम करते हैं तो कक्षा के सभी बालकों का विकास संभव होता है।
7. यह सक्षम तथा दिव्यांग विद्यार्थियों के बीच सकारात्मक संचार को प्रोत्साहित कर सहयोगात्मक वातावरण को बढ़ावा देता है।
8. सहयोगी अनुशिक्षण व्यक्तिगत सम्बन्धो , व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता और परिणामों के प्रति साझा उतरदायित्व के दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है
9. यह अधिगम वातावरण को प्रतिस्पर्धात्मक बनाता है, जिसके परिणामस्वरुप प्रत्येक बालक का विकास संभव होता है ।

सहयोगी अनुशिक्षण की सीमाएं -

1. अनुशिक्षक को प्रवंधन तथा अनुदेशन का कार्य स्वयं करना पड़ता है , जो कि उसके लिए कठिन होता है।
2. अनुशिक्षक को जब एक से अधिक छात्रों को एक साथ निर्देशित करना पड़ता है तो वह मुश्किल होता है, तथा सहयोगी अनुशिक्षण असफल हो जाता है।

3. अनुशिक्षक तथा छात्र के बीच सम्बन्ध अच्छे नहीं होने पर यह अनुशिक्षण असफल हो जाता है।
4. अनुशिक्षक को अपने नियत विषय वस्तु तथा निर्देशन में दक्ष होना जरुरी होता है।
5. अनुशिक्षक को समय समय पर नियमित शिक्षक से निर्देशन सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करना लाभदायक होता है।

7 .5 चिंतनशील शिक्षण (Reflective Teaching)

चिंतन एक मानसिक प्रक्रिया होती है, जो कि सभी प्राणियों में होती है। कुछ विद्वानों ने इसे वातावरण से मिलने वाली सूचनाओं (Information) का मानसिक जोड़ - तोड़ (mental manipulation) बताया है , तो कुछ लोगों के मतानुसार यह किसी समस्या (उद्दीपन) तथा उसका समाधान (सही अनुक्रिया) के मध्य होने वाली मध्यस्थ प्रक्रिया है। अर्थात यह एक मानसिक प्रक्रिया है, इसके बारे में हम व्यवहारों के आधार पर परोक्ष रूप से ही जान पाते हैं।

कागन तथा हेभमैन (Kagan & Haveman , 1976) के अनुसार - " प्रतिमाओं , प्रतीकों , संप्रत्ययों, नियमों, तथा अन्य मध्यस्थ इकाइयों के मानसिक जोड़ - तोड़ को चिंतन कहा जाता है।"

चिंतनशील शिक्षण का अर्थ - उपरोक्त विवरण के आधार पर साधारण अर्थों में कहा जा सकता है कि चिंतनशील शिक्षण , शिक्षण व्यूह का ऐसा स्वरुप होता है, जिसमे विद्यार्थी अपनी मानसिक जोड़ तोड़ की प्रक्रिया से शिक्षा ग्रहण करता है। इस शिक्षण में अधिगमकर्ता स्वयं निरक्षण करता है, स्वयं खोज करता है तथा स्वयं ही ज्ञान की प्राप्ति भी करता है। अर्थात

" चिंतनशील शिक्षण वह शिक्षण है, जिसमें विद्यार्थी स्वयं उद्दीपन तथा घटनाओं के प्रतीकात्मक चित्रण द्वारा किसी समस्या का समाधान करता है, अथवा नए ज्ञान की खोज करता है।"

अर्थात १. chintanचिंतनशील अध्ययन में प्रतीकों (Symbols) तथा प्रतिमानों (images) आदि का मानसिक जोड़ तोड़ विद्यार्थी द्वारा किया जाता है , यानि इस शिक्षण में वस्तुओं की वास्तविक उपस्थिति अनिवार्य नहीं होती है। शिक्षार्थी पूर्वज्ञान के आधार पर उन वस्तुओं का प्रतिक या प्रतिमान में बनाता है और उसी आधार पर उसके शिक्षण की शुरुवात होती है।

२. चिंतनशील अध्यनन उद्दीपन (समस्या) तथा उसके प्रति की गयी सही अनुक्रिया की प्रक्रिया है।

चिंतनशील शिक्षण के चरण -

चिंतनशील शिक्षण की शुरुआत शिक्षार्थी तब करता है , जब उसके सामने कोई समस्या आती है, तथा वह उसका समाधान करना चाहता है।

1. चिंतनशील शिक्षण में बालक के सामने, समस्या के भिन्न भिन्न पहलूओं, जिनका समाधान अलग अलग पूर्व में हुआ है, उन सबको एक साथ संयोजित कर निरूपित किया जाता है।
2. चिंतनशील शिक्षण में गत अनुभूतियाँ (past experience) सम्मिलित होती है, लेकिन वास्तव में इन अनुभूतियाँ का प्रयोग किस ढंग से करना है, इसका दिशा निर्देश अध्यापक को देना होता है , हालाँकि यह शिक्षक के लिए भी अति कठिन कार्य होता है।
3. चिंतनशील शिक्षण में प्रयत्न या भूल (Trial and Error) की प्रक्रिया होती है । प्रत्येक चिंतन का उद्देश्य समस्या समाधान होता है और कोई भी समस्या समाधान एक ही बार के प्रयास में होना संभव नहीं है, अतः चिंतनशील अध्ययन में बालक को बार बार अभ्यास करने की जरुरत पड़ती है । चिंतनशील शिक्षण में बालक किसी समस्या समाधान में गलत अनुक्रियाओं को छोड़ते जाता है , तथा सही अनुक्रियाओं को लेकर आगे बढ़ता है।
4. चिंतनशील शिक्षण में अभिप्रेरणा का विशेष महत्व होता है । विटेकर ने कहा है कि सभी चिंतन लक्ष्य निर्देशित होते हैं । अतः इस शिक्षण प्रणाली में शिक्षक को बालक को सही अनुक्रिया करने हेतु अभिप्रेरित करते रहना चाहिए तथा सही अनुक्रिया करने पर पुनर्बलन (Reinforcement) जरूर देना चाहिए ।
5. चिंतनशील शिक्षण में बालक आंतरिक सम्भाषण (Internal Speech) करता है , अतः बालक में भाषा का समुचित विकास होना चाहिए, जिसके आधार पर वह अपने , अनुभूतियों मध्यस्थ क्रियाओं की श्रृंखला तैयार कर सके ।

चिंतनशील शिक्षण में शिक्षक की भूमिका –

1. शिक्षक को चाहिए कि वह अपने छात्रों को किसी भी विषय पर अपने विचार , अपनी सोच , तथा अपना दृश्टिकोण रखने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करे । उन पर अपने किसी भी प्रभाव का दबाव न बनायें ।
2. शिक्षक को चाहिए कि वह छात्र को किसी विषयवस्तु को समझकर तथा सूझ के आधार पर सिखने के लिए प्रेरित करे । इससे छात्रों में यथार्थवादी चिंतन प्रवृति का विकास होता है । जो कि चिंतनशील शिक्षण की भूमिका तैयार करता है ।
3. शिक्षक को छात्रों को उचित स्नेह देना चाहिए तथा अपनी दमनकारी प्रवृतियों को काम करना चाहिए।
4. चिंतनशील शिक्षण में चिंतन के साधनों का काफी महत्व है,, अतः इन साधनों (भाषा , सम्प्रत्यय आदि) का उचित विकास , शिक्षक द्वारा छात्र के अंदर किया जाना चाहिए।
5. चिंतन की प्रक्रिया का सम्बन्ध जिज्ञासा से होता है । इस बात की पुष्टि Reilly १९९० () ने अपनी अध्ययन में किया है, अतः शिक्षक को चाहिए की छात्रों में विषयवस्तु को लेकर जिज्ञासा उत्पन्न करे तथा उसे यथासंभव बनाये रखे तथा समय समय पर उत्प्रेरित करते रहे ।

6. बालकों को शिक्षण अधिगम के दौरान चिंतन को विकसित करने वाले खिलौनों , उत्प्रेरक कहानियों तथा पहेलियों इत्यादि का प्रयोग शिक्षण अधिगम उपकरण के तौर पर करना चाहिए।
7. शिक्षक को क्लासरूम में बच्चों को नए नए तथ्यों तथा नवीन अनुसंधानों की जानकारी देनी चाहिए।
8. शिक्षक को छात्रों के समक्ष कुछ जटिल समस्याओं को उपस्थित करना चाहिए तथा उनका हल ढूढने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
9. शिक्षक को नए नए वैज्ञानिक तरीकों से छात्र के अंदर सम्प्रत्यय का विकास करे , तथा शिक्षक को स्वयं करके सीखने हेतु अभिप्रेरित करना चाहिए।

7 .6 बहुसंवेदी उपागम (Multisensory approach)

व्यक्ति के ज्ञान का द्वार उसकी ज्ञाननेन्द्रियां ही हैं। व्यक्ति अपनी ज्ञाननेंद्रियों का प्रयोग जितना प्रभावी तरीके से कर पायेगा, उसका शिक्षण अधिगम उतना ही प्रभावी होगा। शिक्षण अधिगम के बेहतर परिणाम के लिए आवश्यक है की इस प्रक्रिया में एक से ज्यादा ज्ञाननेद्रियाँ प्रयोग में लायी जाये। शोध में यह भी पाया गया की अधिगम उस अवस्था में अधिकतम होती है जब बालक शैक्षिक क्रिया में एक से अधिक ज्ञाननेंद्रिय का प्रयोग करता है।

बहुसंवेदी उपागम मे शिक्षण अधिगम के लिए एक से अधिक ज्ञाननेंद्रिया का प्रयोग किया जाता है। जैसे श्रवण, दृश्य, किनएस्टेटिक (kinesthetic) . अर्थात वहुसंवेदी से अभिप्राय एक से अधिक ज्ञाननेंद्रिया का एक साथ प्रयोग करना है।

Multisensory approach वहुसंवेदी उपागम को VAKT approach के नाम से भी जाना जाता है, इसमें V का अर्थ है Visual (दृश्य), A का अर्थ है Auditory (श्रवण), K का का अर्थ है Kinesthetic (किनेस्थेटिक)

VAKT approach का महत्व तब और भी अधिक बढ़ जाता है, जब व्यक्ति की किसी एक ज्ञानेन्द्रिय के प्रयोग में कठिनाई हो या पूरी तरह से अभाव ह

वहुसंवेदी उपागम की विशेषता - बहुसंवेदी उपागम की निम्नलिखित विशेषताएं हैं-

1. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अधिक से अधिक शिक्षण अधिगम सामग्री, उपकरणों तथा शिक्षण तकनीक का उपयोग करना।
2. वहुसंवेदी उपागम शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं परिणाम को बेहतर बनाता है।
3. निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उचित एवं उपयुक्त संसाधनों का चुनाव एवं उनका प्रयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

4. बहुसंवेदी उपागम के तहत उन्हीं संसाधनों का प्रयोग करना चाहिए जिससे बेहतर परिणाम मिल सके।
5. इस प्रक्रिया में इस बात का भी ध्यान रखना आवश्यक हो जाता है की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में किस ज्ञाननेंद्रिय का अधिक अधिक से प्रयोग करना है।

हर दृष्टिबाधित बालक अपने आप में विलक्षण होता है, इसलिए बहुसंवेदी संसाधनों का प्रयोग दृष्टिबाधित बालक की विशिष्ट आवश्यकता की अनुसार होना चाहिए।

बहुसंवेदी उपागम की प्रकृति एवं उद्देश्य -

1. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।
2. वहुसंवेदी चरणों का आयोजन सही क्रम में होना चाहिए।
3. अधिगम अनुभवों को इस प्रकार सुनियोजित करना जिससे बालक स्वयं अधिगम की लिए सक्रिय हो सके।
4. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को इस प्रकार सुनियोजित करना जिससे की दृष्टिबाधित बालक संपूर्ण पाठ्यसूचि को आसानी से समझ सके। यह दृष्टिबाधित बालक में स्वयं द्वारा सिखने की क्षमता को विकसित करने में सहायक होगी।
5. उन बहुसंवेदी साधनो का प्रयोग करना जिससे की शिक्षण अधिगम की उद्देश्यों को सरलता से प्राप्त किया जा सके।

वहुसंवेदी उपागम के प्रयोग के चरण - शिक्षण अधिगम के निश्चित उदेश्यों को प्रभावशाली तरीके से प्राप्त करने में वहुसंवेदी उपागम मदद करता है । जिनको निम्नलिखित चरणों में विभाजित किया जा सकता है।

प्रथम चरण - प्रथम चरण में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का प्रारम्भ सर्वप्रथम अध्यापक द्वारा किया जायेगा। निश्चित शिक्षण अधिगम उदेश्यों को ध्यान में रखकर पूरी तरह से तैयार शिक्षण अधिगम सामग्री को अध्यापक दृष्टिबाधित बालकों के सामने प्रस्तुत करेंगें। अधिगम बिंदुओं को विभिन्न शैक्षणिक तकनीकों जैसे व्याख्यान विधि, प्रश्न उत्तर विधि आदि विधियों से दृष्टिबाधित बालकों के सामने प्रस्तुत किया जायेगा। अल्प दृष्टिबाधित बालकों के लिए रंगीन चार्ट पेपर, पिक्चर ग्राफ तथा पूर्ण दृष्टिबाधितो के लिए ऑडियो टेप का प्रयोग किया जा सकता है।

द्वितीय चरण में दृष्टिबाधित बालकों को स्वयं करके सिखने की क्षमता के विकास के लिए अध्यापक द्वारा उचित सहयोग एवं मार्गदर्शन एवं सहयोग दिया जायेगा

तृतीय चरण में दृष्टिबाधित बालक सीखे गए अनुभवों की अभिव्यक्ति करता है। यह प्रक्रिया बालक के सीखे गए स्तर का मूल्यांकन करने में अध्यापक की मदद करती है।

चतुर्थ चरण में दृष्टिबाधित बालकों को यह अवसर दिया जाता है कि वह अध्यापक द्वारा सिखाये गए अनुभवों को दैनिक जीवन में प्रयोग कर पाए।

लाभ

1. शिक्षण प्रक्रिया को उद्देश्यपूर्ण, प्रभावशाली एवं रुचिपूर्ण बनता है।
2. बहुसंवेदी शिक्षण प्रक्रिया विद्यार्थी को शिक्षण एवं अधिगम के नए नए कौशलों को सिखने का अवसर प्रदान करता है।
3. बहुसंवेदी शिक्षण विद्यार्थी की शैक्षिणिक, बौद्धिक एवं मनोवैजानिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।
4. बहुसंवेदी उपागम विद्यार्थी को इस योग्य बनाती है जिससे वह अधिक से अधिक आत्मनिर्भर बन सके। यह उपागम उसकी निर्भरता को कम करने में सहयोग देती है।

7 .7 सारांश

शिक्षक को अपने शिक्षण कार्य में सफलता अर्जित करनी हो तो उसे उचित तथा प्रभावशाली शैक्षणिक योजना बनाकर कार्य करना पड़ता है। यह शैक्षिणिक योजनाएं बालक की विशिष्टता (विकलांगतता) तथा विषय वस्तु की प्रकृति पर निर्भर करती है। शिक्षक को दिव्यांग बालकों की अधिगम सम्बन्धी समस्याओं की पहचान तथा उनके रोकथाम हेतु उचित अभ्यास कराने की जरुरत होती है। जैसे - अगर कोई दृष्टिहीन बालक हाथ की उँगलियों की गलत गति के कारण ब्रेल पठन में गलती करता है तो उसको विशिष्ट शिक्षक द्वारा संसाधन युक्त विशिष्ट कक्ष में उचित विधियों का अभ्यास कराकर दूर किया जा सकता है। इस इकाई में अपने विभिन्न शैक्षिक रणनीतियों के बारे में विस्तार से अध्ययन किया।

7 .8 संदर्भ ग्रन्थ (References)

1. Putnam, J.W. (1998). The Process of Cooperative Learning . In J.W. Putnam (Ed.), Cooperative Learning and Strategies for Inclusion: Celebrating diversity in the classroom. Baltimore : Paul H. Brookes.
2. Cox, R. Penny. Dykes, K. Mary. (2001).Teaching Exceptional Children, Volume 33, No.6. pp.68-74
3. Responding to Children with Special Needs- A Manual Planning and Implementation of Inclusive Education in Sarva Shiksha Abhiyan (2003).
4. Mangal S.K., Mangal Uma (2011). Essentials Of Educational Technology. PHI Learning Private Limited.

5. Punani, B and Rawal, N. 2000, Visual Impairment Handbook, Blind People's Association: Ahmedabad, India
6. Rehabilitiation Council of India , 2000. Status Of Disbaility in India , New Delhi India.
7. Rehabilitiation Council of India , 2012. Status Of Disbaility in India , New Delhi India.
8. Wall, K. 2004. Special Needs and Early Years, A Practitioner's Guide,
9. Sage Publications, India.
10. UNESCO, 2001. Open file on Inclusive Education, Support Materials
11. for Managers and administrators, Paris, UNESCO.
12. Puri, M and Abraham, G.Eds. 2004. Handbook of Inclusive Education for
13. Educators, Administrators and Planners, Sage Publication, New Delhi.
14. Meeting Special Needs in School, A Manual. NCERT, New Delhi .

इकाई- 8 पाठ्यचर्या मूल्यांकन

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की संकल्पना
1.4 पाठ्यचर्या निर्माण के चरण
1.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उद्देश्य
1.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार
1.7 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता
1.8 पाठ्यचर्या मूल्यांकन का महत्व
1.9 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण
1.10 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की तकनीकें
1.11 सारांश
1.12 शब्दावली
1.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.14 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
1.15 निबंधात्मक प्रश्न

8 .1 प्रस्तावना

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक में निहित शक्तियों को जागृत कर उन्हें चरमोत्कर्ष पर ले जाना है। इसके द्वारा उसके व्यवहार में ऐसा परिवर्तन लाना है कि भविष्य की कठिनाइयों का सामना वह आसानी से कर जीवन को सरल तथा सहज बना सके। शिक्षा मात्र जानकारी प्राप्त करना नहीं बल्कि प्राप्त ज्ञान को कक्षा से इतर वास्तविक जीवन एवं वास्तविक परिस्थितियों में व्यवहार में लाना भी है। इस हेतु शिक्षा के कुछ लक्ष्य एवं उद्देश्य हैं। पाठ्यचर्या के माध्यम से यह प्रयास किया जाता है कि विद्यार्थी उन लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें। लक्ष्यों और उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि पाठ्यचर्या के विभिन्न पथों एवं क्रियाकलापों में वे सन्निहित हो। पाठ्यचर्या बालक में उन शक्तियों, उन गुणों को जागृत करने में तथा भविष्य के लिए तैयार करने में सक्षम है, यह जानने हेतु पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक है। प्रस्तुत इकाई में पाठ्यचर्या मूल्यांकन से सम्बंधित विभिन्न बिन्दुओं का अध्ययन किया जाएगा।

8 .2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप-

1. पाठ्यचर्या की संकल्पना को स्पष्ट कर सकेंगे।
2. मूल्यांकन को परिभाषित कर सकेंगे।
3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की संकल्पना का विश्लेषण कर सकेंगे।
4. पाठ्यचर्या विकास के विभिन्न चरणों को बता सकेंगे।
5. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकारों का नामोल्लेख कर सकेंगे।
6. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकारों का अन्तर स्पष्ट करते हुए उनकी व्याख्या कर पाएंगें।
7. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता को स्पष्ट कर सकेंगे।
8. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के महत्व को बता सकेंगे।
9. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की विभिन्न चरणों की व्याख्या कर सकेंगे।
10. पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु प्रयोग में लायी जाने वाली विभिन्न तकनीकों की व्याख्या कर पाएंगें।

8 .3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की संकल्पना

इस इकाई में मुख्य बिन्दुओं के साथ कुछ अन्य बिन्दुओं का अध्ययन किया जाएगा जो पाठ्यचर्या मूल्यांकन से सम्बंधित हैं तथा पाठ्यचर्या मूल्यांकन को समझने हेतु उनका उल्लेख करना आवश्यक है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन में दो शब्द निहित हैं; पहला शब्द है पाठ्यचर्या और दूसरा मूल्यांकन। सबसे पहले पाठ्यचर्या क्या है? पिछली इकाईयों में पाठ्यचर्या क्या है इसका अध्ययन किया जा चुका है अतः यहाँ हम अत्यंत संक्षिप्त रूप में जानेंगे कि पाठ्यचर्या क्या है।

पाठ्यचर्या - पाठ्यचर्या को सभी अनुभवों के योग या राशि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक शैक्षिक संस्थान में प्रदान किए जाते हैं। व्हीलर (1967) के अनुसार "पाठ्यचर्या का अर्थ विद्यालय के मार्गदर्शन में शिक्षार्थियों को नियोजित अनुभवों को देना है।" टैनर एवं टैनर (1975) ने भी पाठ्यचर्या को नियोजित एवं निर्देशित शिक्षण अनुभवों के रूप में माना है जो विद्यार्थियों में विद्यालय के तत्वावधान में व्यवस्थित पुनर्निर्माण के माध्यम से ज्ञान एवं अनुभवों के द्वारा विद्यार्थी का अकादमिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्षमता में सतत एवं वांछित विकास करती है।

इस प्रकार से देखा जा सकता है कि पाठ्यचर्या उन अनुभवों का संकलन है जो विद्यालय के परिवेश में शिक्षार्थी को दी जाती हैं। परन्तु कुछ विद्वान इसे मात्र विद्यालय के वातावरण में दिए जा रहे अनुभवों से जोड़ कर नहीं देखते बल्कि इसे उच्चतर जीवन के लिए की जा रही प्रत्येक क्रियायें जो प्रतिदिन और दिन के प्रति घंटे में की जाती हैं, से जोड़कर देखते हैं। अगर व्यापक परिप्रेक्ष्य में दी गयी

पाठ्यचर्या की परिभाषाओं को देखा जाए तो ये मात्र विद्यालय और विद्यालयी अनुभवों एवं विद्यालय में दिया जा रहा ज्ञान ही नहीं है बल्कि इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ है। ले का मानना है कि "पाठ्यचर्या का विस्तार वहां तक है जहाँ तक जीवन का विस्तार है।" फ्रोबेल के अनुसार "पाठ्यचर्या संपूर्ण मानव जाति के ज्ञान एवं अनुभव का प्रतिरूप होना चाहिए।" इस प्रकार विस्तृत अर्थ में पाठ्यचर्या जीवन जीने के लिए आवश्यक कला को सीखने में मदद करती है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने पाठ्यचर्या को परिभाषित करते हुए कहा है कि-

"पाठ्यचर्या का अर्थ केवल उन सैद्धांतिक विषयों से नहीं है जो विद्यालयों में परंपरागत रूप से पढ़ाये जाते हैं, बल्कि इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता भी सम्मिलित होती है, जिनको विद्यार्थी विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कार्यशाला, खेल के मैदान तथा शिक्षक एवं विद्यार्थियों के अनेकों अनौपचारिक संबंधों से प्राप्त करता है। इस प्रकार से विद्यालय का संपूर्ण जीवन पाठ्यचर्या ही हो जाती है जो विद्यार्थियों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करती है और उनके संतुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देती है।"

विस्तृत अर्थ में पाठ्यचर्या का अर्थ मात्र विद्यालय में विद्यार्थियों के सर्वांगींण विकास के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रम से नहीं है बल्कि विद्यालय से बाहर के भी उन अनुभवों से है जो दिन के प्रत्येक घंटे में विद्यार्थी आजीवन प्राप्त करता रहता है । किन्तु समस्या यह है की विद्यालय से बाहर के अनुभवों को नियोजित नहीं किया जा सकता है या उन्हें मूल्यांकित कर उनमें संशोधन या परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। अतः प्रस्तुत पाठ में हम पाठ्यचर्या के रूप में विद्यालय के अन्दर चलाए जा रहे शैक्षिक कार्यक्रम को ही संबोधित करेंगे।

पाठ्यचर्या के पश्चात् अब अगला प्रश्न है कि मूल्यांकन क्या है **?**

मूल्यांकन - मूल्यांकन जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह दो शब्दों से मिलकर बना है मूल्य तथा अंकन, अर्थात् किसी भी चीज को मूल्य प्रदायित करनाया या मूल्य का निर्धारण करना. रेमर्स तथा गेज (1955) ने मूल्यांकन को परिभाषित करते हुए कहा है कि "मूल्यांकन के अंतर्गत व्यक्ति या समाज या दोनों की दृष्टि से जो उत्तम एवं वांछनीय हो उसका ही प्रयोग किया जाता है ।"

प्रो. दांडेकर ने मूल्यांकन की परिभाषा इस प्रकार दिया है "मूल्यांकन की परिभाषा एक व्यवस्थित प्रक्रिया के रूप में की जा सकती है जो इस बात को निश्चित करती है की किस सीमा तक विद्यार्थी शैक्षिक उद्देश्य प्राप्त करने में समर्थ रहा है ।"

कोठारी कमीशन ने मूल्यांकन की व्याख्या इस प्रकार से की है "अब यह माना जाने लगा है कि मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है, जो कि संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है तथा उसका शैक्षिक उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है।"

NCERT के अनुसार "यह एक ऐसी सतत प्रक्रिया है जो देखती है कि (i) निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों (specified educational objectives)की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है (ii) कक्षा में दिए गए अधिगम अनुभव (learning experiences) कितने प्रभावशाली रहे हैं तथा शिक्षा के लक्ष्य (goals of education) कितने अच्छे से पूर्ण हो रहे हैं।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया से सम्बंधित है जो यह सुनिश्चित करता है की किन-किन शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुयी है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन- इससे पहले इस इकाई में हम देख चुके हैं कि पाठ्यचर्या क्या है और मूल्यांकन क्या है। पाठ्यचर्या विकास का एक अभिन्न अंग पाठ्यचर्या मूल्यांकन है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह पाठ्यचर्या एवं मूल्यांकन दोनों को अपने अन्दर समेटे हुए है। अगर इसे और भी स्पष्ट रूप में कहा जाए तो यह कहा जा सकता है की पाठ्यचर्या मूल्यांकन के अंतर्गत दो अति महत्वपूर्ण तथ्य समाहित हैं, प्रथम; यह कि जिन निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निश्चित पाठ अथवा पाठ्यचर्या का अध्यापन किया गया है उनमें से किन-किन उद्देश्यों की प्राप्ति हुयी है और इसके साथ ही साथ कौन कौन से उद्देश्य अप्राप्य रह गए हैं, द्वितीय; यह कि कक्षा में शिक्षण के दौरान शिक्षण के प्रति छात्रों के अनुभव किस प्रकार के रहे हैं। यही नहीं चूँकि पाठ्यचर्या स्वयं में एक अति विस्तृत अवधारणा है जो अपने अन्दर पाठयचर्या , पाठ्यवस्तु तथा इसके साथ- साथ पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को भी लिए हुए है तो पाठ्यचर्या मूल्यांकन के अंतर्गत इन सभी का मूल्यांकन भी सम्मिलित किया जाता है कि उपर्युक्त सभी के साथ विद्यार्थी के अनुभव किस प्रकार के रहे हैं।

McNeil (1977) के अनुसार, "पाठयचर्या मूल्यांकन में दो प्रश्नों पर प्रकाश डाल करने का प्रयास किया जाता है: क्या नियोजित अधिगम अवसरों, कार्यक्रमों, पाठयचर्या , और गतिविधियों का विकास एवं आयोजन इस प्रकार किया गया कि वे वांछित परिणाम ला सकते हैं? सीखने के रूप में विकसित की है और आयोजन वास्तव में वांछित परिणाम का उत्पादन की योजना बनाई है? आयोजित पाठ्यचर्या में सर्वोत्तम होने के लिए सुधार किस प्रकार हो सकता है?

Worthen & Sanders (1987) पाठ्यचर्या मूल्यांकन को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि पाठ्यचर्या मूल्यांकन "किसी कार्यक्रम, उत्पाद, योजना, प्रक्रिया उद्देश्य या पाठ्यचर्या की गुणवत्ता, प्रभावशीलता या मूल्यों का निर्धारण है।"

Gay (1985) के अनुसार, "पाठ्यचर्या मूल्यांकन का लक्ष्य पाठ्यचर्या से सम्बंधित दुर्बल एवं सबल पक्षों के साथ-साथ कार्यान्वयन में आई समस्याओं की पहचान करना, पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया में सुधार करना, पाठ्यचर्या एवं आवंटित वित्त की प्रभावकारिता का निर्धारित करना है।"

पाठ्यचर्या में उद्देश्यों एवं अनुभवों की प्राप्ति को दो स्तरों पर मूल्यांकित किया जा सकता है। इसमें एक मूल्यांकन को शिक्षक के द्वारा किए गए मूल्यांकन के रूप में देखा जा सकता है जो छोटे स्तर पर होता है जिसमे अध्यापक किसी पाठ या किसी इकाई या किसी विषय से सम्बंधित उद्देश्यों तथा अनुभवों का मापन एवं मूल्यांकन करता है और दूसरे स्तर पर पाठ्यचर्या का वृहद् और विस्तृत मूल्यांकन किया जाता है जिसमें संपूर्ण पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है कि पाठ्यचर्या कितनी प्रभावी रही है अर्थात संपूर्ण पाठ्यचर्या किस स्तर तक विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन करने में सक्षम हुयी है तथा साथ ही विद्यार्थी के अनुभव कैसे रहे हैं।
पाठ्यचर्या को संपूर्ण मानव जाति के ज्ञान एवं अनुभव का प्रतिरूप होना चाहिए। इसके अभाव में पाठ्यचर्या को सही नहीं माना जा सकता है।

अभ्यास प्रश्न

1. "पाठ्यचर्या संपूर्ण मानव जाति के ज्ञान एवं अनुभव का प्रतिरूप होना चाहिए।" पाठ्यचर्या की यह व्यापक परिभाषा किस विद्वान ने दी है ?
2. "मूल्यांकन एक ऐसी सतत प्रक्रिया है जो देखती है कि (i) निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों (specified educational objectives)की प्राप्ति किस सीमा तक हो रही है (ii) कक्षा में दिए गए अधिगम अनुभव (learning experiences) कितने प्रभावशाली रहे हैं तथा शिक्षा के लक्ष्य (goals of education) कितने अच्छे से पूर्ण हो रहे हैं।" मूल्यांकन को यह परिभाषा किसके द्वारा दी गयी है।
3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के अंतर्गत किन महत्वपूर्ण तथ्यों का अध्ययन किया जाता है?

8.4. पाठ्यचर्या निर्माण के चरण

कोई भी पाठ्यचर्या कई स्तरों या चरणों से गुजरती हुयी सम्पूर्णता को प्राप्त करती है और यह सम्पूर्णता भी समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप ही होता है जिसमे समाज की नयी आवश्यकताओं को देखते हुए पुरानी पाठ्यचर्या अव्यावहारिक हो जाती है। पाठ्यचर्या के निर्माण में कई चरण होते हैं। इन सभी चरणों से गुजरते हुए ही पाठ्यचर्या अपने वास्तविक रूप में आती है। ये चरण इस प्रकार हैं-

i. पाठ्यचर्या आवश्यकता विश्लेषण चरण
ii. पाठ्यचर्या अभिकल्प चरण
iii. पाठ्यचर्या क्रियान्वयन चरण
iv. पाठ्यचर्या मूल्यांकन चरण

पाठ्यचर्या के निर्माण की प्रक्रिया को इस रेखाचित्र (8 .1) के माध्यम से समझा जा सकता है। निर्माण के प्रथम चरण में सर्वप्रथम यह निर्धारित किया जाता है कि किन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाना है। तद्पश्चात उन आवश्यकताओं के आधार पर पाठ्यचर्या की डिज़ाइन या प्रारूप तैयार किया जाता है। प्रारूप के निर्माण के पश्चात् उस पाठ्यचर्या का क्रियान्वन किया जाता है और उसके उपरांत पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है। इन सभी स्तरों पर पृष्ठ-पोषण लिया जाता रहता है तथा उसके आधार पर हर एक स्तर पर संशोधन भी किया जाता रहता है।

आरेख: 11.1 पाठ्यचर्या विकास के चरण

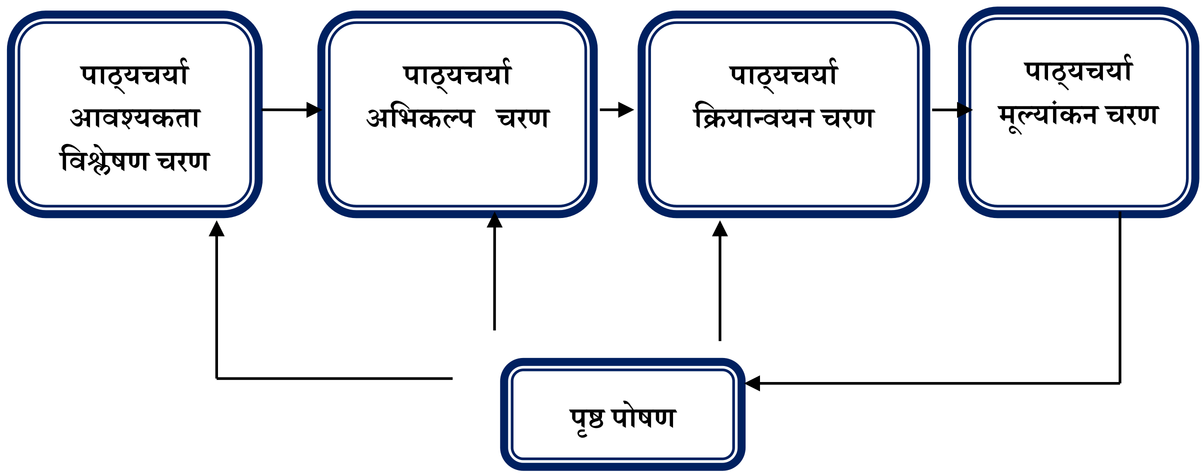

8 .5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रमुख उद्देश्य

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के कुछ उद्देश्यों को लेकर किए जाते हैं। मूल्यांकन से सम्बंधित विभिन्न उद्देश्य इस प्रकार हैं-

i. पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु
ii. पुरानी पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु
iii. व्यक्ति के सम्बन्ध में निर्णय लेने हेतु
iv. प्रशासनिक नियमन हेतु

8 .6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार

जैसा की पहले ही बताया जा चुका है कि पाठ्यचर्या का मूल्यांकन पाठ्यचर्या निर्माण एवं विकास से सम्बंधित एक अहम् बिन्दु है जिसके अभाव में पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु कई विधियों का प्रयोग किया जाता है जो पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार के रूप में इस खंड में वर्णित हैं। बिना मूल्यांकन के पाठ्यचर्या उन उद्देश्यों की पूर्ति करेगी अथवा नहीं, जिसके लिए उसका निर्माण किया गया है, के विषय में भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है।पाठ्यचर्या मूल्यांकन के ये प्रकार मूल्यांकन की प्रक्रिया को अत्यन्त व्यापक बना देते हैं। मूल्यांकन के विभिन्न प्रकार इस प्रकार हैं-

निर्माणात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकन

निर्माणात्मक मूल्यांकन जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह मूल्यांकन पाठ्यचर्या के निर्माण के दौरान किया जाता है। निर्माणात्मक मूल्यांकन में पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के लिए आंकड़ो का संकलन पाठ्यचर्या की योजना, विकास अथवा निर्माण के दौरान किया जाता है जिसके द्वारा निर्माण के दौरान ही पाठ्यचर्या का पुनरावलोकन करते हुए दोषों को दूर किया जा सके। इस प्रकार से निर्माणात्मक मूल्यांकन पाठ्यचर्या के निर्माण के चरण में ही पाठ्यचर्या में संशोधन का अवसर देता है। निर्माणात्मक मूल्यांकन के परिणाम पाठ्यचर्या निर्माण के जिन प्रयोजनों में सहायक सिद्ध होते हैं वे हैं, (1) पाठ्यचर्या के विभिन्न घटकों का चयन एवं (2) पाठ्यचर्या में शामिल दूषित तत्वों का संशोधन। निर्माणात्मक मूल्यांकन सर्वप्रथम यह निश्चित करता है कि पाठ्यचर्या कि आवश्यकता किसे है, उसे पाठ्यचर्या की आवश्यकता किस सीमा तक है और निर्धारित पाठ्यचर्या किस प्रकार उन आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। शिक्षा में, निर्माणात्मक मूल्यांकन का उद्देश्य पाठ्यचर्या या कार्यक्रम को बेहतर बनाने के लिए सूचनाएं इकट्ठी करनी है। पाठ्यचर्या में संशोधन के लिए मूल्यांकन दो स्तरों पर किया जाता है पहला पाठ्यचर्या विकास के प्रक्रिया स्तर पर जहाँ प्रक्रिया का मूल्यांकन किया जाता है तथा दूसरा पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन स्तर पर जहाँ विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाता है।

योगात्मक मूल्यांकन के अंतर्गत आंकड़ो का संकलन पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन के उपरांत किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन तब किया जाता है जब कोई नवीन पाठ्यचर्या को लागू किया गया हो। इसके लिए नए कार्यक्रम को लागू करने के संपूर्ण वर्ष के पश्चात् या कुछ महीनों के पश्चात् परीक्षा के माध्यम से पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन में मूल्यांकन से पूर्व यह निश्चित कर लेने की आवश्यकता होती है कि मूल्यांकन के द्वारा किन प्रश्नों का उत्तर ज्ञात करने का प्रयास किया जा रहा है तथा मूल्यांकन द्वारा प्राप्त परिणामों से क्या निर्णय लिए जाएगें। इसमे यह ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है कि विद्यार्थियों ने पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को प्राप्त किया है अथवा पाठ्यचर्या के द्वारा वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति हुयी है अथवा नहीं। इन परिणामों का निर्धारण औपचारिक मूल्यांकन जैसे परीक्षणों और परीक्षाओं में प्राप्त अंको के आधार पर किया

जा सकता है। यह इसका भी मूल्यांकन करता है कि क्या नवाचार प्रभावी था, क्या पाठ्यचर्या को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय दिया गया, क्या प्राप्त परिणामों में कुछ ऐसे भी परिणाम थे जो अप्रत्याशित थे?

निर्माणात्मक और योगात्मक मूल्यांकन को रोबर्ट स्टेक्स के इस कथन से समझा जा सकता है कि "When the cook tastes the soup, that's formative evaluation; When the guests taste the soup, that's summative evaluation" अर्थात् जब कुक यानि भोजन पकाने वाला सूप चखता है तो यह निर्माणात्मक मूल्यांकन होगा, जब मेहमान सूप चखेंगे तो यह योगात्मक मूल्यांकन होगा।

निकष संदर्भित तथा मानक संदर्भित मूल्यांकन

निकष संदर्भित परीक्षण के द्वारा भी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करते हैं। इस प्रकार के मूल्यांकन में सर्वप्रथम पाठ्यचर्या के सभी उद्देश्यों की सूची तैयार की जाती है इस सूची में सभी उद्देश्य व्यवहारात्मक रूप में लिखे गए होते हैं साथ ही साथ कसौटियों के परीक्षण के लिए परिस्थितियों का भी निर्धारण किया जाता है । इसके साथ ही मूल्यांकनकर्ता इसका निर्धारण भी करता है कि किस सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति पर पाठ्यचर्या को उपयुक्त माना जाएगा। इसके बाद विद्यार्थियों का परीक्षण किया जाता है और यह ज्ञात किया जाता है कि पाठ्यचर्या के द्वारा किस सीमा तक उद्देश्यों को प्राप्त किया गया है अगर निर्धारित सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है तो पाठ्यचर्या को उपयुक्त मान लिया जाता है।

मानक संदर्भित परीक्षण में किसी मानक से तुलना करते हुए पाठ्यचर्या की उपयुक्तता का मूल्यांकन किया जाता है। किसी अन्य पाठ्यचर्या को मानक मानते हुए उसके सापेक्ष में नयी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रकार के पाठ्यचर्या मूल्यांकन में पाठ्यचर्या के दो सेट होते हैं और जिसमें एक का मानकीकरण पहले किया जा चुका होता है। मानकीकृत पाठ्यचर्या के सापेक्ष में नवीन पाठ्यचर्या का मूल्यांकन उससे सहसम्बन्धित करते हुए किया जाता है।

पूर्व तथा पश्च परीक्षण

पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के लिए पूर्व तथा पश्च परीक्षण सामान्यतया सर्वाधिक प्रयोग में लायी जाती है. इस मूल्यांकन विधि में पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या समाप्त होने के पश्चात सत्रोपरांत में विद्यार्थियों के व्यवहार परिवर्तन के आकलन हेतु किया जाता है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इस परीक्षण में दो बार परीक्षा ली जाती है एक पहले और दूसरी बाद में। दो बार के व्यवहार के आकलन हेतु परीक्षणों के दो सेट पहले ही तैयार कर लिए जाते हैं। किसी पाठ्यचर्या को पढ़ाने से पूर्व ही एक सेट का प्रशासन विद्यार्थियों पर करके विशिष्ट क्षेत्र में उनके ज्ञान का मूल्यांकन कर लिया जाता है तत्पश्चात विद्यार्थियों को निर्धारित पाठ्यचर्या को पढाया जाता है। उसके बाद विद्यार्थियों पर दूसरे सेट का प्रशासन कर व्यवहार एवं ज्ञान में आए परिवर्तन का आकलन किया जाता है । विद्यार्थियों के ज्ञान में आए सकारात्मक अंतर को पाठ्यचर्या का परिणाम माना जाता है साथ ही यह भी देखा

जाता है की जिन उद्देश्यों की प्राप्ति का लक्ष्य रखा गया था वे उद्देश्य प्राप्त हुए हैं की नहीं। यदि व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन आया है और उद्देश्यों की प्राप्ति निश्चित सीमा तक हो गयी है तो पाठ्यचर्या को प्रभावशाली मान लिया जाता है।

आरेख 11.2

पूर्व तथा पश्च परीक्षण

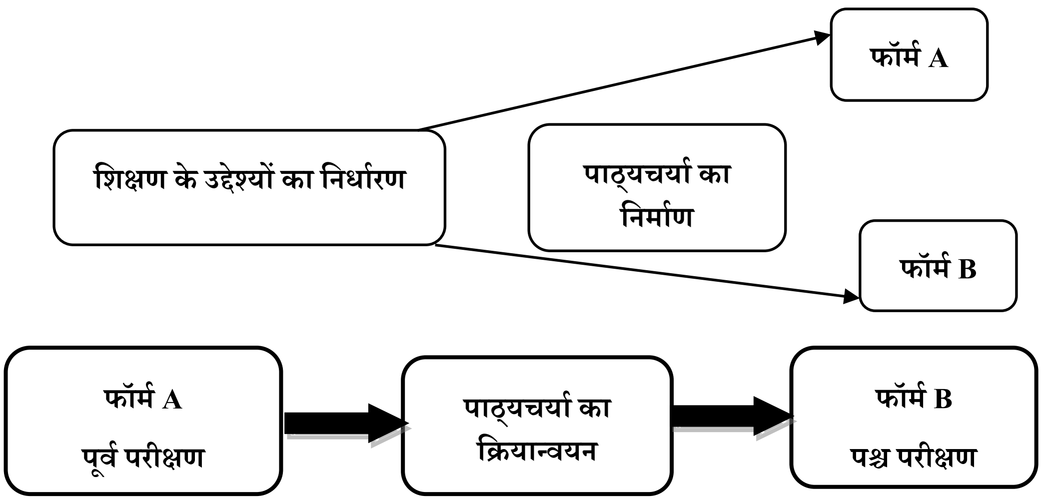

रेखाचित्र 11.2 के माध्यम से यह स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि किस प्रकार पूर्व और पश्च परीक्षण विधि से पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है। इस प्रकार के मूल्यांकन में शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण के पश्चात विशेषज्ञों के द्वारा पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाता है और इसके साथ ही परीक्षण के लिए दो सेट तैयार कर लिए जाते हैं जिसमें से एक का प्रशासन पाठ्यचर्या के प्रशासन के पूर्व करके छात्रों के ज्ञान का मूल्यांकन उस निश्चित क्षेत्र में कर लिया जाता है। तद्पश्चात दूसरे सेट का प्रशासन पाठ्यचर्या को पढ़ाने के पश्चात किया जाता है और अंकों के आधार पर पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मूल्यांकन कर लिया जाता है।

अभ्यास प्रश्न

4. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उद्देश्य कौन-कौन से हैं?
5. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकार बताएं ।
6. निर्माणात्मक मूल्यांकन के परिणाम पाठ्यचर्या निर्माण के किन प्रयोजनों में सहायक सिद्ध होते हैं?

8 .7 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता

समाज की आवश्यकता के अनुसार पाठ्यचर्या में परिवर्तन होता है । यदि अगर बहुत लम्बे समय तक किसी पाठ्यचर्या में परिवर्तन या संशोधन न किया जाए तो परिवर्तनशील युग के लिए पाठ्यचर्या पुरानी हो जाएगी और नवीन आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ और प्रभावी सिद्ध नहीं होगी। समय के साथ नवीन ज्ञान अथवा तथ्यों का पाठ्यचर्या में समावेश किया जाना अनिवार्य है। अतएव समय-समय पर पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक है ताकि इसे समय की मांग के हिसाब से प्रभावी बनाया जा सके। इस प्रकार पाठ्यचर्या मूल्यांकन पाठ्यचर्या निर्माण/विकास का एक अभिन्न अंग है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

नवीन पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु: किसी भी नयी पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु पाठ्यचर्या मूल्यांकन आवश्यक है । वास्तव में समाज को उपयुक्त दिशा पर ले जाने का बोझ शिक्षा के ऊपर ही है। किसी भी नयी पाठ्यचर्या को बिना मूल्यांकित किए विद्यालयों में लागु नहीं किया जा सकता है। पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में यह देखा जाना आवश्यक है कि वह शिक्षा से जुड़े लक्ष्यों और उद्देश्यों की पूर्ति कर रही है अथवा नहीं। अतः नवीन पाठ्यचर्या के निर्माण के साथ छात्रों पर उसके क्रियान्वयन से पहले पाठ्यचर्या का मूल्यांकन आवश्यक होता है

पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु: जो ज्ञान आज नवीन है समय के साथ कल पुराना हो जाएगा और उसके पश्चात् वह अपचलित हो जाएगा। ऐसी निष्क्रिय सामग्री को पाठ्यचर्या से हटाना अनिवार्य हो जाता है। पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के द्वारा इन सामग्रियों को पाठ्यचर्या से हटाया जा सकता है।

अप्रचलित एवं निष्क्रिय सामग्रियों को हटाने हेतु: अप्रचलित और निष्क्रिय सामग्रियों को हटाने के साथ सामयिक तथ्यों को पाठ्यचर्या में जोड़ा जाना भी आवश्यक है ताकि पाठ्यचर्या व्यावहारिक एवं उपयुक्त बनी रहे । इस हेतु नवीन ज्ञान, तथ्य. सामग्रियों को पाठ्यचर्या में शामिल किया जाता है इन तथ्यों को सही रूप में पाठ्यचर्या में सम्मिलित करने के लिए पाठ्यचर्या का मूल्यांकन आवश्यक होता है।

पाठ्यचर्या की व्यवहारिकता एवं प्रभावशीलता ज्ञात करने हेतु: इसी प्रकार कोई पाठ्यचर्या सैद्धान्तिक रूप से अच्छी हो सकती है परन्तु आवश्यक नहीं कि वह व्यवहारिक रूप से प्रयुक्त की ही जा सके। उसकी निष्पति में कई समस्याएं हो सकती है। उदाहरणस्वरुप- वर्तमान युग के लिए कंप्यूटर शिक्षा आवश्यक है और इसे पाठ्यचर्या में शामिल किया जाना चाहिए। परन्तु इसे हर जगह व्यवहारिक बनाना संभव नहीं है। भारत में कई गाँव ऐसे हैं जहाँ बिजली की सुविधा उपलब्ध नहीं है। ऐसे स्थानों के विद्यालयों में कंप्यूटर की शिक्षा देना संभव नहीं है और यदि दी भी जाती है तो छात्रों के लिए उतनी व्यवहारिक नहीं है जितना कृषि या कोई अन्य विषय होगा। ऐसे में पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा ऐसे विषयों में परिशोधन किया जा सकता है और पाठ्यचर्या तथा शिक्षा की प्रभावशीलता को बढाया जा सकता है।

शिक्षा के उत्पाद के सम्बन्ध में जानकारी हेतु: शिक्षा मात्र विषय की जानकारी देने से सम्बंधित न होकर मनुष्य को सही रूप में संसाधन बनाने से भी सम्बंधित है। पाठ्यचर्या के द्वारा व्यक्ति की कुशलता में वृद्धि हो रही है या नहीं और वह समाज और देश के लिए कितना उपयोगी सिद्ध होगा यह आकलन करना भी आवश्यक है। इसके लिए निवेश और उसके पश्चात उत्पादन का विश्लेषण किया जाना चाहिए। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा इसे ज्ञात किया जा सकता है।

8 .8 पाठ्यचर्या मूल्यांकन का महत्व

पाठ्यचर्या का मूल्यांकन उतना ही महत्वपूर्ण है जितनी महत्वपूर्ण पाठ्यचर्या स्वयं है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन का सबसे बड़ा महत्व यह है कि अधिगम में सुधार के साथ-साथ शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हेतु यह सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है। बिना मूल्यांकन के पाठ्यचर्या को उपयुक्त नहीं माना जा सकता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के महत्व निम्नलिखित हैं-
किसी भी स्तर पर नयी पाठ्यचर्या के विकास हेतु पुरानी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक है कि विद्यमान पाठ्यचर्या में कहाँ कमी है तथा किन संशोधनों के पश्चात् पाठ्यचर्या नयी आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के अनुरूप हो जाएगी। नयी पाठ्यचर्या के विकास पर निर्णय के लिए चल रही पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना आवश्यक हो जाता है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा नीति निर्माताओं, प्रशासकों और समाज के अन्य सदस्यों को सूचना मिल जाती है कि निर्मित पाठ्यचर्या आवश्यताओं की पूर्ति में सक्षम है कि नहीं। इसके साथ ही इसके द्वारा शिक्षकों, पाठ्यचर्या विशेषज्ञों, विद्यालय प्रशासकों और उन सभी को जो पाठ्यचर्या विकास में सम्मिलित होते हैं उन्हें भी पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में जानकारी मिल जाती है। यह पाठ्यचर्या के मजबूत और कमजोर पक्षों के सम्बन्ध में पृष्ठपोषण प्रदान करता है कि पाठ्यचर्या मानकों के अनुरूप है अथवा नहीं।

पाठ्यचर्या समय के साथ पुरानी होने लगती है तथा समय के साथ उसमें वर्णित तथ्य तथा विचार अव्यवहारिक हो जाते हैं जिन्हें हटा कर नए तथ्यों और को सम्मिलित करना आवश्यक हो जाता है जिससे पाठ्यचर्या व्यवहारिक और उपयोगी बनी रहे। यदि पुराने तथ्य या ज्ञान व्यवहारिक और उपयोगी हों तब भी पाठ्यचर्या में समय के साथ आए परिवर्तनों से सम्बंधित ज्ञान को जोड़ा जाना जरुरी होता है ताकि पाठ्यचर्या वर्तमान की मांग को पूरी कर सके।

पाठ्यचर्या का निर्माण विभिन्न उद्देश्यों के आधार किया जाता है। उन उद्देश्यों की प्राप्ति पाठ्यचर्या का लक्ष्य होता है। अतः यह देखना अत्यन्त जरुरी है कि जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्यचर्या का निर्माण किया गया है क्या वे उद्देश्य पूर्ण हो रहे हैं। पाठ्यचर्या एक विशेष समूह के लिए भी निर्मित की जाती है तो मूल्यांकन के द्वारा यह निश्चित किया जाता है की उन विशेष समूहों की आवश्यकता को पाठ्यचर्या पूरी कर रही है या नहीं।

पाठ्यचर्या मात्र सूचना देने या जानकारी देने से सम्बंधित नहीं है। मूल्यांकन के द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है की पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को ज्ञान देने के साथ-साथ उनमे गहरी समझ का विकास करने में भी सक्षम है।

8.9 पाठयचर्या मूल्यांकन के चरण

पाठयचर्या मूल्यांकन एक क्रमिक प्रक्रिया है जिसके विभिन्न चरणों से गुजरते हुए मूल्यांकन कार्य किया जाता है। इस प्रक्रिया के विभिन्न चरणों को चार भाग में विभाजित किया जा सकता है, जो आरेख 8 .3 के माध्यम से समझा जा सकता है।

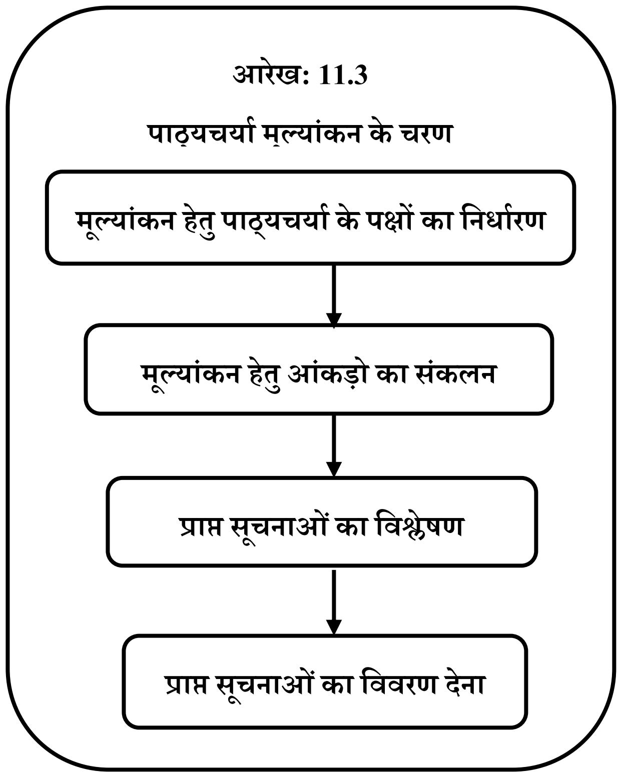

मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के पक्षों का निर्धारण: मूल्यांकनकर्ता सर्वप्रथम यह निर्धारित करता है कि पाठयचर्या के किन पक्षों का मूल्यांकन किया जाना है। इस हेतु वह सर्वप्रथम मूल्यांकन क्रिया के उद्देशों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।

मूल्यांकन हेतु आंकड़ो का संकलन: मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के पक्षों के निर्धारण के पश्चात् मूल्यांकनकर्ता आंकड़ो का संग्रहण करता है। इस हेतु वह पहले उन सूचनाओं को चिह्नित करता है जिनका संग्रहण किया जाना है साथ ही सूचनाओं के संग्रहण हेतु जिन उपकरणों का प्रयोग किया जाने वाला है उनका भी चयन किया जाता है। उपकरणों के रूप में साक्षात्कार, परीक्षण, प्रश्नावली,

अनुसूचियों इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। इस क्रम में उस जनसंख्या को चिन्हित तथा प्रतिदर्शों को सूचीबद्ध किया जाता है जिनपर उपकरणों का प्रशासन कर सूचनाओं का संग्रहण किया जाता है।

प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण: प्राप्त आंकड़ों का तद्पश्चात विश्लेषण किया जाता है और उन्हें तालिका एवं ग्राफ के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसके हेतु उद्देश्यों, आंकड़ों एवं उपकरणों के आधार पर सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है। सांख्यिकी का प्रयोग अक्सर दो या अधिक पाठ्यचर्या के मध्य सार्थक अंतर या सहसंबंध जानने के लिए किया जाता है।

प्राप्त सूचनाओं का विवरण देना: आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् प्राप्त सूचनाओं का विवरण दिया जाता है। विवरणों का लेखन प्राप्त निष्कर्षों पर आधारित होता है। सूचनाओं के विश्लेषण से कुछ निष्कर्ष प्राप्त होते हैं। उन्हीं निष्कर्षों का लेखन इस चरण में किया जाता है । निष्कर्षों के आधार पर पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मापन किया जाता है। जिन उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हुयी होती है उनके लिए पाठ्यचर्या के कुछ पहलूओं पर पुनर्विचार करने हेतु संस्तुतियां की जाती हैं।

8.10 मूल्यांकन प्रक्रिया की तकनीकें

पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु कई तकनीकों को प्रयोग में लाया जाता है। सभी तकनीकों का यहाँ पर वर्णन करना मुश्किल है अतः उनमें से कुछ मुख्य तकनीकों का वर्णन यहाँ पर किया जाएगा।

i. **प्रश्नावली:** प्रश्नावलियों का प्रयोग पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। प्रश्नावलियों का प्रयोग पाठ्यचर्या से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों रूपों से जुड़े stakeholders पर किया जाता है जिसमें छात्र, अध्यापक, माता-पिता, प्रशासक एवं पाठ्यचर्या निर्माण से जुड़े अन्य व्यक्ति आ जाते हैं। इन्हें पाठ्यचर्या से जुड़े विभिन्न प्रश्न दिए जाते हैं जिनका उत्तर इन्हें देना होता है।

ii. **प्रेक्षण:** यह पाठ्यचर्या के सम्पादन से सम्बंधित है। प्रेक्षण तकनीक मूल्यांकनकर्ता को मूल्यांकन प्रक्रिया के हेतु सर्वाधिक सम्बंधित पहलू पर विशेष ध्यान देने में मदद करता है। यह विधि उस स्थिति में अधिक वैध मानी जाती है जब इसमें व्यक्तिनिष्ठता एवं वस्तुनिष्ठता का उचित समावेश होता है। प्रेक्षण के साथ-साथ साक्षात्कार एवं पृष्ठ-पोषण तथा इसके साथ ही साथ अन्य लिखित साक्ष्य प्रेक्षण से प्राप्त परिणामों कि सार्थकता में वृद्धि करते हैं।

iii. **चेक लिस्ट**: चेक लिस्ट को मात्र प्रयोग करके इसके द्वारा पूर्ण जानकारी प्राप्त करना कठिन कार्य है अतः चेक लिस्ट को प्रश्नावली या साक्षात्कार के साथ एक पूरक या भाग के रूप में प्रयोग करते हैं। यह उत्तरों की संपूर्ण सूची होती है उत्तरदाता जिसमें अपने हिसाब से सबसे उपयुक्त उत्तरों को चुनता है अर्थात सही उत्तरों की सूची में से कुछ उत्तरों को अपने विचार के आधार पर सही मनाता है और उन्हें सही के निशान से चयनित कर लेता है। मूल्यांकनकर्ता को पाठ्यचर्या से सम्बंधित विभिन्न तथ्यों को सूचीबद्ध कर उन्हें उत्तरदाता

को दे देना चाहिए एवं इसके द्वारा पाठ्यचर्या में किन बिन्दुओं में समस्याएँ हैं; किन पाठों की आवश्यकता नहीं है, कौन से पाठ अप्रासंगिक हैं, कहाँ संशोधन की आवश्यकता है और कौन से नए पक्ष जोड़े जाने चाहिए, की जानकारी ली जा सकती है।

iv. **साक्षात्कार:** साक्षात्कार, सूचनाओं के संग्रहण एवं मूल्यांकन हेतु एक आधारभूत तकनीक के रूप देखा जाता है। साक्षात्कार आवश्यकताओं और उद्देश्यों के आधार पर औपचारिक एवं अनौपचारिक अथवा संगठित अथवा असंगठित कैसा भी हो सकता है। इसके लिए पाठ्यचर्या से सम्बन्धित जिन सूचनाओं की प्राप्ति साक्षात्कार के माध्यम से करनी है वह उचित प्रकार से परिभाषित एवं लिखित होना चाहिए एवं प्रश्नों का प्रस्तुतीकरण उचित प्रकार से होना चाहिए। अर्थात साक्षात्कारकर्ता के द्वारा प्रश्न उचित प्रकार से पूछे जाने चाहिए और किसी भी प्रकार की जल्दबाजी और पक्षपात नहीं करना चाहिए। मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में किसी विशेषज्ञ से उचित प्रश् पूछे जाएँ और फिर उन उत्तरों के आधार पर पाठ्यचर्या को मूल्यांकित किया जाना चाहिए।

v. **कार्यशाला एवं समूह परिचर्चा**: पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु कार्यशालाओं और समूह परिचर्चाओं का प्रयोग किया है। इस तकनीक में विशेषज्ञों को पाठ्यचर्या पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया जाता है और तद्पश्चात समूह परिचर्चा करायी जाती है और निर्धारित निकषों के आधार पर जो कि मूल्यांकनकर्ता के द्वारा निर्धारित की गयी होती हैं, पर पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन पाठ्यचर्या के विकास एवं उसके क्रियान्वयन के किए उपयोगी जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया एवं माध्यम है। यदि इसे और स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो यह इसे इस भांति समझा जा सकता है कि किसी भी पाठ्यचर्या का निर्माण कुछ निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु किया जाता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि निर्धारित पाठ्यचर्या के द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हो रही है अथवा नहीं और यदि हुयी है तो उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त हुए हैं। मूल्यांकन के अभाव में पाठ्यचर्या दिशाहीन हो जाएगी और दिशाहीन पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को कहाँ ले जाएगी इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। जिस प्रकार से गंतव्य का ज्ञान होने के पश्चात् भी यदि चुना गया मार्ग सही नहीं हो तो गंतव्य तक नहीं जाया जा सकता ठीक उसी प्रकार शिक्षण उद्देश्यों की जानकारी होने पर भी यदि पाठ्यचर्या सही नहीं हो तो निर्धारित उद्देश्यों तक कभी नहीं पहुंचा जा सकता है।

सतत एवं व्यापक आकलन(CCA) :

आज छात्रों को सिर्फ पढ़ाने या गणितीय योग्यता को प्राप्त करने की ही आवश्यकता नहीं है, वरन उन कौशलों की आवश्यकता है जिनके द्वारा वह बदलती हुई इस दुनिया में अपने को ढाल सके। उनमें गंभीर रूप से सोचने, विश्लेषण करने तथा अनुमान लगाने के कौशलों का विकास करना

जरूरी है। अतः नए कौशलों के विकास के लिए नए अधिगम उद्देश्य बनाए जाते हैं और इन्हीं नए अधिगम उद्देश्यों ने आकलन और अनुदेशन के बीच गहरा सम्बन्ध स्थापित किया है।

प्रत्येक शैक्षिक कार्यक्रम का लक्ष्य विद्यार्थी के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना होता है। इसलिए विद्यालय में दिए जाने वाले शिक्षण संबंधी अनुभवों से अपेक्षित लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायता मिलनी चाहिए। अध्यापन अधिगम की प्रक्रिया में अनुदेशात्मक उद्देश्य, अध्यापक व विद्यार्थी महत्वपूर्ण होते हैं। अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षक छात्रों का निरंतर आकलन करते रहता है। **आकलन क्या है?** आकलन एक रचनात्मक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा शिक्षक को यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी का उचित अधिगम हो रहा है या नहीं। इसका उद्देश्य निदानात्मक तथा शिक्षण-अधिगम कार्यक्रम में सुधार करना, छात्रों व अध्यापकों को पृष्ठपोषण प्रदान करना तथा छात्रों की अधिगम संबंधी कठिनाइयों को ज्ञात करना होता है। यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। आकलन, अनुदेशन का महत्वपूर्ण भाग है। इससे हमें इन प्रश्नों के उत्तर प्राप्त होते हैं – क्या हम वैसा ही शिक्षण कर रहे हैं, जैसा हम सोचते थे? क्या छात्र वैसा ही सीख रहे हैं, जैसा कि वे अधिगम के लिए सोचते थे?क्या विषयों को पढ़ाने के और भी तरीके हैं, जिससे अच्छा अधिगम हो सके?

व्यापक आकलन : अध्यापक छात्रों का निरंतर आकलन करता रहता है। वे कौन से क्षेत्र हैं, जिनका आकलन अध्यापक द्वारा किया जाता है? विद्यालय में छात्रों के व्यक्तित्व के विकास संबंधी लगभग सभी क्षेत्रों को शामिल किया जाता है। इसमें शैक्षिक और गैर शैक्षिक क्षेत्र दोनों ही शामिल हैं। अर्थात आकलन व्यापक स्तर पर होना चाहिए। शैक्षिक क्षेत्र वह है जिसका सम्बन्ध विषयों के ज्ञान, अवबोध तथा किसी भी स्थिति में उन्हें उपयोग करने संबंधी योग्यता से है। गैर शैक्षिक क्षेत्र वह है जिसका सम्बन्ध छात्र की रुचियों, अभिवृत्तियों, वैयक्तिक और सामाजिक गुणों तथा स्वाथ्य से है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के 1992 में संशोधित प्रलेख में भी यह उल्लिखित किया गया है कि आकलन में शैक्षिक विषयो और गैर- शैक्षिक क्षेत्रों के सभी अधिगम अनुभवों को शामिल किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) ने विद्यालयी आकलन के लिए स्कीमें तैयार की हैं, जिसका एक उदाहरण नीचे दिया जा रहा है :

छात्र	**विषय**	**आकलन की तकनीकें**	**आकलन के साधन**
शैक्षिक	**पाठ्येत्तर कार्यकलाप** -ज्ञान -अवबोध -ज्ञान का प्रयोग, -कौशल आदि	लिखित, मौखिक या प्रायोगिक	प्रश्नपत्र,निदान परीक्षण,मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण,दत्त कार्य, प्रश्नावली

पाठ्यचर्या , अनुकूलन तथा रणनीतियाँ (C13 MR)

गैर शैक्षिक	**1. शारीरिक स्वाथ्य** -स्वाथ्य संबंधी मूल ज्ञान -शारीरिक स्वच्छता	स्वास्थ्य जाँच, शिक्षक द्वारा प्रेक्षण	निर्धारण मापनी,डाक्टर के अपने उपस्कर
	2. आदतें -स्वास्थ्य संबंधी आदतें, -अध्ययन संबंधी आदतें, -कार्य संबंधी आदतें	प्रेक्षण	वृत्तान्त अभिलेख निर्धारण मापनी जाँच सूची
	3. अभिरुचियाँ -साहित्यिक अभिरुचि -कलात्मक अभिरुचि -वैज्ञानिक अभिरुचि -संगीतिक अभिरुचि -सामाजिक अभिरुचि	प्रेक्षण	वृत्तान्त अभिलेख निर्धारण मापनी जाँच सूची
	4. अभिवृत्तियाँ -अध्ययन के प्रति अभिवृत्ति -शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति -सहपाठियों के प्रति अभिवृत्ति -विद्यालय की संपत्ति के प्रति अभिवृत्ति	प्रेक्षण	वृत्तान्त अभिलेख निर्धारण मापनी जाँच सूची
	5. चरित्र निर्माण संबंधी गुण -सफाई -सत्यप्रियता -परिश्रमी -समानता -सहयोग	प्रेक्षण	वृत्तान्त अभिलेख निर्धारण मापनी जाँच सूची
	6. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेना	प्रेक्षण	वृत्तान्त अभिलेख निर्धारण मापनी

	-क्रीडा, खेलकूद, व्यायाम आदि -साहित्यिक और वैज्ञानिक गतिविधियाँ -सांस्कृतिक,सामाजिक और सामुदायिक सेवा संबंधी कार्यकलाप		जाँच सूची

अभ्यास प्रश्न

7. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
8. पाठ्यचर्या से अप्रचलित एवं निष्क्रिय सामग्रियों को हटाया जाना क्यों आवश्यक है?
9. पाठ्यचर्या मूल्यांकन केवल नयी पाठ्यचर्या हेतु ही आवश्यक है। (सत्य/असत्य)
10. चेकलिस्ट का प्रयोग कर पाठ्यचर्या को पूर्ण रूप से मूल्यांकित किया जा सकता है। (सत्य/असत्य)
11. साक्षात्कार विधि में किसी विशेषज्ञ के साक्षात्कार के द्वारा पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता मूल्यांकित की जाती है। (सत्य/असत्य)
12. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न चरण कौन-कौन से हैं?
13. पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु किन-किन तकनीकों को प्रयोग में लाया जाता है?

8 .11 सारांश

पाठ्यचर्या मूल्यांकन: पाठ्यचर्या मूल्यांकन किसी कार्यक्रम, उत्पाद, योजना, प्रक्रिया उद्देश्य या पाठ्यचर्या की गुणवत्ता, प्रभावशीलता या मूल्यों का निर्धारण है

पाठ्यचर्या निर्माण के चरण

आवश्यकता विश्लेषण चरण | अभिकल्प चरण | क्रियान्वयन चरण | मूल्यांकन चरण

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के

निर्माणात्मक तथा योगात्मक मूल्यांकन: पाठ्यचर्या के निर्माण के चरण में ही पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता जानने के लिए किया जाने वाला मूल्यांकन निर्माणात्मक मूल्यांकन कहा जाता है। पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन के पश्चात् पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता को जानने के लिए किए

निकष संदर्भित तथा मानक संदर्भित मूल्यांकन: निकष संदर्भित मूल्यांकन में यह ज्ञात किया जाता है कि पाठ्यचर्या के द्वारा किस सीमा तक उद्देश्यों को प्राप्त किया गया है अगर निर्धारित सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है तो पाठ्यचर्या को उपयुक्त मान लिया जाता है। मानक संदर्भित परीक्षण में किसी

पूर्व तथा पश्च परीक्षण: इस प्रकार के मूल्यांकन में पाठ्यचर्या को पढ़ाने से पूर्व एक सेट का प्रशासन कर विद्यार्थियों का विशिष्ट क्षेत्र में ज्ञान का मूल्यांकन कर लिया जाता है तत्पश्चात निर्धारित पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को पढ़ाने के पश्चात् दूसरे सेट का प्रशासन कर व्यवहार एवं

पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता

(i) पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु (ii) पुरानी पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु (iii) व्यक्ति के सम्बन्ध में निर्णय लेने हेतु (iv) प्रशासनिक नियमन हेतु

पाठ्यचर्या मूल्यांकन का महत्व : पाठ्यचर्या मूल्यांकन अधिगम में सुधार के साथ-साथ शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार हेतु यह सबसे महत्वपूर्ण

उप:

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण

पाठ्यचर्या के पक्षों का निर्धारण
आंकड़ो का संकलन
सूचनाओं का विश्लेषण
सूचनाओं का विवरण

पाठ्यचर्या मूल्यांकन प्रक्रिया की तकनीकें

प्रश्नावली
प्रेक्षण
चेकलिस्ट
साक्षात्कार

8 .12 शब्दावली

1. **पाठ्यचर्या:** पाठ्यचर्या नियोजित एवं निर्देशित शिक्षण अनुभव है जो विद्यार्थियों में विद्यालय के तत्वावधान में व्यवस्थित पुनर्निर्माण के माध्यम से ज्ञान एवं अनुभवों के द्वारा विद्यार्थी का अकादमिक, व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्षमता में सतत एवं वांछित विकास करती है।
2. **मूल्यांकन:** मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया से सम्बंधित है जो यह सुनिश्चित करता है की किन-किन शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुयी है
3. **पाठ्यचर्या मूल्यांकन:** पाठ्यचर्या मूल्यांकन पाठ्यचर्या से सम्बंधित दुर्बल एवं सबल पक्षों के साथ-साथ कार्यान्वयन में आई समस्याओं की पहचान, पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया में सुधार, पाठ्यचर्या एवं आवंटित वित्त की प्रभावकारिता का निर्धारण है।
4. **निर्माणात्मक मूल्यांकन:** निर्माणात्मक मूल्यांकन मूल्यांकन को कहते हैं जिसमें पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के लिए आंकड़ो का संकलन पाठ्यचर्या की योजना, विकास अथवा निर्माण के दौरान किया जाता है जिससे निर्माण के दौरान ही पाठ्यचर्या का पुनरावलोकन करते हुए दोषों को दूर किया जा सके। निर्माणात्मक मूल्यांकन पाठ्यचर्या के निर्माण के चरण में ही पाठ्यचर्या में संशोधन का अवसर देता है।
5. **योगात्मक मूल्यांकन:** योगात्मक मूल्यांकन नवीन पाठ्यचर्या को लागू करने के पश्चात् किया जाता है। इसके लिए नए कार्यक्रम को लागू करने के संपूर्ण वर्ष के पश्चात् या कुछ महीनों के पश्चात् परीक्षा के माध्यम से पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाता है।
6. **निकष संदर्भित मूल्यांकन:** निकष संदर्भित मूल्यांकन में सर्वप्रथम पाठ्यचर्या के सभी उद्देश्यों की सूची तैयार की जाती है। इसके बाद विद्यार्थियों का परीक्षण किया जाता है और यह ज्ञात किया जाता है कि पाठ्यचर्या के द्वारा किस सीमा तक उद्देश्यों को प्राप्त किया गया है अगर निर्धारित सीमा तक उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है तो पाठ्यचर्या को उपयुक्त मान लिया जाता है।
7. **मानक संदर्भित मूल्यांकन:** मानक संदर्भित परीक्षण में किसी मानक से तुलना करते हुए पाठ्यचर्या की उपयुक्तता का मूल्यांकन किया जाता है । ऐसी पाठ्यचर्या मूल्याकन के द्वारा जिसकी उपयुक्तता जाँच ली गयी हो, को मानक मानते हुए उसके सापेक्ष में नयी पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है।

8.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. फ्रोबेल

2. NCERT
3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के अंतर्गत जिन दो महत्वपूर्ण तथ्यों का अध्ययन किया जाता है वे हैं, (i) जिन निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निश्चित पाठ अथवा पाठ्यचर्या का अध्यापन किया गया है उनमें से किन-किन उद्देश्यों की प्राप्ति हुयी है तथा कौन से उद्देश्य अप्राप्य रह गए हैं, (ii) कक्षा में शिक्षण के दौरान शिक्षण के प्रति छात्रों के अनुभव किस प्रकार के रहे हैं।
4. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न उद्देश्य निम्नलिखित हैं-
   i. पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु
   ii. पुरानी पाठ्यचर्या में संशोधन हेतु
   iii. व्यक्ति के सम्बन्ध में निर्णय लेने हेतु
   iv. प्रशासनिक नियमन हेतु
5. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकार इस प्रकार हैं
   i. निर्माणात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन
   ii. निकष संदर्भित एवं मानक संदर्भित मूल्यांकन
   iii. पूर्व तथा पश्च मूल्यांकन
6. निर्माणात्मक मूल्यांकन के द्वारा पाठ्यचर्या के विभिन्न घटकों का चयन एवं पाठ्यचर्या में शामिल दूषित तत्वों का संशोधन किया जाता है।
7. पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता बनाए रखने के लिए पाठ्यचर्या मूल्यांकन आवश्यक है।
8. पाठ्यचर्या को व्यावहारिक एवं उपयुक्त बनाए रखने के लिए पाठ्यचर्या से अप्रचलित एवं निष्क्रिय सामग्रियों को हटाया जाना आवश्यक है।
9. असत्य
10. असत्य
11. सत्य
12. पाठ्यचर्या मूल्यांकन के मुख्य चरण इस प्रकार हैं
    i. मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के पक्षों का निर्धारण
    ii. मूल्यांकन हेतु आंकड़ो का संकलन
    iii. प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण
    iv. प्राप्त सूचनाओं का विवरण देना।
13. पाठ्यचर्या मूल्यांकन हेतु प्रश्नावली, प्रेक्षण, चेकलिस्ट, साक्षात्कार, कार्यशाला एवं समूह परिचर्चा जैसी तकनीकों को प्रयोग में लाया जाता है।

8.14 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bharvad, J. A., (2010). Curriculum Evaluation. International Research Journal September, 1 (1), 72-74.

2. Cronbach,. (1963). Course Improvement through Evaluation. San Fransisco: Jossey , Bars. (Teachers College Record, 64, 672-683)
3. Doll, R.C. (1986). Curriculum Improvement: Decision Making and Process. Boston: Allyn and Bacon.
4. ayton, D. (1973). Science for People. New York: Science History Publications.
5. Ornstein, A. and Hunkins, F. (1998). Curriculum: Foundations, Principle and Issues. Boston, MA: Allyn & Bacon.
6. Sanders, J.R. (1990). Curriculum Evaluation. In: Walberg, H. J. & Haertel, G.D. (eds.). The International Encyclopaedia of Education Evaluation. New York: Pergamon Press.
7. Sowell, E. (2000). Curriculum: An Integrative Introduction. NJ: Prentice-Hall.
8. Stake, R.E. (1967). The Countenance of Educational Evaluation Teachers College Record.
9. Stufflebeam, I.D. (1971). Educational Evaluation & Decision Making. Itasea: Ill, Peacock.
10. Wheeler, D.K. (1967). Curriculum Process. london: U.K. University of london Press ltd.
11. Wiles, J. & Bondi, J. (1989). Curriculum Development. A Guide to Practice (3rd Edition). Columbus OH: Merril Publishing Company.
12. Worthen, B.R. (1990). Program Evaluation. In: Walberg, H. J. & Haertel, G.D. (eds.). The International Encyclopaedia of Education Evaluation. New York: Pergamon Press.

8.15 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठ्यचर्या मूल्यांकन क्या है? पाठ्यचर्या मूल्यांकन क्यों पड़ती है? पाठ्यचर्या के मूल्यांकन के विभिन्न चरणों का उल्लेख करें।
2. पाठ्यचर्या मूल्यांकन क्यों महत्वपूर्ण है? पाठ्यचर्या मूल्यांकन की विभिन्न तकनीकें कौन-कौन सी हैं? संक्षिप्त व्याख्या करें।

इकाई 9- व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रम (Individual Educational Programme IEP)

प्रत्येक मानसिक मंदबुद्धि बच्चे के लिए विशेष रूप से शिक्षण और प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करने की आवश्यकता है ,जो उस बच्चे की निजी आवश्यकताओं और योग्यताओं पर आधारित हो ।ऐसी शिक्षण और प्रशिक्षण योजना को व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रम या व्यक्ति सापेक्ष कार्यक्रम कहते हैं ।व्यक्ति सापेक्ष का आशय है कि शिक्षा या प्रशिक्षण कार्यक्रम एक व्यक्ति विशेष की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु निर्मित किया गया और यह प्रशिक्षण उसे उसके लिए उपयुक्त शिक्षण विधियों के माध्यम से दिया जायेगा । दूसरे शब्दों में शिक्षण का आधार एक समूह न होकर ,एक व्यक्ति विशेष है ।कार्यक्रम योजना से आशय उन चरणों से है जिनका पालन पशिक्षक (चाहें वह अध्यापक हो या माता –पिता या समुदाय कार्यकर्ता)बच्चे को वह कार्य या व्यवहार सिखाने के लिए करेगा ,जिनकी उसे अपनी रोजमर्रा के जीवन में आवश्यकता है ।साथ ही यदि बच्चा कोई अनुचित व्यवहार दर्शा रहा है तो उसे सुधारने सम्बन्धी चरण भी इस आई .ई .पी में वर्णित किये जायेंगे ।

अतः व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रम या व्यक्ति सापेक्ष् कार्यक्रम (आई .ई .पी) एक ऐसा प्रलेख है जो विशेष शिक्षकों और माता –पिता के द्वारा विकलांग व्यक्तियों को उपयुक्त हस्तक्षेप देने के उद्देश्य से लिखा जाता है ।

व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रम के उद्देश्य –

आई .ई .पी का मुख्य उद्देश्य प्रतेक विकलांग बच्चे को,चाहें वह मानसिक रूप से मंद हो या उसमें कोई अन्य विकलांगता हो ,उपयुक्त शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान करना होता है ।उपयुक्त शब्द का तात्पर्य ऐसी शिक्षा एवं प्रशिक्षण से है जो बच्चे की आवश्यकताओं और उसकी क्षमताओं को ध्यान में रखकर बनाया गया हो ।अतः आई .ई .पी . के विभिन्न उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. मानसिक मंद बालकों को उपयुक्त शिक्षा एवं प्रशिक्षण उपलब्ध कराना ।
2. प्रतेक मानसिक मंद बुद्धि बालक की सीखने कि गति अलग –अलग होती है अतः इन बालकों को उनकी गति के अनुसार सीखाना ।
3. बालक की आवश्यकता तथा स्टार के अनुसार सीखना ।
4. बालक कि रूचि ,अभिवृत्ति तथा क्रियाशीलता के आधार पर सिखाने के लिए सहायक ।
5. बालक में विभिन्न प्रकार के कौशलों के विकास के लिए आवश्यक ।
6. बालक की व्यक्तिगत विभिन्नता को समझने तथा उसी के आधार पर शिक्षण विधि का चयन करने में सहायक ।

7. बालक के लिए आगामी नियोजन के निर्माण में आवश्यक।

समुचित शैक्षिक योजना के रूप में आई.ई .पी –

आई.ई .पी बनाते समय उन सभी विशेषज्ञों की राय लेना जरूरी है ,जो बच्चे को अपनी सेवायें प्रदान करने में शामिल होंगे ।अतः किसी भी बच्चे के लिए आई. ई .पी विकसित करना एक सामूहिक प्रयास है ।इस समूह में शामिल सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति है बच्चे के माता- पिता। बच्चे के लिए आई.ई .पी की योजना बनाने की प्रक्रिया में मुख्य योगदान उसके माता-पिता का होता है और बच्चे के सम्बन्ध में कई बार उनका निर्णय भी कई बार निर्णायक होता है ।माता-पिता होने के नाते अध्यापक और अन्य व्यवसायिकोंकों यह पता लगाना जरूरी है कि बच्चे कि रूचि एवं सीखने की क्षमता की स्थिति के अनुसार कौन-कौन से क्रियाकलाप हैं जिन्हें सिखाना बच्चे के लिए लाभदायक होगा ।विभिन्न क्रियाकलापों कों बच्चा किस हद तक करना सीख लेगा ,यह इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चे के शिक्षण और प्रशिक्षण में माता –पिता किस हद तक शामिल होते हैं ।अतः बच्चे के लिए आई. ई .पी. तभी कारगर साबित होगी जब माता-पिता और व्यावसायिक एक साथ मिलजुल कर बच्चे की आवश्यकताओं की पहचान करे कि बच्चे कों क्या सीखना है ।इसीलिए यह जरूरी है कि आई. ई. पी. विकसित करने की प्रक्रिया और इसे लागू करने के तरीकों कों मोटे तौर पर माता-पिता समझें।

आई. ई. पी. विकसित करने के चरण –

आई. ई. पी. विकसित करने में बालक की पृष्ठभूमी सुचना प्राप्त करना पहला चरण है ।असल में बच्चा जब पहली बार केन्द्र संस्था या स्कूल में भर्ती होता है तो कार्यकर्ता बच्चे के समबन्ध में यह मूलभूत जानकारी अवश्य लिखते हैं जो कि आई.ई. पी . के भाग-अ एवं ब में उल्लिखित है ।।

भाग –अ

पृष्ठभूमि सूचना

भाग अ में ऐसे तथ्यों का उल्लेख किया जाता है जब मानसिक मंद बालक कों किसी विशेषज्ञ के पास लाया जाता है ,तो उस बालक की वस्तु स्थिति पहचान कर समझने के लिए इन सूचनाओं का उल्लेख किया जाता है ,इसके अंतर्गत निम्नलिखित सूचनाएं हैं ।जैसे-बच्चे का नाम ,आयु, लिंग, शिक्षा,पता व्यवसाय, अभिभावक का नाम आय एवं परिवार का सामाजिक आर्थिक स्तर आदि आते हैं।

संलग्न दशाएं

कुछ बालकों में मुख्य विकलांगता के अलावा कुछ आंशिक समस्याएं पाई जाती हैं जैसे मानसिक मंदता के साथ सिंड्रोम आदि जिन्हें संलग्न दशा के रूप में जाना जाता है ।संलग्न दशा वह स्थिति होती है जिसमे किसी विकलांगता के साथ एक या एक से अधिक संलग्न दशाएं जुड़ी होती हैं जिससे इनकी गंभीरता और भी बढ़ जाती है ।

सामान्य पारिवारिक पृष्ठभूमि

इसके अंतर्गत बालक के जन्म के पूर्व की स्थिति, जन्म की प्रक्रिया सम्बन्धि जानकारी ,बच्चे के विकासात्मक काल के विभिन्न मापदंडों आदि की जानकारी एकत्र की जाती है ।इसके अतिरिक्त बच्चे के परिवार से सम्बंधित जानकारी ,जैसे –भाई –बहनों की संख्या ,पूर्व की पीढ़ी में कोई मानसिक मंदता या कोई अन्य विकलांगता है या नहीं ,आदि का उल्लेख किया जाता है ।बालक के विकासात्मक पहलू को ध्यान में रखते हुए पूर्व विद्यालय की सूचना द्वारा बालक से सम्बंधित सूचना एकत्र की जाती है ।

वर्तमान स्तर का आंकलन - यह आई. ई. पी. विकसित करने का अगला एवं महत्वपूर्ण चरण है । बालक के लिए कोई भी कार्यक्रम तैयार करने से पहले बालक की वर्तमान स्थति की पूरी तरह से जानकारी लेना आवश्यक है ।इसी के आधार पर बालक के लिए अगली योजना तैयार की जाती है ।लक्ष्य एवं उद्देश्यों का निर्धारण करने के लिए विशेष शिक्षक कों मानसिक मंद बालक के बारे में निम्न सूचनाओं का संकलन आवश्यक है –

- बालक वर्तमान में किन क्रियाकलापों कों करने में सक्षम है ?
- बालक में कौन सी व्यवहारगत समस्याएं पाई जाती हैं ?
- प्रभावशाली इन्द्रीय प्रतिक्रिया जिसके द्वारा बालक सीख सके ।
- बालक के व्यव्हार को अभिप्रेरित करने के लिए उपयुक्त पुनर्बलन ।

उपर्युक्त क्रियाओं का आंकलन करने के लिए कसौटी संदर्भित परीक्षण का उपयोग किया जाता है । बालक के वर्तमान स्तर के लिए विभिन्न प्रकार की जांच सूची आंकलन का उपयोग किया जाता है ।जैसे –बेसिक- एम. आर, एम. डी.पी .एस ,एफ .ए .सी.पी.एवं पोर्टाज गाइड आदि ।

लक्ष्य निर्धारण

लक्ष्य निर्धारण में दो तरह के उद्देश्यों को रखा जाता है ।पहला वार्षिक उद्देश्य एवं दूसरा अल्पकालीन उद्देश्य ।वार्षिक लक्ष्य एक शैक्षणिक सत्र में बालकों कों सिखाए जाने वाले क्रियाकलापों कों बताता है ।यह एक पूर्व कल्पना है जो वर्ष भर चलने वाले निर्देशों पर निर्भर करती है ।अल्पकालीन उद्देश्य सरल शब्दों में ,शीर्षक लक्ष्यों कों छोटी इकाइयों में बांटना है ।

इन छोटी –छोटी इकाइयों कों अल्प समय में प्राप्त करने के लिए तैयार किय जाता है ।अल्पकालीन उद्देश्यों का क्रम ऐसा होता है जिससे वार्षिक लक्ष्य की प्राप्ति हो सके । प्रत्येक अल्पकालीन उद्देश्य के लिए व्यक्तिगत शैक्षणिक कार्यक्रम का भाग –ब तैयार किया जाता है ।

भाग –ब

लक्ष्य

इसके अंतर्गत ऐसे लक्ष्यों को उल्लेख किया जाता है जिन्हें किसी निश्चित समयावधि अथवा वार्षिक रूप से प्राप्त किया जाता है । इसमें उस पाठ्यवस्तु का उल्लेख किया जाता है जिसकी अपेक्षा बालक से की जाती है अथवा जो बालक का लिए निर्धारित की जाती है ।

कार्य

इसके अंतर्गत उन क्रियाकलापों कों शामिल किया जाता है जिसमे बालकों कों विभिन्न क्रियाएँ सिखानी होती हैं इसमें तथ्य कों क्रियारूप में लिखा जाता है ।

वर्तमान स्तर -

इसके अंतर्गत बालक के वर्तमान स्तर का उल्लेख किया जाता है ।जिस गतिविधि अथवा कार्य को सिखाना है ,उस गतिविधि के क्षेत्र में बालक का वर्तमान स्तर क्या है अर्थात बालक कों उस गतिविधि के बारे में कितना अनुभव है ,का पता लगाया जाता है ताकि वह इस गतिविधि को पूर्ण कर पाने में सक्षम हो।

विशिष्ट उद्देश्य –

इसमें बालक द्वारा सीखी जाने वाली गतिविधि का उल्लेख व्यावहारिक रूप में किया जाता है तथा उस क्रिया के होने की परिस्थिति ,कसौटी तथा समयावधि आदि का उल्लेख किया जाता है ।

शिक्षण सामग्री –

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए शिक्षण सामग्री का महत्वपूर्ण स्थान है ।एक शिक्षक को अपनी शिक्षण सामग्री का चयन क्रिया एवं बालक की प्रकृति के अनुसार करना चाहिए ।एक ही क्रिया कों सिखाते समय अलग अलग बालकों के लिए एक ही शिक्षण सामग्री उपयोगी नहीं हो सकती क्योंकी प्रत्येक बालक की व्यक्तिगत समस्याएँ एवं प्रकृति अलग अलग होती है ।

क्रिया विधि –

इसके अंतर्गत सिखाए गए उस कार्य की सम्पूर्ण गतिविधि का उल्लेख किया जाता है जो कार्य बालकको उचित विधि एवं उचित शिक्षण सहायक सामग्री के माध्यम से सिखाया जाता है ।इसमें क्रिया सीखने की रणनीति ,पुनर्बलन आदि कों स्पष्ट एवं छोटे –छोटे चरणों में लिखा जाता है ।

मूल्यांकन –

पूर्व निर्धारित लक्ष्यों कों आधार मानकर छात्र द्वारा तीन महीने में सीखे गए कार्य का मूल्यांकन किया जाता है ।यदि बालक प्रतिशत या उससे अधिक प्राप्त कर लेता है तो बालक के लिए दूसरे उद्देश्य का चयन किया जाता है ।

आई .ई .पी . का प्रपत्र -

आई .ई .पी . का प्रपत्र में छोटी से छोटी प्रत्येक सूचना कों अभिलेखित करने का प्रावधान है ।इसमें एक निर्धारित अवधि के बाद मूल्यांकन परिणामों कों अभिलेखित करना शामिल है ।प्रत्येक आई .ई. पी. योजना तैयार करते समय शिक्षक प्रक्रिया तथा उपलब्धि हासिल करने के मापदंडों कों लिखता है ।विद्यार्थी का मूल्यांकन विशीष्ट उद्देश्यों में निर्धारित मापदंड के आधार पर होता है। इससे विद्यार्थी के निष्पादन स्तर को मापा जाता है

व्यक्तिगत शैक्षणिक योजना (आई .ई .पी)

भाग –अ

छात्र का नाम : .... पंजीकरण संख्या : ....

जन्म तिथि : .... कक्षा तथा अनुक्रमांक : ....

लिंग : .... आई .ई .पी .लिखने की तिथि ....

पता : .... आई .ई .पी .संख्या : ....

मातृभाषा / विशिष्ट अक्षम व्यक्ति के साथ बोली जाने वाली भाषा :

विशिष्ट अक्षम व्यक्ति के विषय में महत्वपूर्ण सूचनाएं :

संलग्न दशाएं तथा रेफरल ,यदि हो :

लक्ष्य :

उत्तरदायी कर्मचारी :

भाग –ब

कौशल व्यवहार	वर्तमान स्तर /आधार रेखा	उद्देश्य	प्रक्रिया	आवश्यक सामग्री	मूल्यांकन
					1 2 3 4 5 6 7

इकाई 10-पाठ्य-सहगामी क्रियाएं (Cocurricular Activities)

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का महत्व

10.4 पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के प्रकार

10.5 पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का आयोजन

10.6 पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन में कठिनाईयाँ

10.7 कतिपय पाठ्य-सहगामी क्रियाएं

10.8 पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन

10.9 सारांश

10.10 शब्दावली

10.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

10.12 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

10.13 निबंधात्मक प्रश्न

10.1प्रस्तावना

क्योंकि शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को भावी जीवन के लिए तैयार करती है। इसलिए यह विद्यालय जीवन तथा कक्षा-कक्ष तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए। अपने भावी वास्तविक जीवन में व्यक्ति को अनेक तरह के संघर्ष करने पड़ते है, अनेक जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा अनेक प्रकार की प्रकृति वाले व्यक्तियों के सम्पर्वâ में आना पड़ता है। यदि विद्यालय की शिक्षा जीवन की तैयारी है तो विद्यालय प्रांगण में छात्रों को इन सबकी शिक्षा अवश्य मिलनी चाहिए। अत: विद्यालय में दी जानेवाली शिक्षा कक्षा-कक्ष में दिये जाने वाले विषयगत ज्ञान व बोध तक ही सीमित नहीं रह सकती है वरन् उसे छात्रों के

सर्वांगीण विकास के लिए उनको अपने भावी जीवन में आने वाले संघर्षों का सामना करने, समस्याओं का समाधान करने, तथा विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के साथ व्यवहार करना सिखाना जरूरी है। पाठ्यचर्या सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था इसी उद्देश्य के निमित्त की जाती है। पूर्व में विद्यालय शिक्षा से तात्पर्य छात्रों को 3R' अर्थात् पढ़ना लिखना तथा अंकगणित का ज्ञान कराना मात्र माना जाता था। संगीत, नाटक, वाद-विवाद, स्काउटिंग, खेलवूâद, भ्रमण, पर्यटन जैसी क्रियाओं को शिक्षा संस्थाओं में सीखना अनावश्यक तथा अशैक्षिक क्रियाएं माना जाता था। इन क्रियाओं को पाठ्येत्तर क्रियाएं) कहा जाता था। परन्तु कालान्तर में शिक्षा दर्शन सम्बंधी विचारधारा में आये परिवर्तन के साथ ही साथ इन क्रियाओं के प्रति शिक्षाविदों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया तथा अब इन्हें पाठ्येत्तर क्रियाएं न मानकर पाठ्य सहगामी क्रियाएं कहा जाने लगा है। शिक्षाविदों के सोच में आये इस परिवर्तन के फलस्वरूप परिणामत: अब सहगामी क्रियाएं शिक्षा का एक आवश्यक अंग बन गयी है।

10.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप:

1. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का महत्व को समझ सकेंगे।
2. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के प्रकार को जान सकेंगे।
3. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का आयोजन को समझ सकेंगे।
4. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन में कठिनाईयाँ को समझ सकेंगे।
5. कतिपय पाठ्य-सहगामी क्रियाएं को समझ सकेंगे।
6. पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन को जान सकेंगे।

10.2पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का महत्व

नि:संदेह बालक-बालिकाओं के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से पाठ्य-सहगामी क्रियाएं अत्यंत महत्वपूर्ण सार्थक व आवश्यक होती है। आधुनिक मनोविज्ञान के स्वीकृत सिद्धान्तों के अनुसार बहु-आयामी व्यक्तिव के विकास के लिए पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का शिक्षा संस्थाओं में आयोजन करना परमावश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का महत्व स्व-स्पष्ट है। इसके महत्व को निम्न रूप में रेखांकित किया जा सकता है-

1. **मूल प्रवृत्तियों का शोधन व मार्गान्तरीकरण**– प्रत्येक बालक का जन्म कुछ मूल प्रवृत्तियों के साथ होता है। जन्म के समय इन मूल प्रवृत्तियों की दिशा व तीब्रता स्पष्ट नहीं होती है किन्तु विकास के साथ-साथ इनकी दिशा व तीब्रता स्पष्ट होती जाती है। नकारात्मक मूल प्रवृत्तियों के शोधन तथा मार्गान्तरीकरण के साथ-साथ मूल प्रवृत्तियों की दिशा को नियन्त्रित करना सीखना सामाजिक दृष्टि से वांछनीय होता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के

द्वारा यह कार्य सरलता से किया जा सकता है। खेलवूâद, व्यायाम, समाज सेवा, वाद-विवाद व सांस्कृतिक क्रियाकलापों के द्वारा छात्रों की मूल-प्रवृत्तियों के समुचित विकास व शोधन में सहायता मिलती है।

2. **नागरिकता की शिक्षा** - पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से छात्रों में अनेक ऐसे गुणों का विकास किया जा सकता है जो किसी भी राष्ट्र के एक सुनागरिक के लिए आवश्यक होते है। छात्रों में सहयोग, सहानुभूति, नेतृत्व, दलीय मित्रता आदि अनेक गुणों का विकास पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से किया जा सकता है। इनके माध्यम से राष्ट्र के भावी नागरिक अधिकार व कत्र्तव्यों का ज्ञान प्राप्त करके अपने उत्तरदायित्वों को समझ सकता है।
3. **सामाजिक भावना का विकास** -पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन से बालकों में सामाजिक भावना का विकास होता है। समाज-सेवा शिविर स्काउटिंग, खेलवूâद, एन.सी.सी., एन.एस.एस., श्रमदान, रेडक्रॉस आदि कार्यो के द्वारा बालकों में सामाजिकता का विकास किया जा सकता है। इनके माध्यम से बालक सामाजिक आचार-विचारों को सीखता है, सामाजिक व्यवहारों का ज्ञान प्राप्त करता है, सामाजिक परम्पराओं को जानता है तथा सामाजिक बुराइयों तथा कुरीतियों से अवगत होकर उनके प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित कर सकता है।
4. **अवकाश के समय का सदुपयोग** - पाठ्य सहगामी क्रियाओं के रूप में छात्र प्राय: किसी हॉबी का चयन कर लेता है तथा इस हॉबी के रूप में वह अपने अवकाश के समय का सदुपयोग करता है। हॉबी के द्वारा वह अवकाश के समय में चित्रकारी, संगीत, गायन, भ्रमण जैसे उपयोगी क्रियाकलाप कर सकता है। इनसे छात्रों की रूचियों के विकास पर भी अच्छा प्रभाव पड़ता है।
5. **समुचित विकास** - पाठ्य सहगामी क्रियाएं छात्रों के शारीरिक एवं बौद्धिक विकास में भी सहायक सिद्ध होती है। उनके द्वारा न केवल शरीर स्वस्थ बनता है वरन् मानसिक विकास में भी सहायता मिलती है। खेलवूâद, ड्रिल, परेड, कुश्ती, तैराकी, नौका, एन०सी०सी०, आदि शारीरिक विकास के लिए उपयोगी साबित होती है। दूसरी ओर भाषण, नाटक, वाद-विवाद, साहित्य सभा, निबन्ध लेखन, विद्यालय पत्रिका आदि क्रियाकलाप बालकों के बौद्धिक विकास के लिए उपयोगी सिद्ध होते हैं।
6. **अनुशासन में सहायक** – पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा शिक्षा संस्थाओं में व्याप्त अनुशासनहीनता की समस्या पर नियन्त्रण किया जा सकता है। जब बालक इन सृजनात्मक व रचनात्मक क्रियाओं में प्रतिभाग करता है तो उसे विध्वंसात्मक तथा अनुशासनहीनता वाली क्रियाओं को करने का न तो समय ही मिलता है और न ही उसकी इस दिशा में प्रवृत्ति होती है। वह अपनी अतिरिक्त शक्ति को तोड़-फोड़ के कार्यो में न लगाकर सृजनात्मक व रचनात्मक क्रियाकलापों को करने में लगाता है।

7. **नैतिकता का विकास** –पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा बालक में अनेक नैतिक आध्यात्मिक गुणों का विकास भी सम्भव होता है। विविध प्रकार की पाठ्यसहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग के द्वारा बालक में सहयोग, त्याग, सदाचार, सच्चाई, वफादारी, ईमानदारी, सद्भावना, धैर्य, आज्ञापालन आदि नैतिक गुणों का स्वत: विकास हो जाता है।
8. **व्यावहारिक ज्ञान-** (सहगामी क्रियाओं के माध्यम से बालकों को वास्तविक जीवन का व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त होता है भ्रमण शिक्षा, यात्रायें, ग्राम पर्यवेक्षण, पिकनिक, समाज-सेवा, शिविर आदि के माध्यम से व्यक्ति को जीवन की वास्तविकताओं का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है। साहित्यिक क्रियाओं के द्वारा बालकों में केवल सैद्धान्तिक ज्ञान में वृद्धि होती है। जबकि पाठ्य सहगामी क्रियाएं सैद्धान्तिक ज्ञान की पुष्टि में सहायक होकर व्यावहारिकता का बोध कराती है।
9. **मनोरंजन**– पाठ्य सहगामी क्रियाएं छात्रों को मनोरंजन का अवसर प्रदान करती है। कक्षा-कक्ष में अध्यापक के उबाऊ भाषण, पुस्तकों के काले-काले अक्षर तथा अँगुलियों को थका देने वाली लिखाई के नीरस तथा घुटनपूर्ण वातावरण में छात्र को थकान का अनुभव होने लगता है। शारीरिक व मानसिक थकान को दूर करने में पाठ्य सहगामी क्रियाएं अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है। इससे विद्यालय जीवन की नीरसता समाप्त होकर उसमें विविधता आती है तथा छात्रगण रोचक व मनोरंजक क्रियाओं से अपना मनोरंजन कर पाते है।

   स्पष्ट है कि विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आधा महत्व होता है। इनके आयोजन से छात्रों के व्यक्तित्व का सन्तुलित तथा सर्वांगीण विकास सम्भव होता है।

10.3पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के प्रकार-

शिक्षा संस्थाओं में अनेक प्रकार की पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जा सकता है। अवबोध में सहजता की दृष्टि से पाठ्य सहगामी क्रियाओं को निम्न प्रकारों में बॉटा जा सकता है-

शैक्षिक क्रियाएं – वाद-विवाद व प्रतियोगिताओं का आयोजन एव ंसाहित्य-परिषद, विज्ञान, क्लब, भूगोल, परिषद आदि का संगठन आदि।

शारीरिक क्रियाएं – आन्तरिक तथा बाह्य खेलवूâद, व्यायाम, योग, तैराकी, नौकायन, परेड, ड्रिल, साइकिल चलाना, एन.सी.सी. आदि।

साहित्यिक क्रियाएं – साहित्य सभा, नाटक, कविता-पाठ, भाषण पत्रिका प्रकाशन, विद्यालय समाचार-पत्र प्रकाशन आदि।

नागरिक क्रियाएं – सहकारी भण्डार, बाल बैंक, श्रमदान, बाल सभा, स्वायत्त-शासन, मॉक अदालत, मॉक संसद आदि।

ललित क्रियाएं – संगीत, नाटक, गोष्ठी, गायन, वादन-नृत्य, चित्रकला, स्वूâल, बैण्ड आदि।

सामाजिक क्रियाएं – भ्रमण, पिकनिक, ग्राम-पर्यवेक्षण, बालचर, स्काउटिंग, बुलबुल, गर्ल-गाईड, सामाजिक सेवा, श्रमदान, प्राथमिक चिकित्सा, प्रौढ़-शिक्षा केन्द्र, सफाई सप्ताह आदि।

शिल्प क्रियाएं – खिलौने बनाना, सिलाई करना, कढ़ाई करना, जिल्दसाजी करना, मंजन, साबुन व मोमबत्ती आदि बनाना।

अन्य क्रियाएं – टिकटें, सिक्के, पत्थर इकट्ठे करना, फोटो खीचना, एलबम बनाना, संग्रहालय बनाना आदि।

10.4 पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का आयोजन

शिक्षा संस्थाओं में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना कोई सरल कार्य नहीं है वस्तुत: यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है जिसके समुचित ढंग से सम्पादन के लिए अत्यंत सावधानी, प्रयास व धैर्य की जरूरत होती है। पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन के समय निम्न प्रमुख बातों को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए-

विविधता का भाव– विविधता में एक-दो प्रकार की क्रियाओं के स्थान पर विविध प्रकार की क्रियाओं की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे सभी छात्र अपनी व्यक्तिगत विभिन्नता के आधार पर अपनी इच्छा, रूचि एवं योग्यता के आधार पर क्रियाओं का चयन करके उनमें भाग ले सवेंâ।

लोकतांत्रिक सिद्धान्त– पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का आयोजन प्रजातान्त्रिक ढंग से किया जाना चाहिए। इनके नियोजन, संचालन व पर्यवेक्षण में अध्यापकों तथा छात्रों दोनों का ही प्रतिभाग व सहयोग प्राप्त करना आवश्यक होता है।

समय अनुरुपता– पाठ्य सहगामी क्रियाओं को शैक्षणिक शिक्षण अधिगम में बाधक न होकर उसके सहायक के रूप में आयोजित किया जाना चाहिए। अत: ये अत्यधिक लम्बे समय तक जारी रहने वाली नहीं होनी चाहिए वरन विद्यालय समय में ही पूर्ण हो जानी चाहिए।

वांछित स्वीकृति–पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन के लिए प्रधानाध्यापक की स्वीकृति आवश्यक होती है। इसके साथ-साथ कुछ पाठय सहगामी क्रियाओं के आयोजन के लिए अभिभावकों की स्वीकृति प्राप्त करना भी आवश्यक है।

मनोरंजन रोचकता– क्योंकि पाठ्य-सहगामी क्रियाएं ज्ञानवर्धन व मनोरंजन दोनों के निमित्त आयोजित की जाती हैं। इसलिए रोचक तथा सरल पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का ही चयन करना चाहिए।

निरीक्षण व पर्यवेक्षण– पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अध्यापकों के द्वारा समुचित निरीक्षण किया जाये परन्तु निरीक्षण छिद्रान्वेषक या आलोचनात्मक न होकर उत्साहवर्धक तथा पथ प्रदर्शक के रूप में करना चाहिए।

अवसरों की समानता–सभी छात्रों को विभिन्न प्रकार की पाठय-सहगामी क्रियाओं में भाग लेने के यथासम्भव समान अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।

संसाधन व्यवस्था– पाठ्य सहगामी पर्याप्त वित्तिय व अन्य साधनों की व्यवस्था पूर्व में ही कर लेनी चाहिए। कोई भी क्रिया प्रारम्भ करने से पूर्व देख लिया जाये कि उसके संचालन हेतु पर्याप्त साधन व सुविधायें उपलब्ध हैं।

प्रतिवेदन व मूल्यांकन– पाठ्य सहगामी क्रिया के पूर्ण होने पर उसका समेकित ढंग से मूल्याँकन किया जाना चाहिए तथा उसका विधिवत् प्रतिवेदन तैयार किया जाना चाहिए।

10.5पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन में कठिनाईयाँ

शिक्षा संस्थाओं के क्रिया कलापों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का एक महत्वपूर्ण व अपरिहार्य स्थान होने के बावजूद पाठ्य सहगामी क्रियाओं के नियोजन व संचालन में तरह-तरह की कठिनाईयाँ आती है। पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन में होने वाली कुछ प्रमुख कठिनाईयाँ निम्नवत् हो सकती है-

संसाधनों का अभाव- विद्यालय में मानवीय एवं भौतिक साधनों के अभाव में प्राय: किसी भी प्रकार की पाठ्य-सहगामी क्रिया को प्रारम्भ करना सम्भव नहीं हो पाता है अथवा उसे सफलतापूर्वक आयोजित नहीं कर सकते है। प्राय: धन, भवन, स्थान, उपकरण, तथा अनुभवी व्यक्तियों का अभाव पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन को प्रभावित करता है।

नकारात्मक दृष्टिकोण– प्रधानाचार्य व अधिकारियों का नकारात्मक दृष्टिकोण भी पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के संचालन में बाधक होता है। प्रधानाचार्य तथा अन्य अधिकारी प्राय: पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को एक वित्तीय निरर्थकता समझते है।

अन्धानुकरण– कुछ विद्यालय अन्य विद्यालयों में संचालित हो रही पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अन्धा अनुकरण करते हुए अपने यहाँ पर उन्हीं पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना चाहते हैं। परन्तु वे अपनी परिस्थतियों को ध्यान में नहीं रखते हैं। वास्तव में प्रत्येक विद्यालय की परिस्थितियों तथा उपलब्ध संसाधनों के अनुरूप ही पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना चाहिए।

परीक्षा केन्द्रित शिक्षा-प्रणाली– शिक्षा-प्रणाली के परीक्षा केन्द्रित होने के कारण छात्र पाठ्यचर्या तो पढ़ना चाहते हैं परन्तु वे पाठ्य- सहगामी क्रियाओं को कम महत्व देते हैं और उनमें इच्छा व लगन के साथ भाग नहीं लेते है।

समय-सारणी में कम महत्व– विद्यालय की समय-सारणी में भी प्राय: पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को महत्व नहीं दिया जाता है। परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण विषयों को ही समय-सारणी में महत्व दिया जाता है।

अध्यापकों की अरूचि– प्राय: अध्यापक पाठ्य सहगामी क्रियाओं को एक भार के रूप में ही देखते है। पाठ्यचर्या सम्बन्धी क्रियाओं के भार से दबे रहने के कारण पाठ्य सहगामी क्रियाओं को संचालित करने के लिए उन्हें शक्ति तथा समय नहीं मिल पाता है। परिणामत: वे इनमें रूचि नहीं लेते है।

छात्रों की अरूचि– पढ़ाई में बाधा आने तथा परीक्षा की तैयारी पर अधिक ध्यान देने के कारण अनेक छात्र पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग नहीं लेते है। इनका संचालन समय-सारणी के अतिरिक्त

समय में होना, छात्रों का विद्यालय से दूर निवास-स्थान होने के कारण छात्रों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में अरूचि रहती है।

अभिभावकों की अरूचि– इनमें से अनेक कारणों को काफी हद तक दूर किया जा सकता है जैसे छात्रों को प्रमाण-पत्र देना, पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को विद्यालय समय के अन्दर ही संचालित करना, अभिभावकों से सम्पर्वâ स्थापित कर उनका सहयोग प्राप्त करना, वार्षिक परीक्षा में पाठ्य सहगामी क्रियाओं को महत्व देना आदि से पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन की बाधाओं को दूर किया जा सकता है।

10.6 कतिपय पाठ्य-सहगामी क्रियाएं -

छात्रों के सर्वांगीण विकास को प्रोत्साहित करने के लिए विद्यालय में तरह-तरह की पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। कुछ प्रमुख पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का आगे संक्षेप में वर्णन किया जा रहा है–

छात्र परिषद– छात्र परिषद आज प्राय: प्रत्येक विद्यालय में पायी जाती है। किसी विद्यालय में यह बाल-सभा कहलाती है तो किसी विद्यालय में यह शिक्षा परिषद या छात्र संघ या विद्यालय सभा जैसे नामों से जानी जाती है। इस पाठ्य-सहगामी क्रिया का मुख्य उद्देश्य छात्रों को संस्था की प्रशासनिक प्रक्रिया में लाना है। छात्र परिषद के और भी अनेक लाभ है। यदि विद्यालय में छात्र परिषद होती है तो विद्यालय के अनेक कार्यो में छात्रों का सक्रिय सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। इसके साथ-साथ छात्र परिषद विद्यालय के छात्रों में अनुशासन प्रियता नेतृत्व गुण, भाषण कला, आत्म संयम, आत्म नियन्त्रण, आयोजन सामथ्र्य तथा चरित्रिक व मानवीय गुणों का विकास करने में योगदान करती है। छात्र परिषद के क्रियाकलापों में प्रतिभाग करते समय इसके प्रजातान्त्रिक स्वरूप, स्तरानुवूâल क्रिया कलाप, अधिकाधिक छात्र सहयोग, समुचित नियन्त्रण, उपयोगिता व वित्तीय सुविधाओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

विद्यालय पत्रिका - विद्यालय की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में दूसरी प्रमुख क्रिया विद्यालय-पत्रिका का प्रकाशनहै। विद्यालयों में पत्रिकाओं का प्रकाशन कई आधारों पर किया जा सकता है। पत्रिकाओं का प्रकाशन मासिक, त्रैमासिक, अद्र्धवार्षिक किसी भी आधार पर किया जा सकता है। स्तर के आधार पर पत्रिकायें कक्षा पत्रिका, विभाग पत्रिका तथा सम्पूर्ण विद्यालय पत्रिका हो सकती है। पत्रिका प्रकाशन से अनेक लाभ होते है। इससे छात्रों की लेखन शक्ति व शैली परिमार्जित होती है। आत्म सम्मान का विकास होता है, छात्रों के अभिभावकों को पत्रिकाओं द्वारा ही विद्यालय की प्रगति व अन्यानेक गतिविधियों का ज्ञान होता है, पत्रिका प्रकाशन में अनेक छात्रों का सहयोग होता है उन्हें अलग-अलग तरह की जिम्मेदारियाँ दी जाती है जिससे प्रकारान्तर से उन्हें प्रकाशन का प्रशिक्षण मिलता है तथा जिम्मेदारियाँ निर्वहन करने की क्षमता विकसित होती है।

शैक्षिक भ्रमण- शैक्षिक भ्रमण से तात्पर्य उद्योग-संगठन, ऐतिहासिक स्थल, व्यावसायिक संगठन, धार्मिक तथा सांस्कृतिक स्थान तथा सामाजिक उत्सवों को देखने के लिए की जाने वाली छोटी-

छोटी यात्राओं से है। इस प्रकार के भ्रमणों का अत्यधिक शैक्षिक महत्व होता है। शैक्षिक भ्रमण बालकों को वास्तविक ज्ञान प्रदान करते हैं, उनमें व्यवहार कुशलता का विकास होता है। भ्रमणों से विद्यालय जीवन में सरसता तथा क्रियाओं में विविधता आती है। इससे विद्यालय जीवन की नीरसता का अन्त होता है। शैक्षिक भ्रमणों से छात्रों में उत्साह एवं लगन उत्पन्न होती है तथा उन्हें अनेक क्रियाएं करने की प्रेरणा मिलती हैं।

समाज सेवा क्रियाएं - विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं में कुछ ऐसी क्रियाएं भी आयोजित की जाती है जो बालकों में समाज सेवा की भावना का विकास करती है। इस प्रकार की क्रियाओं में श्रमदान, जूनियर रेडक्रॉस, गर्ल गाइड, बुलबुल तथा बालचर, प्राथमिक चिकित्सा दल, एन.सी.सी., एन.एस.एस., सहकारी समिति तथा समाज सेवा दल आदि पाठ्य सहगामी क्रियाओं को सम्मिलित किया जा सकता है।

खेलकूद – बालकों के शारीरिक विकास के लिए अनेक प्रकार की शारीरिक क्रियाएं आवश्यक हैं। बालक स्वभाव से ही चंचल होता है। वह लम्बे समय तक अध्ययन नहीं कर सकता है। उनमें अतिरिक्त शारीरिक शक्ति होने के कारण वह तरह-तरह की शारीरिक क्रियाएं करता रहता है। खेल न केवल शारीरिक दृष्टि से ही आवश्यक है वरन् मानसिक, सामाजिक, चारित्रिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण होता है।

रुचिपूर्ण शौक– रूचियाँ विद्यालय कार्यो से पर्याप्त रूप से भिन्न होती है किन्तु इनके शैक्षिक महत्व के कारण किसी भी विद्यालय के लिए इनकी अवहेलना करना सम्भव नहीं होता है। रूचियों से तात्पर्य ऐसे कार्यो से होता है जो व्यक्ति मन लगाकर करता तो है लेकिन उसका आर्थिक पक्ष नहीं होता है। यह कार्य केवल आनन्द प्राप्ति अथवा समय व्यतीत करने की दृष्टि से किये जाते है। इनका लक्ष्य जीविकोपार्जन करना कदापि नहीं होता है। वस्तुत: छात्रों के लिए अपनी रूचि अनुवूâल कार्य करने की व्यवस्था प्रत्येक विद्यालय में होनी चाहिए।

साहित्यिक क्रियाएं - विद्यालय में कुछ सहगामी क्रियाओं के रूप में साहित्यिक क्रियाएं भी करायी जा सकती है। साहित्यिक क्रियाओं में भाषण, निबन्ध-लेखन, वाद-विवाद, नाट्यभिनय, कविता-पाठ, साहित्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा सकता है। इनमें से वाद-विवाद तथा भाषण माला अधिक महत्वपूर्ण माने जाते है।

10.7पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन-

प्रत्येक शिक्षा संस्था में कुछ न कुछ पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन अवश्य किया जाता है। विद्यालय के समय-विभाग चक्र में इनकी व्यवस्था करना अत्यंत उपयोगी होता है। ये क्रियाएं छात्रों के सर्वागीण विकास की दृष्टि से काफी उपयोगी होती है। यदि इन क्रियाओं का आयोजन अच्छे ढंग से किया जाता है तो इसके अच्छे परिणाम प्राप्त होते है। शिक्षा संस्था में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन में निम्न प्रशासनिक संगठन को अपनाया जा सकता है।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन के संगठनात्मक स्वरूप में प्रधानाध्यापक प्रत्येक सहगामी क्रियाओं के संचालन में एक परामर्शदाता के रूप में कार्य करता है तथा वह अपने दीर्घ अनुभव तथा दूरदृष्टि के द्वारा शिक्षकों व छात्रों का मार्गदर्शन करता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन में प्रधानाध्यापक के परामर्श बड़े उपयोगी होते है। परामर्शदाता के रूप में कार्य करते समय प्रधानाचार्य विद्यालय में सम्पन्न होने वाली विभिन्न क्रियाओं से भी अवगत हो जाता है।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन के लिए किसी उपयुक्त अध्यापक को प्रभारी बनाना चाहिए। क्योंकि प्रधानाध्यापक समस्त कार्य स्वयं नहीं कर सकता है। अत: विद्यालयों में उत्तरदायित्व का विकेन्द्रीकरण किया जाना चाहिए। इसलिए सहगामी क्रियाएं अध्यापकों की देखरेख में ही सम्पादित होनी चाहिए। वस्तुत: छात्रों का बौद्धिक स्तर तथा अन्य क्षमतायें इतनी नहीं होती है कि वे शिक्षकों के मार्ग निर्देशन के बिना विभिन्न कार्यो को स्वयं ही कर सके। अत: पाठ्य सहगामी-क्रिया के संचालन हेतु किसी उपयुक्त, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक को उत्तरदायी बना दिया जाता है। कभी-कभी विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन हेतु अलग-अलग अध्यापकों को उत्तरदायी बनाया जाता है।

विद्यालय में पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का नियोजन करने के लिए, उन्हें व्यावहारिक रूप से कार्यान्वित करने में, उनको आगे बढ़ाने में तथा उसका मूल्याँकन करने हेतु प्राय: एक आयोजन समिति का गठन किया जाता है। इस समिति के द्वारा विभिन्न क्रियाकलापो के संचालन के लिए अलग-अलग समितियाँ बनाकर छात्रों का सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। इससे छात्रों में नेतृत्व गुण का विकास होता है तथा वे उत्तरदायित्वों को लेना व पूर्ण करना सीख जाते है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में छात्रों का प्रतिनिधित्व विद्यालय परिसरों में व्याप्त अनुशासनहीनता तथा छात्र-असन्तोष को भी समाप्त कर सकते है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के किन्ही दो महत्वों को लिखिए
2. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के चार प्रकार लिखिए
3. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन के समय किन प्रमुख बातों को ध्यान में रखना चाहिए?
4. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन में होने वाली प्रमुख कठिनाईयाँ कौन सी है?

10.9 सारांश

क्योंकि शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को भावी जीवन के लिए तैयार करती है। इसलिए यह विद्यालय जीवन तथा कक्षा-कक्ष तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए। अपने भावी वास्तविक जीवन में व्यक्ति को अनेक तरह के संघर्ष करने पड़ते है, अनेक जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा अनेक प्रकार की प्रकृति वाले व्यक्तियों के

सम्पर्वâ में आना पड़ता है। यदि विद्यालय की शिक्षा जीवन की तैयारी है तो विद्यालय प्रांगण में छात्रों को इन सबकी शिक्षा अवश्य मिलनी चाहिए। अत: विद्यालय में दी जानेवाली शिक्षा कक्षा-कक्ष में दिये जाने वाले विषयगत ज्ञान व बोध तक ही सीमित नहीं रह सकती है वरन् उसे छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए उनको अपने भावी जीवन में आने वाले संघर्षों का सामना करने, समस्याओं का समाधान करने, तथा विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के साथ व्यवहार करना सिखाना जरूरी है। पाठ्यचर्या सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था इसी उद्देश्य के निमित्त की जाती है।

10.10 शब्दावली

साहित्यिक क्रियाएं - विद्यालय में कुछ सहगामी क्रियाओं के रूप में साहित्यिक क्रियाएं भी करायी जा सकती है। साहित्यिक क्रियाओं में भाषण, निबन्ध-लेखन, वाद-विवाद, नाट्यभिनय, कविता-पाठ, साहित्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा सकता है। इनमें से वाद-विवाद तथा भाषण माला अधिक महत्वपूर्ण माने जाते है।

ललित क्रियाएं – संगीत, नाटक, गोष्ठी, गायन, वादन-नृत्य, चित्रकला, स्वूâल, बैण्ड आदि।

10.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के किन्ही दो महत्व:
    a. मूल प्रवृत्तियों का शोधन व मार्गान्तरीकरण
    b. नागरिकता की शिक्षा
2. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के चार प्रकार:
    a. शैक्षिक क्रियाएं
    b. शारीरिक क्रियाएं
    c. साहित्यिक क्रियाएं
    d. नागरिक क्रियाएं
3. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन में होने वाली कुछ प्रमुख कठिनाईयाँ निम्नवत् हो सकती है-
    a. संसाधनों का अभाव
    b. नकारात्मक दृष्टिकोण
    c. अन्धानुकरण–
    d. परीक्षा केन्द्रित शिक्षा-प्रणाली
    e. समय-सारणी में कम महत्व

4. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन के समय निम्न प्रमुख बातों को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए-
    a. विविधता का भाव–
    b. लोकतांत्रिक सिद्धान्त–
    c. समय अनुरुपता
    d. वांछित स्वीकृति–मनोरंजन रोचकता–निरीक्षण व पर्यवेक्षण–
    e. अवसरों की समानता
    f. संसाधन व्यवस्था
    g. प्रतिवेदन व मूल्यांकन

10.12 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. यादव,सीताराम(2014), पाठ्यचर्या विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन
2. जोशी,दिनेशचंद्र,मेहता,चतरसिंह,(2007), शिक्षक प्रशिक्षण के सिद्धांत, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
3. शर्मा डॉ. आर.ए., पाठ्यचर्या,शिक्षणकला एवं मूल्यांकन(2012),आर.लाल.बुक डिपो मेरठ
4. पुरोहित,जगदीश, नारायण(2007), भावी शिक्षकों के लिए आधारभूत कार्यक्रम,राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
5. प्रो. गुप्ता एस. पी, गुप्ता अलका,(2014),शिक्षण कला,शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

10.13 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठ्य सहगामी क्रियाओं से आप क्या समझते हो ? विद्यालय में आप किस प्रकार इस क्रियाओं का आयोजन करा सकते हैं ? विस्तार पूर्वक उत्तर दीजिए
2. समावेशी कक्षों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं को किस प्रकार कराया जा सकता है? विस्तार पूर्वक उत्तर दीजिए

इकाई 11- पाठ्यचर्या के प्रतिमान (Models of Curriculum

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 पाठ्यचर्या निर्माण तथा विकास

11.3.1 टाइलर प्रतिमान

11.3.2 टाबा प्रतिमान

11.3.3 सेलर तथा अलैक्जैण्डर प्रतिमान

11.3.4 ओलिवर प्रतिमान

11.4 सारांश

11.5 शब्दावली

11.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

11.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

11.8 निबंधात्मक प्रश्न

11.1 प्रस्तावना

प्राचीन काल में पाठ्यचर्या विकास व निर्माण का कोई औपचारिक तरीका नहीं अपनाया जाता था वरन् शिक्षकों के द्वारा ही कुछ प्रकरणों को चिन्हित व क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित करके उन्हें पाठ्यचर्या की संज्ञा दे दी जाती थी। परन्तु आधुनिक काल में पाठ्यचर्या निर्माण व विकास को एक अत्यत्नत महत्वपूर्ण तथा सार्थक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है तथा इसके लिए कुछ औपचारिक सोपानों, विचार-विमर्शों तथा प्रतिमानों को अपनाने का आग्रह किया जाता है। प्रतिमान से तात्पर्य पाठ्यचर्या निर्माण व विकास के उस अभिकल्प से होता है जिसका अनुसरण करके उन्हीं विशिष्ट जरूरतों, संदर्भों या लक्ष्यों को सामने रखकर पाठ्यचर्या का निर्माण व विकास किया जाता है। पाठ्यचर्या निर्माताओं के द्वारा इस प्रकार से अपनाये गये प्रतिमान के अनुरूप पाठ्यचर्या के किसी

एक या अधिक घटकों का अभिविन्यास करते हैं, पुन: संयोजित करते हैं या पुन: व्यवस्थित करते हैं। वस्तुत: पाठ्यचर्या क विस्तृत सम्प्रत्यय है जो शिक्षा या अधिगम की समस्त अन्त:क्रियाओं जो शिक्षक व छात्र को बीच अपेक्षित है, को उद्देश्यपूर्ण व पूर्व-क्रियात्मक ढंग से संगठित, क्रमबद्ध तथा प्रबन्धित करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है एवं इसमें छात्रों द्वारा अर्जित की जाने वाली विषयवस्तु का भी समावेश रहता है। पाठ्यचर्या के प्रतिमान शैक्षणिक क्रियाकलापों को दूर करने के लिए दिशा निर्देश प्रदान करते हैं। इस प्रकार से पाठ्यचर्या प्रतिमान निम्नलिखित प्रमुख बातों को प्रमुखता से परिलक्षित करता है–

(i) पाठ्यवस्तु चिहनीकरण (Content Indentification)

(ii) आकलन प्रविधियाँ (Assessment Techniques)

(iii) शिक्षण व्यूह रचनाएं (Techning- Strategies)

(iv) अधिगम क्रियाएं (Learning Activities)

(v) समूहन व् गति (Grouping and Pacing)

(vi) प्रारंभ व् समापन बिंदु (Introduction and Closure)

(vii) संसाधनों की उपलब्धता (Availability of Resources)

(viii) विभेदनकारी घटक (Differentiation Factors)

(ix) परिणामों का मूल्यांकन (Evaluation of Results)

(x) विस्तार क्रियाएं (Extension Activities)

नि:सन्देह पाठ्यचर्या प्रतिमान के द्वारा पाठ्यचर्या निर्माण व विकास को एक प्रकार की वैज्ञानिक अभिमुखता(Scientific Orientation) प्रदान की जाती है। पाठ्यचर्या निर्माण के आधार, पाठ्यचर्या के प्रकार व सिद्धान्त आदि बातें पाठ्यचर्या प्रतिमान के निर्माण के लिए वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार करते हैं एवं विभिन्न विद्वानों के द्वारा पाठ्यचर्या निर्माण व विकास की प्रक्रिया में जिन प्रमुख बातों पर विचार करने के लिए वरीयता दी गयी है उसके तदनुरूप उनके द्वारा पाठ्यचर्या के अनेक प्रतिमान प्रस्तुत किये गये हैं।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप :

1. पाठ्यचर्या के विभिन्न प्रतिमानों को समझ सकेंगे।
2. पाठ्यचर्या निर्माण तथा विकास को समझ सकेंगे।

11.3 पाठ्यचर्या निर्माण तथा विकास

पाठ्यचर्या निर्माण तथा विकास के चार प्रमुख प्रतिमान निम्न हैं–

1. टाइलर प्रतिमान(Tyler Model) अथवा प्रशासनिक प्रतिमान (Administrative Model)
2. टाबा प्रतिमान (Taba Model) अथवा आधारिक प्रतिमान (Grass-Root Model)
3. सेलर व अलैक्जैण्डर प्रतिमान (Sayler and Alexander Model) अर्थात् प्रदर्शन प्रतिमान((Demonstration Model)
4. ओलीवर प्रतिमान (Oliver Model) अर्थात् व्यवस्था विश्लेषण प्रतिमान (System Analysis Model)

नि:सन्देह पाठ्यचर्या विकास व निर्माण की प्रक्रिया में पाठ्यचर्या के विभिन्न प्रतिमान अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। वस्तुत: दार्शनिक विचारधारा सामाजिक दृष्टिकोण तथा व्यैक्तिक मान्यताओं में निरन्तर परिवर्तन आते रहते हैं एवं इस प्रकार के परिवर्तन सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के साथ-साथ पाठ्यचर्या के निर्धारण को भी सार्थक रूप से प्रभावित करते हैं। आगे पाठ्यचर्या निर्माण व विकास के विभिन्न प्रतिमानों की संक्षेप में चर्चा की जा रही है।

सारणी

पाठ्यचर्या के प्रतिमान

(Curriculum Model)	(Nature)	(Specialization)	(Belief)
टाइलर प्रतिमान (Tylor Model)	निगमित (Deductive)	पाठ्यचर्या विकास व् निर्माण में तृणमूल उपागम को अपनाना (Grass-Root Approach to Curriculum	शैक्षिक उद्देश्यों के चयन से पाठ्यचर्या निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ होनी चाहिए (Process should by started by

		Development and Construction)	selecting educational Objective)
(Hilda Taba Model) टाबा प्रतिमान	आगमित/निगमित (Deductive/ Inductive)	पाठ्यचर्या विकास व् निर्माण में नियाजन पक्ष पर अधिक जोर देना (Special Focus to the Planning Phase in Curricu-lum Development and Construction)	पाठ्यचर्या शिक्षकों के द्वारा बनाई जानी चाहिए (Curriculum should be developed by the Teachers)
सेलर व अलैक्जैण्डर प्रतिमान (Saylor and Alexander Model)	निगमित (Deductive)	पाठ्यचर्या विकास व् निर्माण के नियोजन का कार्य शैक्षिक लक्ष्यों व् उद्देश्यों से प्रारंभ करना (Planning of Curriculum Development and Constru-ction begins by major Goals and Objectives)	पाठ्यचर्या विकास व् निर्माण के तत्वों को पहचानना चाहिए (Elements of Curriculum development should be depicted)
ओलीवर प्रतिमान (Oliver Model)	शैक्षणिक (Didactic)	पाठ्यचर्या विकास व् निर्माण की क्रमबद्द रूप वाली व्यापक प्रक्रिया अपनाना (Comprehensive Step-by-Step Process of Curriculum Development and Construction)	पाठ्यचर्या निर्माण में पाठ्यचर्या के स्रोत से मूल्यांकन करने तक की प्रकृति को अपनाना चाहिए (Process form Source of Curriculum to Evaluation should be followed in Curriculum Construction.

11.3.1 टाइलर प्रतिमान (Tylor Model) - पाठ्यचर्या के टाइलर प्रतिमान (Tyler Model of Curriculum) को सन् 1949 में राल्फ टाइलर (Ralph Tyler) के द्वारा अपनी पुस्तक 'Principles of Curriculum and Instruction" में प्रस्तुत किया था जिसमें उसके शिक्षण उद्देश्यों से

सम्बन्धित निम्न चार प्रश्नों पर जोर देते हुए उनके उत्तरों का आधार पर पाठ्यचर्या का निर्माण व विकास करने का आग्रह किया था–

- विद्यालय को किन शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करना चाहिए?
- इन उद्देश्यों को पूरा करने किन शैक्षिक अनुभवों को देना चाहिए?
- इन शैक्षिक अनुभवों को किस प्रकार से प्रभावी रूप संगठित किया जा सकता है?
- किस प्रकार से इन शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति को जाना जा सकता है?

टाइलर पाठ्यचर्या प्रतिमान के सोपान (Steps of Tyler Model of Curriculum Development)

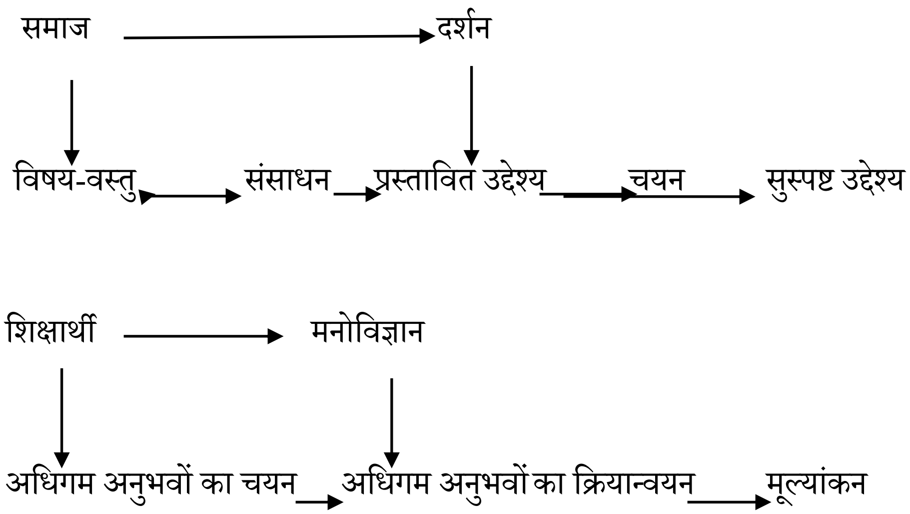

टाइलर के द्वारा प्रस्तावित पाठ्यचर्या प्रतिमान को प्रशासनिक प्रतिमान के रूप में भी जाना जाता है। वस्तुत: यह प्रतिमान शिक्षा व्यवस्था के प्रशासनिक पक्षों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति को सुनिश्चित करने की प्रशासनिक व्यवस्था करने पर अधिक जोर देता है।

11.3.2 टाबा प्रतिमान (Hilda Taba Model)

पाठ्यचर्या के टाबा प्रतिमान को हिल्डा टाबा ने अपनी पुस्तक 'Curriculum Development : Theory and Practice' में सन् 1969 में प्रतिपादित किया था। उसने पाठ्यचर्या बनाने में कुछ निश्चित क्रम को अपनाने तथा इस प्रक्रिया में पाठ्यचर्या को पढ़ाने वाले शिक्षकों की प्रतिभागिता का आग्रह भी किया था। इसीलिए उसके द्वारा पाठ्यचर्या निर्माण के प्रतिमान को आधारिक प्रतिमान (Grass Root Model) कहा जाता है तथा इस उपागम को आधारिक उपागम (Grass-Root Approach) या तृणमूल प्रतिमान उपागम (Grass- Root Model Approach) भी कहा जाता है। हिल्डा टाबा ने अपने इस प्रतिमान में सात सोपानों की चर्चा करते हुए शिक्षकों से प्राप्त जानकारी को

सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना था और कहा था कि टाइलर के प्रशासनिक प्रतिमान की तुलना में उसका आधारिक प्रतिमान वास्तविकताओं के अधिक निकट रहता है। टाबा द्वारा पाठ्यचर्या निर्माण के लिए बताये गये ये सात सोपान निम्नवत हैं–

1. जरूरतों का निदान (Diagnosis of Need)
2. उद्देश्यों का निर्धारण (Formulation of Objectives)
3. पाठ्यवस्तु का चयन (Selection of Content)
4. पाठ्यवस्तु का संगठन (Organization of Content)
5. अधिगम-अनुभवों का चुनाव (Selection of Learning Experiences)
6. अधिगम क्रियाओं का संगठन (Organization of Learning Activities)
7. मूल्यांकन व मूल्यांकन के साधन ((Evaluation and Means of Evaluatio**टाबा प्रतिमान के सोपान (Steps of Hilda Taba Model of Curriculum Development):**

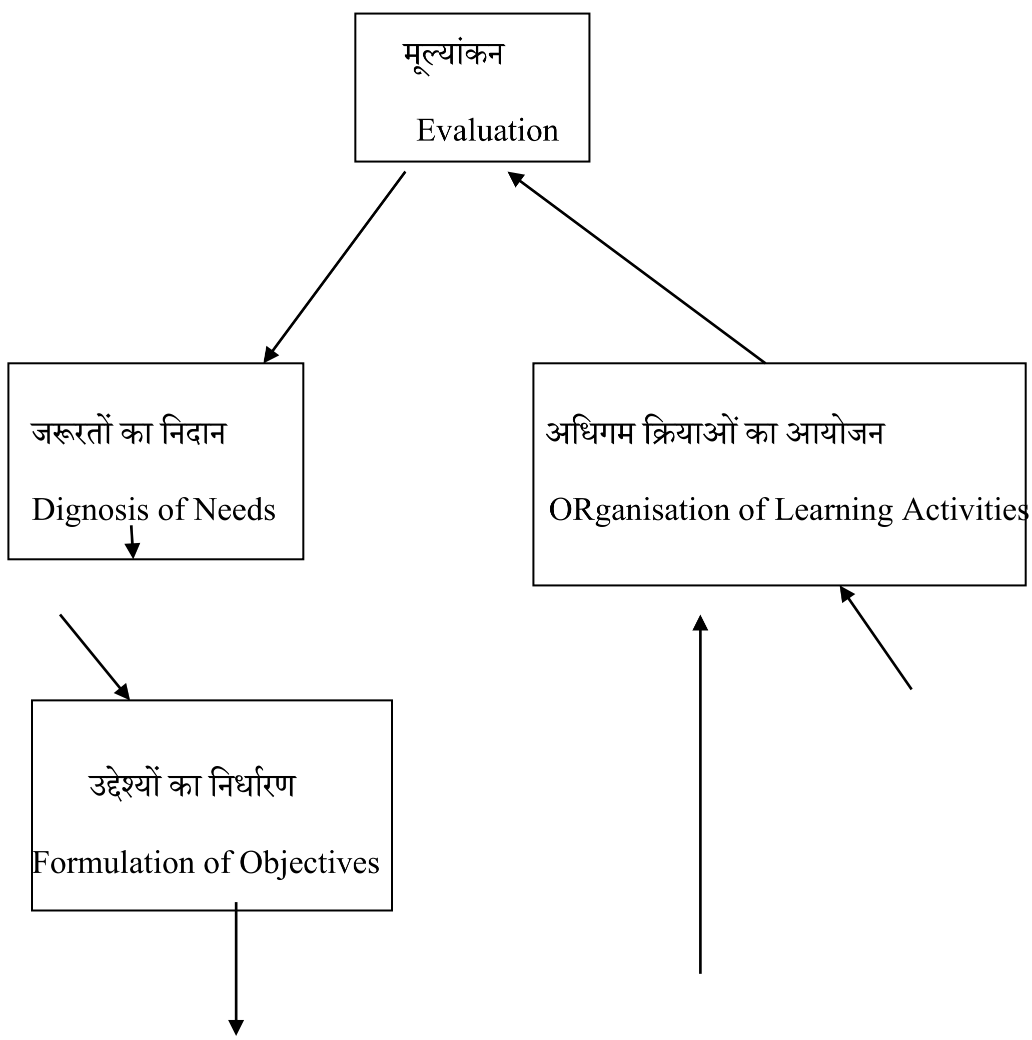

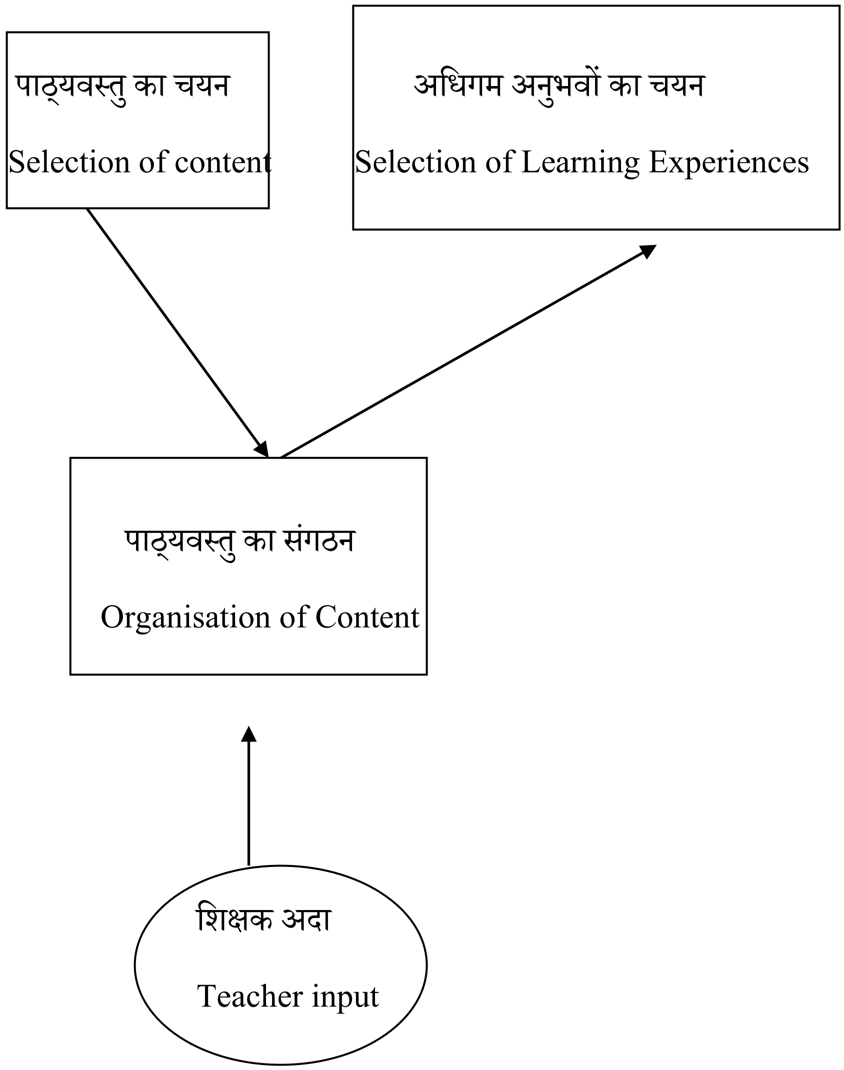

हिल्डा टाबा के द्वारा संस्तुत पाठ्यचर्या निर्माण व विकास के इस आधारिक प्रतिमान के अनुसार पाठ्यचर्या के निर्धारण की प्रक्रिया में शिक्षकों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका रहनी चाहिए। वस्तुत: कक्षागत शिक्षण करने वाले शिक्षक ही विद्यालयों, बालकों व समुदाय की वास्तविक धरातलीय परिस्थितियों, जरूरतों या आकांक्षाओं आदि की सम्यक ढंग से जानकारी उपलब्ध कराकर तदनुरूप पाठ्यचर्या के निर्माण में महती सहायता प्रदान कर सकते हैं। इस तृणमूल उपागम के अनुशरण में जो आधारिक पाठ्यचर्या तैयार होती है उसमें आम जनता की अपेक्षाओं के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था बनाने में सहायता मिलती है तथा छात्रों की रुचियों, जरूरतों व भावी परिस्थितियों के अनुरूप उन्हें सक्षम बनाना सभव हो सकता है।

11.3.3 सेलर तथा अलैक्जैण्डर प्रतिमान (Saylor and Alexander Model) –

जाल्टेन सेलर तथा विलियम मार्विन अलैक्जैन्डर (Willium Marvin Alaxander)के द्वारा सन् 1974 में पाठ्यचर्या को शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों व विशिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अधिगम अवसरों को प्रदान करने वाले समुच्चयों के रूप में स्पष्ट करते हुए पाठ्यचर्या निर्माण व विकास के निम्न चार सोपानों को बताया था–

1. शिक्षा के लक्ष्यों, उद्देश्यों व क्षेत्रों का निर्धारण करना।
2. पाठ्यचर्या का निरूपण करना
3. पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन करना
4. पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना।

सेलर व अलैक्जैण्डर पाठ्यचर्या प्रतिमान के सोपान (Steps of Saylor and Alexander Model of Curriculum Development)

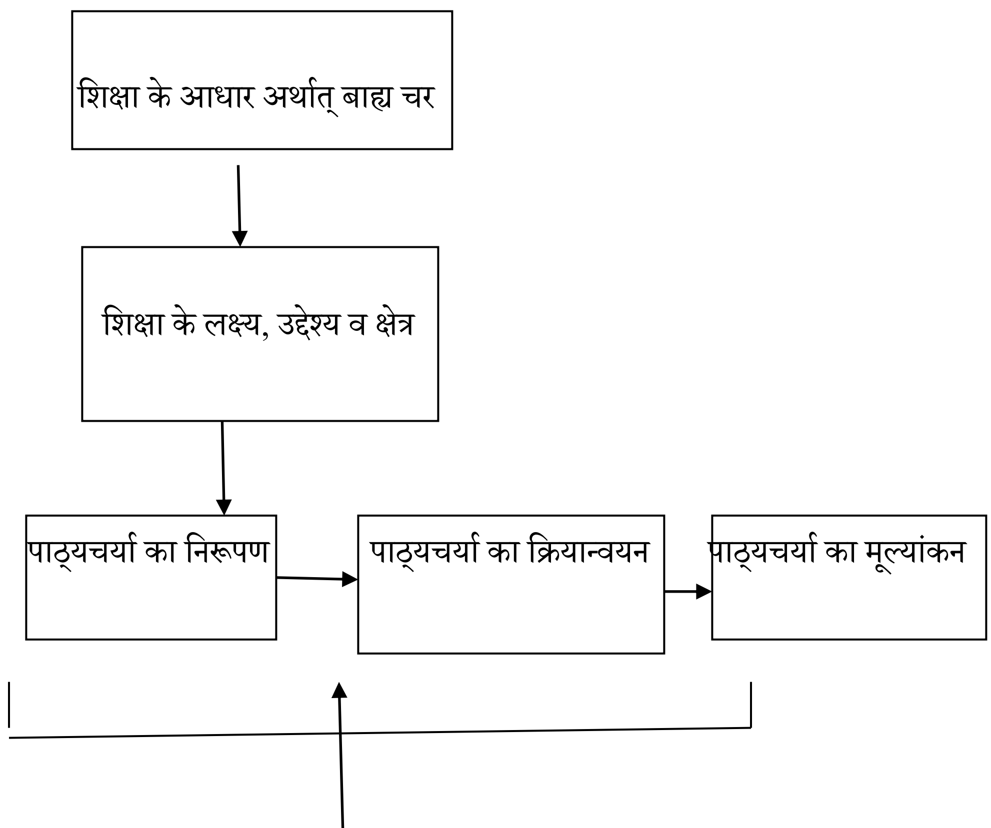

उन्होंने पाठ्यचर्या को किसी विद्यालय के द्वारा चिन्हित जनसंख्या (घ्हूग्ग्a ृत इदज्त्a ूदह) के द्वारा व्यापक शैक्षिक लक्ष्यों तथा सम्बनिधत विशिष्ट उद्देश्यों को अर्जित करने के अधिगम अवसरों के समुच्चयों को निर्धारित करने वाली योजना के रूप में परिभाषित किया था। उनके इस प्रतिमान

को प्रदर्शन प्रतिमान के रूप में भी देखा जा सकता है। वस्तुत: यह प्रतिमान शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यवस्तु व मूल्यांकन सम्बन्धी विभिन्न प्रयोग को प्रदर्शनात्मक ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

11.3.4 ओलिवर प्रतिमान (Oliver Model) - अल्बर्ट ओलिवर (ने पाठ्यचर्या के चार मूल तत्वों के रूप में क्रमश: अध्ययन का कार्यक्रम, (Programme of Studies),अनुभवों का कार्यक्रम, (Programme of Experiences), सेवाओं का कार्यक्रम, (Programme of services), तथा निहित पाठ्यचर्या (Hidden Curruculum) को स्पष्ट किया था। वस्तुत: पाठ्यचर्या निर्माण व विकास का यह प्रतिमान सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था की विश्लेषित करके तदनुसार पाठ््यचर्या का निरूपण करने का प्रयास करता है। इसीलिए इस प्रतिमान को व्यवस्था विश्लेषण प्रतिमान (System Analysis Model) के नाम से भी सम्बोधित किया जा सकता है। अेलिवर प्रतिमान में पाठ्यचर्या निर्माण व विकास की प्रक्रिया में आगे वर्णित बारह सोपानों का मुख्य अनुशरण किया है–

1. संस्था के लक्ष्यों, ध्येय तथा दृष्टि का दार्शनिक निर्धारण करना (Philisophical Formulation of Targets, Mission and Vision of the Institution)
2. उस समुदाय की जरूरतो का विश्लेषण करना जहाँ विद्यालय स्थित है। (Analyzing of the Needs of the Community in which School is located.)
3. पाठ्यचर्या के सामान्य उद्देश्यों का निर्धारण करना। (Deciding General Purposes of Curriculum)
4. पाठ्यचर्या के विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण करना। (Deciding Special Purposes of Curriculum)
5. पाठ्यचर्या के अभिकल्पन व क्रियान्वयन के संगठन का नियोजन करना।
   (Organizing the Design and Implementation of Curriculum)
6. पाठ्यचर्या का विशिष्ट उद्देश्यों के निरूपण के रूप में वर्णन करना। (Describing the Curriculum in the form of Formulation of General Objectives)
7. पाठ्यचर्या का विशिष्ट उद्देश्यों के निरूपण के रूप में वर्णन करना। (Describing the Curriculum in the form of Formulation of Specific Objectives)
8. अधिगम व्यूह-रचनाओं का स्पष्टीकरण करना।
   (Defining the Learning Strategies)
9. ऑकलन प्रविधियों की सम्भावित व्यूह रचनाओं पर प्रारम्भिक कार्य करना। (Preliminary Studies on Possible Strategies or Assessment Techniques)
10. अधिगम व्यूह-रचनाओं का क्रियान्वयन करना। (Implementtion of Learning Strategies)
11. अधिगम परिणामों का मूल्यांकन करना। (Evaluation of Learning Outcomes)
12. पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करना। (Curriculum Evaluation)

ओलिवर पाठ्यचर्या प्रतिमान के सोपान((Steps of Oliver Model of Curriculum Development)

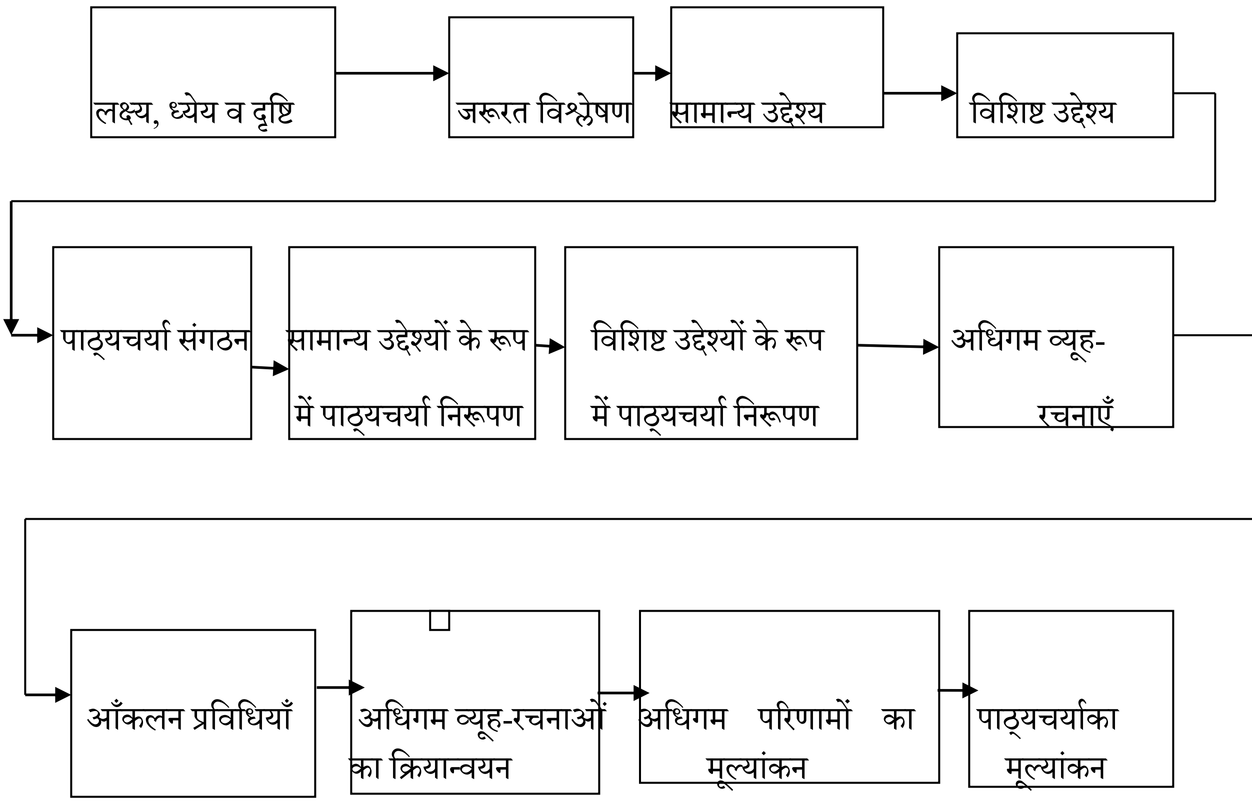

ओलीवर प्रतिमान के उपरोक्त वर्णित सोपानों को अपनाकर पाठ्यचर्या निर्माताओं के द्वारा व्यवस्थित ढंग से पाठ्यचर्या का निर्माण किया जा सकता है। नि:सन्देह पाठ्यचर्या निर्माण का यह प्रतिमान या उपागम सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का सम्यक ढंग से विश्लेषण करके पाठ्यचर्या प्रस्तुत करने का प्रयास करती है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. पाठ्यचर्या प्रतिमान में किन-किन बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए?
2. पाठ्यचर्या के कितने प्रतिमान हैं?

11.4 सारांश

प्रतिमान से तात्पर्य पाठ्यचर्या निर्माण व विकास के उस अभिकल्प से होता है जिसका अनुसरण करके उन्हीं विशिष्ट जरूरतों, संदर्भों या लक्ष्यों को सामने रखकर पाठ्यचर्या का निर्माण व विकास किया जाता है। पाठ्यचर्या निर्माताओं के द्वारा इस प्रकार से अपनाये गये प्रतिमान के अनुरूप पाठ्यचर्या के किसी एक या अधिक घटकों का अभिविन्यास करते हैं, पुन: संयोजित करते हैं या पुन: व्यवस्थित करते हैं। वस्तुत: पाठ्यचर्या क विस्तृत सम्प्रत्यय है जो शिक्षा या अधिगम की समस्त अन्त:क्रियाओं जो शिक्षक व छात्र को बीच अपेक्षित है, को उद्देश्यपूर्ण व पूर्व-क्रियात्मक ढंग से संगठित, क्रमबद्ध तथा प्रबन्धित करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है एवं इसमें छात्रों द्वारा अर्जित की जाने वाली विषयवस्तु का भी समावेश रहता है। पाठ्यचर्या के प्रतिमान शैक्षणिक क्रियाकलापों को दूर करने के लिए दिशा निर्देश प्रदान करते हैं।

11.5 शब्दावली

- टाइलर प्रतिमान(Tyler Model) अथवा प्रशासनिक प्रतिमान (Administrative Model)
- टाबा प्रतिमान (Taba Model) अथवा आधारिक प्रतिमान (Grass-Root Model)
- सेलर व अलैक्जैण्डर प्रतिमान (Sayler and Alexander Model) अर्थात् प्रदर्शन प्रतिमान((Demonstration Model)
- ओलीवर प्रतिमान (Oliver Model) अर्थात् व्यवस्था विश्लेषण प्रतिमान (System Analysis Model)

11.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. पाठ्यचर्या प्रतिमान में निम्न बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए:

(i) पाठ्यवस्तु चिहनीकरण (Content Indentification)

(ii) आकलन प्रविधियाँ (Assessment Techniques)

(iii) शिक्षण व्यूह रचनाएं (Techning- Strategies)

(iv) अधिगम क्रियाएं (Learning Activities)

(v) समूहन व् गति (Grouping and Pacing)

(vi) प्रारंभ व् समापन बिंदु (Introduction and Closure)

(vii) संसाधनों की उपलब्धता (Availability of Resources)

(viii) विभेदनकारी घटक (Differentiation Factors)

(ix) परिणामों का मूल्यांकन (Evaluation of Results)

(x) विस्तार क्रियाएं (Extension Activities)

2. पाठ्यचर्या के मुख्य चार प्रतिमान हैं :

टाइलर प्रतिमान(Tyler Model) अथवा प्रशासनिक प्रतिमान (Administrative Model)

टाबा प्रतिमान (Taba Model) अथवा आधारिक प्रतिमान (Grass-Root Model)

सेलर व अलैक्जैण्डर प्रतिमान (Sayler and Alexander Model) अर्थात् प्रदर्शन प्रतिमान((Demonstration Model)

ओलीवर प्रतिमान (Oliver Model) अर्थात् व्यवस्था विश्लेषण प्रतिमान (System Analysis Model)

11.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. यादव,सीताराम(2014), पाठ्यचर्या विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन
2. जोशी,दिनेशचंद्र,मेहता,चतरसिंह,(2007), शिक्षक प्रशिक्षण के सिद्धांत, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
3. शर्मा डॉ. आर.ए., पाठ्यचर्या,शिक्षणकला एवं मूल्यांकन(2012),आर.लाल.बुक डिपो मेरठ
4. पुरोहित,जगदीश, नारायण(2007), भावी शिक्षकों के लिए आधारभूत कार्यक्रम,राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
5. प्रो. गुप्ता एस. पी, गुप्ता अलका,(2014),शिक्षण कला,शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

11.8 निबंधात्मक प्रश्न

पाठ्यचर्या के विभिन्न प्रतिमानों की विस्तार से व्याख्या कीजिए।

12 पाठ्यचर्या निर्माण के आधार (Basis of Curriculum Construction)

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 पाठ्यचर्या निर्माण के आधार

12.3.1 दार्शनिक आधार

12.3.2 मनोवैज्ञानिक आधार

12.3.3 सामाजिक आधार

12.3.4 वैज्ञानिक आधार

12.4 सारांश

12.5 शब्दावली

12.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

12.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

12.8 निबंधात्मक प्रश्न

12.1 प्रस्तावना

प्रत्येक कोर्स की पूर्व-आवश्यकताओं की पहचान, पाठ्यचर्या डिजाइन की एक अनिवार्य विशेषता है जिसे हर कॉलेज सूची एवं विद्यालयी शिक्षा के हर स्तर पर देखा जा सकता है। इन आवश्यकताओं को विशेष पाठ्यक्रमों द्वारा पूर्ण किया जा सकता है और कुछ मामलों में परीक्षा द्वारा या कार्य अनुभव द्वारा भी इसे पूर्ण किया जा सकता है। सामान्यतः किसी भी विषय में अधिक उन्नत पाठ्यक्रमों के लिए कुछ बुनियादी पाठ्यक्रमों की नींव की आवश्यकता होती है, लेकिन कुछ कोर्सेज में अन्य विभागों में अध्ययन की आवश्यकता होती है, जैसे कि भौतिकी में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए गणित की कुछ कक्षाएं आवश्यक हैं या साहित्य, संगीत अथवा वैज्ञानिक शोध के छात्रों के लिए भाषा प्रवीणता की आवश्यकता. एक अधिक विस्तृत पाठ्यचर्या को बनाते समय किसी

पाठ्यचर्या के भीतर रखे गए प्रत्येक विषय की पूर्व-आवश्यकताओं का अवश्य ध्यान रखा जाना चाहिए. एक बार विषयों के बीच आपसी निर्भरता ज्ञात हो जाने पर, कोर्स की व्यवस्था और समयावधि की समस्याएं उत्पन्न होने लगती हैं।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप :

1. पाठ्यचर्या निर्माण के विभिन्न आधारों – दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और वैज्ञानिक आधारों के बारे में जान सकोगे ।

12.3 पाठ्यचर्या निर्माण के आधार

शिक्षा के चार प्रमुख आधार क्रमशः दार्शनिक आधार, मनोवैज्ञानिक आधार, सामाजिक आधार, तथा वैज्ञानिक आधार माने जाते है। क्योंकि पाठ्यचर्याका निर्माण शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है इसलिए पाठ्यचर्याका निर्माण, संयोजन तथा संगठन करते समय शिक्षा के उक्त सभी आधारों तथा उनसे सम्बंधित सिद्धान्तों को दृष्टि में रखना अत्यंत आवश्यक है। आगे शिक्षा के इन चारों आधारों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यचर्यानिर्धारण के सिद्धान्तों पर संक्षेप में विचार किया गया है।

12.3.1 दार्शनिक आधार

शिक्षा का दार्शनिक आधार इस बात पर बल देता है कि दर्शन साध्य है तथा शिक्षा उसे प्राप्त करने का साधन है। दूसरे शब्दों में दर्शन जीवन के लक्ष्यों को निर्धारित करता है तथा इन जीवन लक्ष्यों को शिक्षा अपने उद्देश्यों द्वारा पाठ्यचर्याके माध्यम से प्राप्त करती है चूंकि जीवन के लक्ष्यों तथा शिक्षा के उद्देश्यों में देश, काल, समाज, तथा विचारधारा के अनुसार निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। इसलिए शिक्षा का पाठ्यचर्याभी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रह सकता है। दूसरे शब्दों में में कह सकते हैं कि पाठ्यचर्याभी सदैव देश, काल समाज तथा विचारधारा के अनुसार बदलता रहता है। अत: कहा जा सकता है कि दर्शन का पाठ्यचर्यासे गहरा सम्बन्ध होता है एवं जिस देश में जिस प्रकार की सामाजिक तथा राजनैतिक विचारधारा प्रचलित होती है, वहाँ की शिक्षा का पाठ्यचर्याभी उसी के अनुसार निर्धारित हो जाता है। ऐसे पाठ्यचर्यामें उन्हीं विषयों को स्थान दे दिया जाता है जिनके अध्ययन द्वारा उस देश अथवा समाज की तत्कालीन समस्यायें, आवश्यकतायें तथा आकांक्षायें पूरी हो सकती है। निश्चय ही भारतीय शिक्षा का पाठ्यचर्याआज वह पाठ्यचर्यानहीं है जो प्राचीन भारत अथवा मध्यकालीन भारत अथवा ब्रिटिश भारत में प्रचलित था। इस परिवर्तन का एकमात्र कारण यह ही है कि आज की विचारधारा, जीवन के लक्ष्य तथा शिक्षा के उद्देश्य उन युगों से भिन्न है एवं तत्कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति की दृष्टि से पाठ्यचर्यामें भिन्नता अपरिहार्य थी।

अत: इससे निष्कर्ष निकलता हैं कि पाठ्यचर्याकी रूपरेखा प्रचलित सामाजिक व राजनैतिक दर्शन के अनुसार तैयार की जाती है एवं इस दर्शन में परिवर्तन होने पर पाठ्यचर्याभी बदल जाता है।

प्रकृतिवाद के अनुसार पाठ्यचर्याकी रूपरेखा बालकों की व्याqक्तगत विभिन्नताओं को दृष्टि में रखते हुए एवं बालकों की नैर्सिगक रुचियों, योग्यताओं, क्षमताओं तथा स्वाभाविक क्रियाओं के अनुसार तैयार की जानी चाहिए। इसके विपरीत आदर्शवादी पाठ्यचर्याका लक्ष्य सभ्यता तथा संस्कृति के मूलभूत विशेषताओं तथा इतिहास को प्रतिबिाqम्बत करना होता है क्योंकि अनुभवों को भौतिक वातावरण से भी प्राप्त किया जा सकता है तथा अपने साथियों के सम्पर्वâ से भी इसलिए आदर्शवादी पाठ्यचर्यामें वैज्ञानिक तथा मानवीय दोनों प्रकार के विषयों पर जोर दिया जाता है। प्रयोजनवादी विचारधारा के अनुसार पाठ्यचर्याका निर्माण उपयोगिता, क्रियाशीलता तथा अभिरुचियों के सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए। प्रयोजनवादियों के अनुसार पाठ्यचर्यामें उन्हीं विषयों तथा अनुभवों को साqम्मलित किया जाना चाहिए जो न केवल बालक के वर्तमान जीवन के लिए ही अपितु भविष्य में प्रौढ़ जीवन के लिए भी उपयोगी सिद्ध हों। यथार्थवादी विचारकों के द्वारा पुस्तकीय तथा साहित्य ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक तथा भौतिक विज्ञानों को पाठ्यचर्यामें अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। यथार्थवादियों के अनुसार बालकों को ऐसा ज्ञान दिया जाना चाहिए जो उनके लिए वास्तविक जीवन में व्यावहारिक रूप से उपयोगी हो, जिसका उनके जीवन से प्रत्यक्ष रूप से सम्बंध हो तथा जो उनके भावी जीवनसाथी, बन्धुबांधवों व सन्तानों की यथार्थ आवश्यकताओं, समस्याओं तथा परिाqस्थतियों से उनका सही ढंग से समायोजन कराने में सहायक हो सवेंâ।

12.3.2 मनोवैज्ञानिक आधार

शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार के अनुसार शिक्षा बालक के लिए होती है न कि बालक शिक्षा के लिए होता है। दूसरे शब्दों में शिक्षा का केन्द्र बिन्दु बालक होता है एवं उसकी प्रकृति के अनुसार ही शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए। आधुनिक मनोविज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि बालक के विकास की विभिन्न अवस्थायें होती हैं जिनमें विकासात्मक विशेषतायें भी अलग-अलग होती हैं। यहीं नहीं, प्रत्येक बालक की रुचियाँ, आवश्यकतायें, क्षमतायें तथा योग्यतायें भी एक-दूसरे से पर्याप्त भिन्न होती है। अत: बालक के विकास की विभिन्न अवस्थाओं की विशेषताओं तथा व्याqक्तगत विभिन्नताओं के आधार पर पाठ्यचर्याइस प्रकार का होना चाहिए कि प्रत्येक स्तर का बालक अपनी-अपनी रुचियों, आवश्यकताओं, क्षमताओं तथा योग्यताओं के अनुसार पूर्णरूपेण आगे बढ़ता रह सके एवं संर्वागीण विकास कर सके। इस दृष्टि से पाठ्यचर्याको पर्याप्त लचीला (इर्तेंग्त) तथा विविधतापूर्ण(Dग्न्ाीेग्ᶄग्) होना चाहिए एवं उसमें खेलों, क्रियात्मक कार्यों तथा सुखद अनुभवों को महत्वपूर्ण स्थान मिलना चाहिए।

12.3.3 सामाजिक आधार

शिक्षा के सामाजिक आधार के अनुसार शिक्षा के द्वारा बालक की व्यक्तिगत इच्छाओं, रुचियों तथा प्रवृत्तियों को राष्ट्र तथा समाजहित के लिए विकसित किया जाना चाहिए। अत: पाठ्यचर्यामें उन्हीं क्रिया-कलापों तथा विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए जो सामाजिक दृष्टि से आवश्यक, उपयोगी तथा महत्वपूर्ण हो। दूसरे शब्दों में पाठ्यचर्याकी रूपरेखा समाज की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं तथा परिqस्थतियों को ध्यान में रखकर तैयार की जानी चाहिए जिससे बालकों में सामाजिकता तथा नागरिकता के गुण विकसित हो सवेंâ तथा वे जनहित में व्यक्तिगत हितों का त्याग करने के लिए सदैव तत्पर रहें। इस दृष्टि से पाठ्यचर्यामें भाषा गणित, स्वास्थ्य शिक्षा, शारीरिक-शिक्षण, सामाजिक अध्ययन, विज्ञान, जीविकोपार्जन के साधन, संगीत व ललित कला आदि विषयों को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

12.3.4 वैज्ञानिक आधार

शिक्षा का वैज्ञानिक आधार इस बात पर बल देता है कि पाठ्यचर्यामें वैज्ञानिक विषयों को मुख्य तथा साहिqत्यक व अन्य विषयों को गौण स्थान मिलना चाहिए। शिक्षा में वैज्ञानिक विचारधारा के विकसित करने का श्रेय हरबर्ट स्पेन्सर को दिया जाता है। स्पेन्सर के अनुसार व्याqक्त का विकास किसी विशेष क्षेत्र में न होकर सर्वांगीण प्रकार का होना चाहिए। अत: शिक्षा को व्याqक्त के जीवन का विकास इस प्रकार से करना चाहिए कि वह अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाकर सुखी जीवन व्यतीत कर सके। दूसरे शब्दों में शिक्षा का उद्देश्य शिक्षा के द्वारा पूर्ण जीवन सुखपूर्वक जीने की तैयारी करना होना चाहिए। स्पेन्सर ने मानव की क्रियाओं को उनके महत्व के अनुसार पाँच वर्गों में विभाजित किया और प्रत्येक वर्ग के लिए उपयुक्त विषयों पर प्रकाश डाला था। स्पेन्सर के अनुसार पहले वर्ग के अंतर्गत वे क्रियायें आती हैं जो प्रत्यक्ष रूप से आत्मरक्षा के काम आती है जबकि दूसरे वर्ग के अंतर्गत वे क्रियायें आती है जो अप्रत्यक्ष रूप से आत्मरक्षा के काम आती हैं। तीसरे वर्ग में वे क्रियायें आती है जिनका कार्य सन्तान की रक्षा करके मानव जाति को आगे बढ़ाना है जबकि चौथे वर्ग के अंतर्गत वे क्रियायें आती है जो सामाजिक अथवा राजनीतिक सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं। स्पेन्सर के पाँचवें वर्ग के अंतर्गत वे क्रियायें आती हैं जिनके द्वारा अवकाश काल का सदुपयोग किया जा सकता है। स्पेन्सर ने बताया कि पहले वर्ग की क्रियाओं के लिए शरीर विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, भौतिक विज्ञान तथा रसायन विज्ञान जैसे विषयों को, दूसरे वर्ग की क्रियाओं के लिए गणित, जीव विज्ञान, समाजशास्त्र तथा भौतिक विज्ञान आदि विषयों को, तीसरे वर्ग की क्रियाओं के लिए शरीर विज्ञान, गृहशास्त्र तथा मनोविज्ञान जैसे विषयों को, चौथे वर्ग की क्रियाओं के लिए इतिहास, राजनीति तथा अर्थशास्त्र जैसे विषयों को तथा पाँचवें वर्ग की क्रियाओं के लिए ललित कला, संगीत, कविता आदि विषयों कों पाठ्यचर्यामें स्थान दिया जाना चाहिए। स्पेन्सर ने यह भी कहा था कि पाठ्यचर्याका कोई भी विषय ऐसा नहीं है जिसके लिए विज्ञान की शिक्षा की

आवश्यकता न पड़ती हो। वस्तुत: उसके अनुसार कला तथा साहित्य का सम्यक ढंग अध्ययन भी विज्ञान के अध्ययन के बिना नहीं किया जा सकता है।

स्वमूल्यांकन हेतु प्रश्न

1. पाठ्यचर्या के दार्शनिक आधार क्या है?
2. पाठ्यचर्या का सामाजिक आधार क्या है?

12.4 सारांश

शिक्षा के चार प्रमुख आधार क्रमश: दार्शनिक आधार, मनोवैज्ञानिक आधार, सामाजिक आधार, तथा वैज्ञानिक आधार माने जाते है। क्योंकि पाठ्यचर्याका निर्माण शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है इसलिए पाठ्यचर्याका निर्माण, संयोजन तथा संगठन करते समय शिक्षा के उक्त सभी आधारों तथा उनसे सम्बंधित सिद्धान्तों को दृष्टि में रखना अत्यंत आवश्यक है। इस इकाई में आपने इन चारों आधारों का विस्तृत किया है ।

12.5 शब्दावली

दार्शनिक आधार- दर्शन का पाठ्यचर्यासे गहरा सम्बन्ध होता है एवं जिस देश में जिस प्रकार की सामाजिक तथा राजनैतिक विचारधारा प्रचलित होती है, वहाँ की शिक्षा का पाठ्यचर्याभी उसी के अनुसार निर्धारित हो जाता है।

सामाजिक आधार - पाठ्यचर्यामें उन्हीं क्रिया-कलापों तथा विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए जो सामाजिक दृष्टि से आवश्यक, उपयोगी तथा महत्वपूर्ण हो। दूसरे शब्दों में पाठ्यचर्याकी रूपरेखा समाज की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं तथा परिqस्थतियों को ध्यान में रखकर तैयार की जानी चाहिए जिससे बालकों में सामाजिकता तथा नागरिकता के गुण विकसित हो

मनोवैज्ञानिक आधार - आधुनिक मनोविज्ञान ने सिद्ध कर दिया है कि बालक के विकास की विभिन्न अवस्थायें होती हैं जिनमें विकासात्मक विशेषतायें भी अलग-अलग होती हैं। यहीं नहीं, प्रत्येक बालक की रुचियाँ, आवश्यकतायें, क्षमतायें तथा योग्यतायें भी एक-दूसरे से पर्याप्त भिन्न होती है।

वैज्ञानिक आधार - शिक्षा का वैज्ञानिक आधार इस बात पर बल देता है कि पाठ्यचर्यामें वैज्ञानिक विषयों को मुख्य तथा साहिqत्यक व अन्य विषयों को गौण स्थान मिलना चाहिए। शिक्षा में वैज्ञानिक विचारधारा के विकसित करने का श्रेय हरबर्ट स्पेन्सर को दिया जाता है।

12.6 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1. शिक्षा का दार्शनिक आधार इस बात पर बल देता है कि दर्शन साध्य है तथा शिक्षा उसे प्राप्त करने का साधन है। दूसरे शब्दों में दर्शन जीवन के लक्ष्यों को निर्धारित करता है तथा इन जीवन लक्ष्यों को शिक्षा अपने उद्देश्यों द्वारा पाठ्यचर्याके माध्यम से प्राप्त करती है चूंकि जीवन के लक्ष्यों तथा शिक्षा के उद्देश्यों में देश, काल, समाज, तथा विचारधारा के अनुसार निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। इसलिए शिक्षा का पाठ्यचर्याभी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रह सकता है।
2. शिक्षा के सामाजिक आधार के अनुसार शिक्षा के द्वारा बालक की व्याqक्तगत इच्छाओं, रुचियों तथा प्रवृत्तियों को राष्ट्र तथा समाजहित के लिए विकसित किया जाना चाहिए। अत: पाठ्यचर्यामें उन्हीं क्रिया-कलापों तथा विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए जो सामाजिक दृष्टि से आवश्यक, उपयोगी तथा महत्वपूर्ण हो।

12.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

6. यादव,सीताराम(2014), पाठ्यचर्या विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन
7. जोशी,दिनेशचंद्र,मेहता,चतरसिंह,(2007), शिक्षक प्रशिक्षण के सिद्धांत, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
8. शर्मा डॉ. आर.ए., पाठ्यचर्या,शिक्षणकला एवं मूल्यांकन(2012),आर.लाल.बुक डिपो मेरठ
9. पुरोहित,जगदीश, नारायण(2007), भावी शिक्षकों के लिए आधारभूत कार्यक्रम,राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी जयपुर
10. प्रो. गुप्ता एस. पी, गुप्ता अलका,(2014),शिक्षण कला,शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

12.8 निबंधात्मक प्रश्न

1. पाठ्यचर्या निर्माण के विभिन्न आधारों का विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिए
2. एक विशेष शिक्षक के रूप में आप किसी भी अक्षमता के लिए किस प्रकार पाठ्यचर्या निर्माण के आधारों का प्रयोग करेंगे?